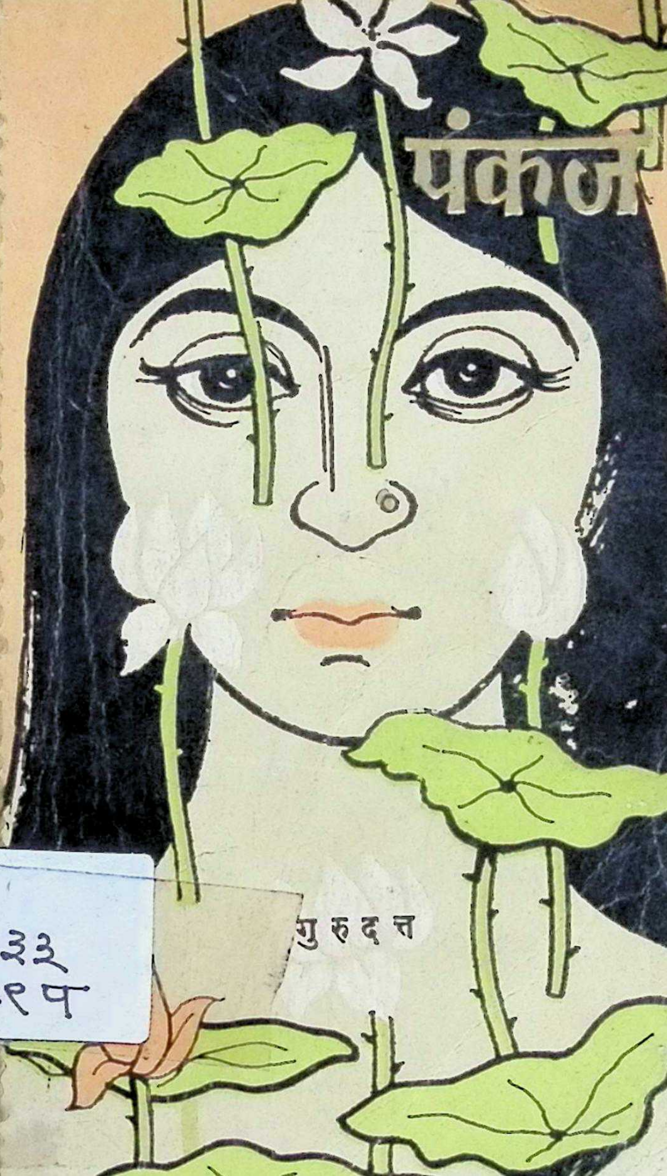

९.४३३
९६९५

जन्म और वातावरण प्राणी के जीवन पर अपनी छाप तो
डालते हैं, परन्तु कर्म—पूर्व-जन्म के और
वर्त्तमान जन्म के—प्राणी के निर्माण
में प्रमुख हाथ रखते हैं।

* * *

श्री गुरुदत्त हिन्दी के शीर्षस्थ उपन्यासकार हैं। पंकज उपन्यास उन की अनूठी रचना है, जो साहित्य की स्थायी निधि है।

प्रचारक पॉकेट बुक्स का प्रयास उत्कृष्ट मौलिक एवं अनूदित साहित्य को कम से कम मूल्य में प्रस्तुत कर हिन्दी साहित्य की श्री-वृद्धि करना है।

प्रचारक-पॉकिट-बुक्स
संख्या—११

पंकज

गुरुदत्त

हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय

11—PANKAJ—GURUDATTA : NOVEL

प्रथम संस्करण

१९६०

1/-

डा. डिल्ली रमण रेड्डी
कल्याणी रेड्डी स्मारक
पुस्तकालय

प्रकाशक : हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय
वाराणसी–१

मुद्रक : विद्यामन्दिर प्रेस प्राइवेट लि०
मानमन्दिर, वाराणसी–१

आवरण : मनोरंजन कांजिलाल

बनते हुए नगरों में, जहाँ महल और अटारियाँ निर्मित होती ह, वहाँ दो-चार गन्दी बस्तियाँ भी बन जाती हैं। नगर-निर्माण कार्य में जहाँ लाखों रुपये लगानेवाले ठेकेदारों और इमारती सामान बेचनेवालों की आवश्यकता रहती है, वहाँ मजदूर, जो खुदाई करता है, ईंटें ढोता है, सड़कें कूटता है और अन्य इसी प्रकार के कार्य करता है, की भी आवश्यकता रहती है।

यह एक प्रचलित उक्ति बन गई है कि नगर-निर्माण कार्य में इन कम आय करनेवाले मजदूरों के लिये बनी गन्दी बस्ती के लि` उत्तरदायी पूँजीपति, ठेकेदार अथवा व्यापारी हैं। यह बात ठीक भी प्रतीत होती है। महल बनानेवालों के मस्तिष्क में कभी यह विचार तक नहीं आता कि दिन भर मेहनत-मजदूरी करनेवाले प्राणी को भी सर्दी-पाले से बचने, आँधी वर्षा में सिर छिपाने और फिर रात के समय कहीं एकान्तवास की आवश्यकता रहती है।

वह बेचारे मजदूर, स्त्री और काम करने योग्य पुत्र-पुत्रियों के साथ, दिन भर के परिश्रम के पश्चात्, जब नगर के बाहर स्वामिहीन भूमि पर बनी कुटिया में थकावट से लड़खड़ाते पगों से और धीमी-धीमी गति के साथ जा रहे होते हैं तो जीवन की दूभर स्थिति पर विचार करने के लिये विवश होना ही पड़ता है।

जब नई दिल्ली का निर्माण हो रहा था, तब यमुना के किनारे एक मजदूरों की बस्ती का निर्माण भी साथ-साथ होता जाता था। पहले नई दिल्ली पुराने नगर के उत्तर की ओर यमुना के किनारे, जहाँ आज तिमारपुर है, बनाने का विचार हुआ था। इसके साथ ही नगर के पूर्व की ओर यमुना तट पर एक गन्दी बस्ती का भी निर्माण हो गया।

नई दिल्ली के बनने की घोषणा भारत-सम्राट ने की थी। वाइसराय ने इसके प्रथम भवन का शिलान्यास किया था और इसके निर्माण के लिये देश-विदेश से इन्जीनियर तथा ठेकेदार

आये थे। परन्तु यमुना तट की इस गन्दी बस्ती की न तो किसी ने घोषणा की, न ही इसका शिलान्यास हुआ और न ही इसके बनाने के लिये किसी को कर देने अथवा धन लगाने की आवश्यकता हुई। यह स्वयमेव बनती चली गई।

भगतू, जिला रोहतक का एक गरीब भूमिहीन किसान, जब दिल्ली में काम की धूम सुन अपनी पत्नी और बच्चों के साथ आया और वाइसराय के लिये बन रहे भवन में ईंटा ढोने का काम पा गया, तो प्रसन्नता से फूलता आ कार्य करने लगा।

भगतू की पत्नी मनकी को भी कार्य मिल गया। भगतू को एक रुपया और मनकी को बारह आने प्रतिदिन वेतन की बात हो गई। भगतू ने, जब से होश सँभाला था, दो-चार पैसे से अधिक, कभी हाथ में ले कर नहीं देखे थे। यह उसके जीवन का पहला दिन था, जब वह दिन ढलने पर पौने दो रुपया हाथ में पकड़ने और उनको स्वेच्छा से व्यय करने की आशा मन में बाँध बैठा था।

भगतू के पुत्र और पुत्री को कार्य नहीं मिला, क्योंकि वे अभी छोटे ही थे। लड़की ग्यारह वर्ष की थी और लड़का दस वर्ष का। भगतू ने ठेकेदार को कहा भी था कि बच्चे भी कुछ काम तो कर ही देंगे, जो मन में आये दे दीजिये; परन्तु ठेकेदार ने कह दिया, "नहीं, ये अभी छोटे हैं, नको काम नहीं दिया जा सकता। कानून ऐसा ही है।"

परिणामस्वरूप मोहिनी और सन्तू एक पेड़ के नीचे बैठ कंकड़ों से खेलते रहे और भगतू और मनकी काम करते रहे।

दोपहर के समय एक घण्टे की छुट्टी हुई। मनकी गाँव से भुना बाजरा और मकई लाई थी। अपने बच्चों के पास आ वे उनको चबाने लगे। थोड़ा नमक और लाल मिर्च भी साथ थी। इससे मुख का स्वाद बना लिया जाता था।

बच्चे भूखे थे, माता-पिता ने मेहनत से चार घण्टे कार्य किया था। सबने पेट भर खाया और सो गये। समय पर घण्टा बजा और सब मजदूर काम पर जा पहुँचे। मोहिनी और सन्तू वहीं

पेड़ के नीचे बैठे रहे। मोहिनी सो गई तो सन्तू वहीं अपने आस-पास नजर दौड़ाने लगा।

उस पेड़ से कुछ अन्तर पर वह विशाल भवन वन रहा था, जिसमें भारत-सम्राट का प्रतिनिधि, जिसकी लेखनी की गति से वड़े-बड़े राजा-रईसों के वारे-न्यारे होते रहते थे, आकर रहने वाला था।

बालक के मन में विचार उठ रहा था, "यह किसके लिये बन रहा है? कौन बना रहा हैं? उनके लिये क्यों नहीं बन रहा? इस घर में रहने वाले के माता-पिता क्या करते होंगे? हमारे माता-पिता भी वैसा ही क्यों नहीं करते?"

एक मुंशी हाथ में छड़ी लिये, बगल में हाजिरी लेने का रजिस्टर दबाये, आँख पर टेढ़ा चश्मा चढ़ाये, मजदूरों में घूम-घूम कर, उनको काम करने के लिये कह रहा था। तीन बजे के लगभग मोटर में सवार, सूट तथा हैट पहने एक व्यक्ति आया और मोटर में बैठे-बैठे ही काम होता देख, मुंशी से बातें कर चला गया।

सन्तू और मोहिनी ने मोटर पहिली बार ही देखी थी। इसे विना घोड़े के ही चलती देख खड़े-खड़े विस्मय करते रहे। मोटर गई तो मुंशी फिर घूम-घूम कर मजदूरों को डाँटने-डपटने में लग गया। पाँच बजे से पूर्व एक सफेदपोश बाबू आया और हाथ में फीता ले, वने हुए काम की कहीं-कहीं से पैमाइश करने लगा।

काम बन्द करते-करते साढ़े पाँच बजे गये। मुंशी ने, बाबू, जो ओवरसिवर था, को वृत्तान्त बताया। इसी समय भगतू आया और मुंशी की ओर देख कर कहने लगा, "हजूर! मजदूरी मिल जाय।"

"क्यों, कल नहीं आओगे, क्या?"

"आऊँगा, हजूर!"

"तो मजदूरी शनिवार को मिलेगी।"

"परन्तु तब तक पेट कैसे भरूँगा?"

"यहाँ का कायदा तो यही है कि मजदूरी शनिवार को बटती है।"

"आज तो अभी मंगलवार ही है हज़ूर ! हम तो तब तक भूखों मर जायेंगे।"

"तो मैं क्या करूँ ?"

इस पर ओवरसियर ने कह दिया--"मुंशी जी ! कुछ खाने भर के लिये दे दो न।"

"ठेकेदार नाराज होंगे।"

"क्यों नाराज होंगे ? इन्होंने मेहनत की है, अपनी मजदूरी माँग रहे हैं, उसमें से ही तो दोगे ?"

"पर मेरे पास तो इस समय नकद नहीं है।"

"अच्छा, कितनी मजदूरी बनी है इनकी ?"

मुंशी ने हाजिरी का रजिस्टर निकाल कर भगतू और उसकी पत्नी की, उपस्थिति देख, कह दिया, "दोनों के पौने दो रुपये।"

"यह लो एक रुपया उनको दे दो, कल वापस कर देना।"

ओवरसियर ने जेब से एक रुपया निकाला। मुंशी के हाथ में दे दिया और मुंशी ने अपनी डायरी में कुछ लिखा तथा रुपया भगतू के हाथ में दे दिया।

भगतू का अगला प्रश्न था—"बाबू ! रसद पानी कहाँ मिलता है यहाँ ?"

मुंशी ने हाथ उठा उँगली के संकेत बताते हुये कहा, "वह देखो दूर, उस बरगद के पेड़ के नीचे एक खोखा खड़ा है, वहाँ पर मिल जायेगा।"

भगतू ने देखा, समझा और सलाम कर उस पेड़ के नीचे जा पहुँचा, जहाँ पर वे अपने बच्चों को छोड़ कर आये थे। मोहिनी वहीं पर थी, किन्तु सन्तू लापता था।

सन्तू दिन भर का बैठा-बैठा थक गया था। जब मजदूर काम बन्द कर रहे थे, तब सन्तू ने अपनी बहिन से यह कह कि "मैं जरा देखूँ, यह क्या बन रहा है ?" वहाँ से तीर की भाँति भागा और बन रहे मकान पर बँधे पाड़ों के बीच जा पहुँचा। जब उसको किसी ने मना नहीं किया, तो वह घूम-घूम कर देखने लगा। दीवारें बन चुकी थीं। छतें पड़ रही थीं और पाड़ों का जाल बिछ रहा था। सन्तू एक कमरे से दूसरे और फिर तीसरे में

घूमता हुआ चला जा रहा था । मोहिनी पहले तो उसे देखती रही, किन्तु कुछ समय पश्चात् वह उसकी दृष्टि से ओझल हो गया ।

भगतू ने अपनी लड़की से पूछा, "सन्तू कहाँ गया है ?"

"उधर गया था, अब तो दिखाई नहीं देता ।" उसने संकेत किया ।

भगतू को कुछ चिन्ता लगी, परन्तु मनकी ने कह दिया, "आ जायेगा, पहले यह बताओ रात कहाँ कटेगी ?"

"यहीं पेड़ के नीचे । अभी मैं वहाँ से रसद लाता हूँ, तब तक तुम कुछ सूखी लकड़ी बटोर लो । दो ईंटें रख चूल्हा बनाओ । मैं देखता हूँ क्या मिलता है !" फिर उसने मोहिनी से कहा "मोहिनी ! तुम यहाँ पर बैठी रहना । हम खाने का प्रबन्ध करते हैं ।"

× × ×

सन्तू लौटा तो उसके मस्तिष्क में उठ रहे प्रश्नों की संख्या बहुत बढ़ गई थी । वह आया तो माँ लकड़ी बटोरने के लिये और पिता रसद लेने के लिये गया हुआ था । मोहिनी अभी भी अपने माता-पिता के कपड़ों की गठरी के पास बैठी थी ।

कुछ-कुछ अँधेरा हो चला था । काम करनेवाले जा रहे थे । केवल चौकीदार ही रह गये थे और वे भी अपने खाने-पीने की चिन्ता में थे । किसी ने इन नवागन्तुक निवासियों की ओर ध्यान ही नहीं दिया था ।

जब भगतू एक हँड़िया, सेर भर बाजरा और पाव भर मूँग की दाल, नमक, मिर्च लेकर आया तो सन्तू उस समय मोहिनी को उस बन रहे मकान का वृत्तान्त सुना रहा था ।

भगतू ने उसे आया देख पूछा, "कहाँ गया था सन्तू ?"

"देखने गया था, बाबा !"

"क्या देखने गया था ?"

"यह जो सामने मकान बन रहा है ।"

"अभी तो बना ही नहीं, खाली दीवारों में क्या देख रहे थे ?"

"बहुत बड़ा है बाबा ! मैं तो बाहर निकलने का रास्ता ही भूल

गया था। जब निकला तो मकान की दूसरी ओर जा पहुँचा। बहुत लम्बा चक्कर काट कर यहाँ आना पड़ा।"

मनकी ने चूल्हा बनाया तो मोहिनी उठकर बाबा से दिया-सलाई ले सूखे पत्ते और पेड़ की पतली-पतली डालियों से चूल्हा जलाने लगी। मनकी ने हँड़िया ली और समीप ही मकान बनाने के लिये लगे नल के पास ले जाकर उसे धोया और उसमें पानी ले, चूल्हे पर रख दी। भगतू बाजरा और दाल बीन रहा था। जब तक वह बीन कर खाली हुआ, हँड़िया का पानी गरम हो गया था। बाजरा और दाल, नमक और मिर्च हँड़िया में डाल दी और बाजरे की खिचड़ी बनने लगी।

इसके पश्चात् करने के लिये कुछ काम नहीं रहा। मोहिनी चूल्हे के पास बैठी लकड़ियाँ सँभालने लगी। शेष तीनों पेड़ के नीचे बैठे बातें करने लगे।

भगतू बोला, "यह सब सामान चार आने का आया है, अभी बारह आने बचे हैं।"

मोहिनी आधा बाजरा और दाल पकाने के लिये चढ़ाये हुई थी। आधे की एक पोटली बाँध पेड़ की एक डाल से लटका दी। भगतू ने पूछा, "इतने से पेट भर जायेगा क्या?"

"गाँव में तो भर जाया करता था। आज भूख अधिक लग रही है। आज मेहनत भी तो खूब की है।"

"वह बाबू भला आदमी निकला। नहीं तो मुंशी कुछ भी देने वाला नहीं था।"

वह कौन था?"

"ओवरसियर बाबू कहते हैं।"

"वह क्या होता है?"

इसका उत्तर भगतू नहीं जानता था।

सन्तू मन में दूसरा ही विचार कर रहा था। वह सोचता था, "हमारा घर कहाँ है, पिता ने बनाया क्यों नहीं, यहाँ पर कार्य करने वाले अन्य मजदूर कहाँ चले गये हैं, यह चौकीदार यहाँ पर क्यों ठहरे हुए हैं, इत्यादि इत्यादि।"

माता-पिता खाने की चिन्ता कर रहे थे कि सन्तू ने कहा, "बाबा !"

"हाँ ।"

"हम अपना घर कब बनायेंगे ?"

"मैं क्या जानूँ रे ।"

तो कौन जानता है ?"

"भगवान ।"

"पर वह तो गाँव के मन्दिर में रह गया है ?"

"इस पर भी जानता वह ही है ।"

"तुमने उससे पूछा नहीं ?"

"पूछा था, वह कहता था मेहनत करो, फल मिलेगा ।"

"परन्तु बाबा ! वह जो मोटर में बैठ कर आया था, क्या मेहनत कर रहा था ? ईंट, चूना, सीमेंट और रेत वगैरह तो तुम लोग ढो रहे थे । कुछ लोग ीवार बना रहे थे मुंशी देख-भाल कर रहा था । उस मोटर में बैठे व्यक्ति ने तो कुछ भी मेहनत नहीं की । इस पर भी सब उसको झुक-झुक कर सलाम कर रहे थे ।"

"बेटा ! सुना है वह बहुत पढ़ा लिखा आदमी है । उसको सब बड़ा साहब कहते थे । कहते थे, विलायत से पढ़ कर आया है ।"

"विलायत किधर है ?"

इसका उत्तर भगतू नहीं जानता था । इस कारण वह बितर-बितर अपने पुत्र का मुख देखता रहा ।

दिन पर दिन व्यतीत होने लगे । मार्च का महीना था । दिल्ली में मौसम खुश्क था । वर्षा की सम्भावना नहीं थी । इस कारण दोपहर की धूप कड़ी होती थी और रात को सर्दी हो जाती थी । भगतू दो चादरें लाया था । एक में पति-पत्नी इकट्ठे सो जाते थे और दूसरी में बहिन भाई । पहले तो चौकीदारों ने उनके वहाँ रहने में आपत्ति की, परन्तु मनकी की आँखों में दया की भावना देख, वे शान्त हो गये ।

शनिवार को वेतन वितरण हुआ । मुंशी ने हिसाब गिना और पौने आठ रुपये देकर अँगूठा लगवा लिया । पेशगी दिया हुआ एक रुपया हिसाब में काट लिया गया ।

वेतन ले कर जब भगतू पेड़ के पास आया तो मनकी कहने लगी, "कहीं रहने का ठिकाना करना चाहिये।"

"यहाँ क्या है ?"

एक तो गरमी बढ़ रही है, इससे लू में झुलस जायेंगे दूसरे वर्षा भी तो अब आने लगेगी। तीसरे यह पेड़ से रसद लटकाये कब तक बैठे रहेंगे और...और...और भी तो बात है।"

"और क्या बात है ?"

स पर मनकी मुस्कुराई और मोहिनी की ओर देखती रह गई।

भगतू कुछ समझा और कुछ नहीं समझा। परन्तु उसने भी यह विचार कर लिया था कि इस प्रकार खानाबदोशों की भाँति रह कर काम नहीं चल सकता। इसलिये उसने मनकी से कहा "अच्छा, तुम खाने का प्रबन्ध करो। मैं मकान का पता करके आता हूँ।"

भगतू वहाँ से उठकर सोहनू चौकीदार के पास चला गया। वह उस समय ईंटों को जोड़ चार दीवारी-सी-बना, उसके ऊपर घास-फूस डाल छत वाली कुटिया में रह रहा था। सोहनू पहाड़ी था। बीड़ी पीने का बहुत ही शौकीन था। अपनी कुल्ली के बाहर बैठा वह बीड़ी पी रहा था कि भगतू ने उसके समीप पहुँच कर कहा, "सोहनू ! यहाँ कहीं सिर छुपाने के लिये भी स्थान मिल सकता है ?"

"भैया, तुम्हारी बीबी भी मुझसे इस विषय में पूछ रही थी। मैंने उससे कहा कि ऐसी ही एक कुल्ली बना ले। दो तीन मास तो निकल ही जायेगें।"

"उसके पश्चात् क्या होगा ?"

तब तक यह इमारत बन कर पूर्ण हो जायेगी, हम सबको किसी अन्य स्थान पर जाना पड़ेगा, तुम भी साथ ही चल पड़ना।"

भगतू को विस्मय हुआ कि मनकी ने यह बात उसे नहीं बताई। पश्चात् कुछ विचार कर बोला, "मैं तो कोई पक्की जगह चाहता

हूँ, जहाँ एक बार बैठ जाऊँ तो फिर वहाँ से कोई उठानेवाला न हो ।"

"मरने पर भी कोई उठाने आयेगा, तो नहीं उठना ।"

इस व्यंग से भगतू को कोई प्रसन्नता नहीं हुई। परन्तु एक मजदूर का जीवन तो इन सब बातों से ऊपर होता है। उसने कह दिया,—"भैया ! वह तो सबके साथ है, मरने में अभी देरी है। तब तक तो न जाने कितनी गरमियाँ, बरसातें और सरदियाँ निकलेंगी किन्तु तब तक रात को निश्चिन्तता से सोने की बात के विषय में सोच रहा हूँ ।"

व्यर्थ में रुपया गँवाओगे। कुछ जमा करना चाहिये। न जाने किस समय क्या आवश्यकता आन पड़े ।"

भगतू ने बात बदल कर कहा, "ये मजदूर लोग किधर जाया करते हैं ।"

"उनसे ही पूछ लेते तो ठीक रहता। अब कल तो काम बन्द रहेगा, परसों जब वे लोग आयें तो उनसे पूछ लेना ।"

इस प्रकार कुछ निश्चित उत्तर न पा, भगतू अपने ठिकाने की ओर लौटने लगा ही था कि चौकीदार ने कहा, "वहाँ पेड़ के नीचे इस प्रकार खुले में बीबी को सुलाना ठीक नहीं। उस से कहो, वहाँ इस कुल्ली में आ कर सो जाया करे और तुम और हम बाहर सो जाया करेंगे ।"

"बात तो ठीक कहते हो भैया! परन्तु तुमको कष्ट होगा।" यह कह कर वह जाने लगा तो सोहनू भी उठ कर उस के साथ चल पड़ा। भगतू ठहर गया। उसने पूछ लिया, "किधर जा रहे हो ?"

"तुम्हारी समझ में तो कोई बात आती नहीं। अब तुम्हारी बीबी को समझाने के लिये जा रहा हूँ ।"

भगतू झगड़ा करना नहीं चाहता था। जब वह काम की तलाश में गाँव से दिल्ली की ओर चला था, तो गाँव के लाला ने कहा था, "नगर के लिये चले तो हो, किन्तु बीबी का ध्यान रखना, वहाँ झपटनेवाले बहुत रहते हैं ।"

"उस बेचारी को झपट कर कोई क्या करेगा ?" भगतू ने कहा था।

"उसकी आँखों में जादू है। उस पर तो परवाने झपटेंगे।"

भगतू को अपनी पत्नी की आँखों में स्नेह और सरलता दिखाई देती थी। इसलिये उसने लाला की बात की ओर कोई ध्यान ही नहीं दिया था। आज उसकी वह बात याद आ गई। उसने सतर्क हो कहा—"भैया ! तुम अपनी कुल्ली में ही बैठो। आज तो हम जा नहीं रहे, फिर किसी फुरसत के समय समझा लेना।"

"अरे भैया ! चलो भी।"

मोहनी खिचड़ी पका रही थी। सन्तू पेड़ से ढासना लगाये अपने कल्पना के दुर्ग बना रहा था। उसके मन में रह-रह कर आता था, उनका अपना इतना बड़ा मकान क्यों नहीं हो सकता ?

भगतू अपनी पत्नी के पास आया तो सोहनू चौकीदार भी उसके साथ आ गया। मनकी अपनी ओढ़नेवाली गुदड़ी की मरम्मत कर रही थी। सोहनू ने आते ही कहा, "सन्तू की माँ ! यह तुम्हारा मनसेधु कह रहा है यहाँ बाहर नंगे में तुमको बहुत कष्ट हो रहा है। इस कारण मैं कहने के लिये आया हूँ कि वहाँ उस कुल्ली में चल कर रहो, तुम बच्चों के साथ भीतर रहना, हम मर्द बाहर सो जाया करेंगे।"

इस प्रस्ताव को मनकी, कम से कम कुछ दिनों के लिये तो मान जाती परन्तु इसके पूर्व सोहनू मनकी से एक और प्रस्ताव कर चुका था। जब भगतू रसद खरीदने के लिये गया हुआ था, तो वह मनकी के पास आ कर बोला, "मनकी, आज मेरे पास दो रुपये फालतू हैं।"

"तो मैं क्या करूँ ?" उसने विस्मय से सोहनू का मुख देखते हुए कहा।

"मैं ये रुपये तुमको देना चाहता हूँ।"

"क्यों।"

"रात जब, सब सो जायें तो उस कुल्ली में चली आना। इसलिये।"

"अच्छा आऊँगी, जाओ दूर बैठो, कोई देख लेगा।"

इस भूमिका में मनकी उसके नवीन निमन्त्रण का स्पष्ट अर्थ समझ रही थी। उसने अब फिर बात टालने के लिये कह दिया, "भैया! तुम बहुत अच्छे हो, अब तुम जाओ, हम परस्पर विचार करके ही तुमको अपने निश्चय के विषय में बतायेंगे।"

सोहनू को इतनी सुगमता से सफलता की आशा नहीं थी। अतः वह चला गया। उसे भी खाना पकाना था।

× × ×

खाना खाते हुए मनकी ने कहा, "चौकीदार के सिर पर काम का भूत सवार है। इसीलिये कह रही थी कि कहीं मकान ढूँढ़ना चाहिये।"

"मनकी! मैं समझता हूँ, परन्तु इस समय इतनी जल्दी तो यह सम्भव नहीं है। कल छुट्टी का दिन है। कुछ प्रबन्ध कर लिया जावेगा।"

"देखो, भोजन कर उस बनिये की दुकान पर जा कर पता करना। कदाचित् वह कुछ सहायता कर सके।"

यह बात तो भगतू को सूझी ही नहीं थी। उसने भोजन किया और बच्चों को सोने के लिये कह, दोनों उस बनिये की दुकान पर, जहाँ से उनकी रसद आती थी, जा पहुँचे।

भगतू ने कहा, "लाला! यहाँ रहने के लिये कहीं कोई स्थान मिल सकता है?"

"अब तक कहाँ रहते थे?"

"हमको आये अभी पाँच ही दिन हुए हैं, अभी तक तो उस पेड़ के नीचे ही पड़े हैं।"

"राम राम! वहाँ किस प्रकार सोते होगे? यहाँ तो साँप-बिच्छू बहुत होते हैं। और कभी-कभी तो रात को भेड़िया भी आ जाता है।"

"भेड़िया तो नहीं देखा, हाँ, गीदड़ों को बोलते अवश्य सुना है।"

"बस दो प्राणी हो या कोई और भी है ?"

दो बच्चे भी साथ हैं ।"

"कहाँ हैं वे ?"

"वहीं पेड़ के नीचे सो रहे हैं ।"

"तो जल्दी जा कर उनको ले आओ । तुम नहीं जानते भाई, यह जंगल है, यहाँ रहना अपनी जान को जोखम में डालना है। देखो, आज रात तो तुम लोग यहाँ दुकान के बाहर पड़े रहना, कल दिन के समय तुमको एक झोपड़ी दिलवा दूँगा । यहाँ से कुछ दूर तो पड़ेगी, किन्तु रात को सुख से सो सकोगे ।"

"कब तक दुकान बन्द करोगे ?" भगतू ने पूछा ।

"अभी एक घण्टे भर बैठूँगा । दुकान को तो मैं ताला लगा जाता हूँ, किन्तु बाहर चौकीदार सोता है। तुम इस ओर पड़ रहना । कल रहने का बन्दोबस्त हो जायेगा । महीने का दो रुपया भाड़ा देना होगा ।"

भगतू और मनकी बच्चों को लेने के लिये चले गये । मार्ग में चलते हुए मनकी ने कहा, भला आदमी प्रतीत होता है लाला ।"

"यह भेड़िया, साँप और बिच्छू की बात तो हम लोगों के, कभी दिमाग में भी नहीं आई थी ?"

"पाँच रातें तो आराम से गुजर गईं । अब आगे की भगवान् जाने ।"

"आज वहाँ से चला आना चाहिये, कम से कम सोहनू से तो छुटकारा मिलेगा ।"

सोहनू अपनी कुल्ली में बैठा भोजन कर रहा था कि ये चुप-चाप अपना संक्षिप्त-सा समान-बटोर और बच्चों को चुप रहने का संकेत कर, वहाँ से चल, बनिये की दुकान के पिछवाड़े आ लगे ।

एक पक्के चबूतरे पर लकड़ी के तख्तों का खोखा बना था । एक ओर दरवाजा था, ऊपर टीन की छत थी । भीतर अन्न-अनाज, तमाखू बीड़ी-सिगरेट, तेल इत्यादि घर का सब सामान रखा था । लाला बिक्री कपड़े में बाँध रहा था । भगतू ने लाला के सामने खड़े हो कहा, "लाला जी ! हम आ गये हैं। आपकी इस हमदर्दी के लिये हम जीवन भर आपके कृतज्ञ रहेंगे ।"

"अच्छा किया है, तनिक ध्यान से सोना। कहीं से चोर सेंध न लगा लें।"

इस अचानक भगदड़ का अर्थ सन्तू की समझ में नहीं आया। मोहिनी ने सोहनू और अपनी माँ में हुए वार्तालाप को सुना था और कुछ उसे समझी भी थी। वह यह न समझते हुए भी कि क्यों पुरुष स्त्रियों से मीठी-मीठी बातें करते हैं, जानती और सुनती भी थी। कभी अपने पिता और माँ को एक ही गुदड़ी में सोये फुस-फुस बातें करते हुए भी सुनती थी। इससे, बिना कुछ भी जाने, सोहनू की किसी वैसी ही बात की आशंका कर, यह भाग-दौड़ उसी का परिणाम मान बैठी थी।

रात जब सन्तू और मोहिनी समीप सोये तो सन्तू ने पूछा, "हम यहाँ क्यों आ गये हैं?"

"सोहनू के कारण।"

"क्यों, उसको क्या है?"

मोहिनी इस 'क्यों' का उत्तर नहीं जानती थी। उसने कुछ सोच कर कहा, "उसने माँ को कुछ कह दिया था। माँ ने बाबू से कहा और हम यहाँ चले आये।"

सन्तू ने समझा कि उसने उसकी माँ को कुछ गाली दी होगी। इससे उसको क्रोध चढ़ आया। परन्तु अब तो सोहनू सामने था नहीं, इस कारण उसको शान्त होना पड़ा।

अगले दिन लाला ने अपनी दुकान के चौकीदार के साथ भगतू को भेज दिया। उसने कहा, "लखन! भगतू को यमुना के समीप की झोपड़ियों को दिखा देना, उनमें से यह जिसे पसन्द करे, दे देना और एक महीना का दो रुपया किराया पेशगी ले लेना।"

लखन लाला का एक गरीब रिश्तेदार था। वह लाला के यहाँ इन झोपड़ियों का प्रबन्ध करता था और रात को दुकान की चौकसी करता था। वह भगतू और उसके बाल-बच्चों को दूर यमुना तट पर ले गया। वहाँ तीस के लगभग ईंट और फूस की झोपड़ियाँ बनी हुई थीं। उनका फर्श कच्चा था। झोपड़ियों के आगे एक गड़हा था, जिसमें पानी जमा था। उस पानी पर मच्छर उड़ रहे

थे। जब वे यहाँ पहुँचे तो उन झोपड़ियों में रहने वाला एक पुरुष, कहीं टट्टी कर आया था और आबदस्त ले रहा था।

लखन ने कुटिया का द्वार खोला तो वह मच्छरों से भरी पड़ी पड़ी थी। भूँ भूँ कर उनके चारों ओर मच्छर उड़ने लगे। मनकी ने कुटिया में घुस कर देखा तो छत का फूस हलका पड़ गया था और ऊपर देखने पर कुछ-कुछ आकाश दिखाई देने लगा था। भगतू तो बाहर का वातावरण देखकर ही उसको नापसन्द कर बैठा था। मनकी भीतर गई और बाहर आ कर कुछ विचार करने के लिये खड़ी हो गयी। वह आदमी, जो गड्ढे के जल में आबदस्त ले रहा था, धोती की लाँग टाँगता हुआ, इस कुटिया में रहने के लिये आये हुओं को देखने के लिये वहाँ पर खड़ा हो गया। मनकी ने उसको भी देखा और माथे पर त्योरी चढ़ा कर लखन से पूछने लगी, "कोई दूसरी दिखाओ, जो इस गड्ढे से कुछ दूर हो।"

"उसका किराया तीन रुपया मासिक होगा।"

"दिखाओ तो।" मनकी ने कहा।

लखन उन्हें एक अन्य कुटिया के सम्मुख ले गया। उसके समीप कोई पानी नहीं था। मच्छर भी कम थे, परन्तु छत उससे भी अधिक उखड़ी हुई थी। मनकी ने देखा, वही आदमी जो वहाँ पर आबदस्त ले रहा था, सामने की एक कुटिया के अन्दर चला गया। इसका अभिप्राय वह यही समझी कि वह वहीं सामने की कुटिया में रहता है।

मनकी ने दीर्घ निश्वास लेते हुए कहा, "ठीक है, छत टूटी है, इस कारण दो रुपया ही दूँगी।"

"छत की हम मरम्मत करवा देगें।"

"जब करवा दोगे तो एक रुपया और ले जाना।"

लखन मनकी की आँखों में देख कर बोला, "ठीक है, मैं लाला को कह दूँगा।"

भगतू ने अपनी अंटी में से दो रुपये निकाल कर कहा, "भैया! लाला से कहना, आपको बहुत-बहुत धन्यवाद है।"

लखन गया तो मनकी एक कुशल गृहणी की भाँति कुटिया को

रहने योग्य बनाने के लि` विचार करने लगी। उसने मोहिनी और सन्तू से कहा, "जाओ, गोबर इकट्ठा कर लाओ।

स्वयं वह दो-चार ईंटों की खोज करने लगी। कुछ अन्तर पर नगर की ओर एक मकान बन रहा था। वहाँ से दो ईंटें ला कर, उसने चूल्हा बना लिया। मोहिनी और सन्तू गोबर लाये तो कुटिया के बाहर, जहाँ चूल्हा बनाया था, गोबर की पुताई करने लगी। पीछे उसने झोपड़ी की दीवार और भूमि की पुताई भी कर दी।

पश्चात् वे यमुना जी में नहाने के लिये चले गये। वहाँ तो इमारत के लिये लगे नल से स्नान हो जाता था, यहाँ कोई नल नहीं था। यमुना से नहा कर आये तो मार्ग से एक घड़ा खरीद कर ले आये। मनकी ने भगतू से कहा, "यमुना का पानी मैला है, इधर नगर की ओर जाओ, कहीं कुँआ, अथवा नल लगा मिले तो जल ले आना।"

परन्तु नल आधे-मील के अन्तर पर मिला। वहाँ से वह पीने के लिये घड़े में पानी ले आया।

अगले दिन मोहिनी और सन्तू को कुटिया में छोड़ वे मजदूरी करने के लिये चले गये। सोहनू ने मनकी को ईंटें ढोते देखा तो उसके समीप जा कर पूछने लगा, "कहाँ चले गये हो तुम लोग ?"

मनकी ने बताना ठीक नहीं समझा। उसने कह दिया, "यहाँ से दूर एक मकान मिल गया है।"

सोहनू बोला, "मैं रात भर तुम्हारी प्रतीक्षा करता रहा हूँ।"

"क्यों, जूते खाने का विचार था क्या ?"

यह सुन सोहनू मुस्कुराया और अपने काम में लग गया।

दिन पर दिन व्यतीत होने लगे। इनको प्रति सप्ताह साढ़े दस पये मजदूरी मिल जाया करती थी। उसमें से दो रुपये की रसद, चार आने की लकड़ी, चार आने का नमक मिर्च, आलू-प्याज और चार आने का सरसों का तेल ले आते। इस प्रकार सात रुपये प्रति सप्ताह बचा लेते थे। झोपड़ी को वे प्रति दिन साफ करते रहते थे। छत की मरम्मत भी वे अपने आप ही करने लग

गये थे । रविवार के दिन पेड़ों की डालियाँ काट लाते थे और उनका छप्पर बाँध, छत पर डाल, ऊपर रस्सियों से सूखे पत्ते बाँधने लगे थे । वे चाहते थे कि वर्षा आने से पूर्व उसका टपकना बन्द हो जाय ।

सन्तू को तो देहात में सर्वत्र निर्धनता व्याप्त दिखाई देती थी । गाँव का जमींदार भी मैले ही कपड़े पहिन कर बैठा दिखाई देता था । वहाँ धनी और निर्धन में प्रत्यक्षतः बहुत कम अन्तर दिखाई देता था । यहाँ नगर में तो यह अन्तर इतना अधिक था कि सन्तू की बाल-बुद्धि को भी अखरता प्रतीत होता था ।

उसकी भी आत्मा इस अन्तर को देख फड़फड़ाती थी । वह अपनी सीमाओं को पार करना चाहता था । इसके लिये वह दिन भर घूम-घूम कर उपाय सोचने लगा था । दिन भर वह कुटिया में बैठ नहीं सकता था । मोहिनी तो घर पर ही बैठी रहती थी, परन्तु सन्तू उसको "अभी आया" कह कर बाहर निकल जाता था और घूम-घूम कर अपने मन की चंचलता को शान्त करता रहता था ।

× × ×

मोहिनी को अकेले बैठा देख सामने की कुटियावाला इनकी कुटिया के चक्कर काटा करता था । कई दिन चक्कर काटने के पश्चात् एक दिन उसको मोहिनी से बात करने का अवसर मिल गया । मोहिनी अपनी कुटिया के बाहर खड़ी सुस्ती निकाल रही थी । उसने पूछा, "क्या नाम है तुम्हारा ?"

मोहिनी ने उसके मुख पर देखा तो वह मुस्कुराने लगा । माथे पर त्यौरी चढ़ा कर मोहिनी ने कहा, "हँस क्यों रहे हो ?"

"इसलिये कि तुम मुझे बहुत अच्छी लग रही हो ?"

"तो इससे मुझे क्या ?"

"तुम्हें भी कुछ है । देखो, वह मेरी झोपड़ी है । खाली पड़ी है, मैं रात को अकेला होता हूँ । तुम वहाँ आओ तो तुम को कुछ दूँगा ।"

"क्या दोगे ?"

"वहाँ आओ तो बताऊँगा ।"

"अच्छा माँ आ जाय तो आऊँगी ।"

"नहीं, माँ को नहीं बताना । वह तो मना कर देगी ।"

इस समय बगल की झोपड़ी में से एक औरत निकल आई और उस आदमी की ओर देख कर बोली, "करमू हरामी ! क्या कह रहा है लड़की को ? तेरी लड़की के बराबर है, शरम नहीं आती इस तरह की बातें करते हुए ?"

"रामी माँ ! क्या कह रहा हूँ, यही तो न कि वह यहाँ अकेली बैठी रहती है, वहाँ आ जाये तो दिल बहल जाया करेगा ।"

"तुम्हारा दिल बहलानेवाली कहाँ गई है ?"

"वह भीख माँगने के लिये गई हुई है ।"

"और तुम क्यों नहीं गये ?"

"मुझ हट्टे-कट्टे को देख कोई देता नहीं । सब कह देते हैं, नौकरी कर लो ।"

"तो करते क्यों नहीं ? देखो, तो इसके माँ-बाप दोनों काम पर जाते हैं । दो रुपये कमा कर लाते हैं ।"

"मुझ से काम नहीं होता, रामी माँ ।"

"अच्छा देखो, यहाँ से दूर रहा करो, नहीं तो जूतों से पिटवा दूँगी ।"

रामी माँ का हल्ला सुन पास-पड़ोस की झोपड़ियों से तीन-चार और स्त्रियाँ बाहर निकल कर आ गईं । करमू तो वहाँ से टल गया । रामी की माँ बताने लगी, "यह करमू बड़ा बेईमान है, इस सीधी-साधी बेचारी लड़की को फुसला रहा था ।"

सब मोहिनी को कहने लगीं, "देखो, इसका कहा न मानना । कभी फिर कुछ कहे तो भाग कर हमारे पास आ जाना ।"

मोहिनी समझी कि यह करमू भी कुछ वैसी ही बात कहता था, जैसी सोहनू चौकीदार ने उसकी माँ को कही थी । इससे वह सतर्क हो गई ।

सन्तू अब कई दिन से सुबह खाना खा कर बाहर निकल जाता था और सायंकाल अपने माता-पिता के लौटने से कुछ ही देर

पहले वापस आ जाया करता था। आज वह वापस आया तो मोहिनी न कहा, "सन्तू ! तुम रोज ही कहाँ चले जाया करते हो ?"

"क्यों ?"

"यह सामने की झोपड़ीवाला आज मुझसे कह रहा था कि अकेले में मैं उसके यहाँ चली जाया करूँ।"

"क्यों ?"

"वह मुझको कुछ देगा।"

सन्तू घूमने-फिरने से नगर के कुछ अन्य आवारा लड़कों की संगति में आ गया था। इससे एक दो महीने में ही वह पुरुष-स्त्री के सम्बन्धों के विषय में बहुत कुछ, यद्यपि मौखिक रूप में ही, समझने लगा था। उसने कह दिया, "उसके झोपड़े में मत जाना और न ही उसको यहाँ आने देना।"

"मुझको अकेले डर लगने लगा है।"

"अच्छा, मैं कल यहीं रहूँगा।"

अगले दिन सन्तू घर पर ही रहा। झोपड़े के बाहर एक पेड़ था। सन्तू वहाँ उस पेड़ के नीचे बैठा कंकड़-पत्थरों से खेलता रहा। मोहिनी भीतर बैठी अपने पिता के कुरते की मरम्मत कर रही थी। दोनों मध्याह्न का भोजन कर चुके थे। इस समय सन्तू का एक साथी वहाँ पर आया और उसको पेड़ के नीचे बैठा देख, उसके सम्मुख आ खड़ा हुआ।

सन्तू ने विस्मय में उसकी ओर देखते हुए कहा, "तुम ? यहाँ कैसे आये ?"

"तुम जो नहीं आये ?"

"आज बहिन कहने लगी कि अकेले में उसको डर लगता है, इसलिये मैं खेलने नहीं आया।"

"तो तुम्हारी बहिन भी है ?"

"हाँ, क्यों ?"

"दिखाओ।"

"क्यों दिखाऊँगा ?" इतना कह कर सन्तू उ कर अपने मित्र के सम्मुख खड़ा हो गया।

वह लड़का बोला, "जरा देखूँगा कि कैसी है ?"

"मैं बताता हूँ, कैसी है.....।" इतना कहते-कहते उसने एक घूँसा उसके मुख पर जड़ दिया। वह लड़का उससे दो इंच लम्बा था। आयु में भी दो वर्ष बड़ा था। वह ऐसी आशा नहीं करता था, अतः एक-दो क्षण तो वह भौंचक्का-सा हो उसको देखता रहा। इतने में सन्तू ने उसको दो घूँसे और जमा दिये।

अब वह लड़का सन्तू पर पिल पड़ा। ऊँची-ऊँची गालियों के साथ वह सन्तू के मुक्कों का उत्तर देने लगा। सन्तू उससे गुत्थम-गुत्था हो गया। उसकी गालियों का हल्ला सुन मोहिनी और अन्य झोंपड़ियों की स्त्रियाँ बच्चे आदि बाहर निकल आये। रामी-माँ भी आई और दोनों लड़कों को छुड़ा कर पूछने लगी, "क्यों लड़ रहे हो ?"

सन्तू की नाक से रक्त बह रहा था, परन्तु उसके साथी की आँख सूज कर कुप्पा हो रही थी। सन्तू ने जोर से अपना सिर उसके पेट में दे मारा था और वह पेट पर हाथ रख टेढ़ा हो गया था।

सन्तू ने रामी माँ को बताया, "माँ ! यह बहिन को गाली देता था।"

"क्या गाली देता था ?"

"कहता था, उसको देखूँगा, वह कैसी है।"

रामी-माँ ने पाँव से जूती उतारते हुए कहा, "भाग जा हरामी ! नहीं तो टाँट गन्जी कर दूँगी।"

सन्तू का साथी पेट को दबाये हुए वहाँ से चला गया। रामी माँ ने सन्तू के नाक और सिर पर पानी लगा, उसके रक्त को बन्द किया और मोहिनी से कहा, "तुम माता-पिता के जाने पर मेरे झोपड़े में आ जाया करो।"

"माँ नाराज होंगी।"

"नहीं होंगी, मैं बता दूँगी।"

शाम को जब भगतू और मनकी काम पर से लौट कर आये तो रामी ने उनको सन्तू के झगड़े का वृत्तान्त सुना दिया और साथ

ही अपना प्रस्ताव भी उनके सम्मुख रख दिया। रामी माँ की भी एक लड़की थी। रामी का घर वाला कपड़ा मार्किट में एक लाला की नौकरी करता था। उसे बीस रुपया वेतन तथा एक समय का भोजन मिलता था।

रामी चालीस वर्ष से अधिक आयु की स्त्री थी। उसका घर वाला भी लगभग उसी आयु का था। लड़की आठ वर्ष की थी। हनुमान जी की बहुत मन्नत मानने के पश्चात् यह सन्तान हुई थी। इससे उसका नाम देवी रख दिया था।

इस बड़ी अवस्था में सन्तान पा वे भगवान् राम और उसके भक्त श्री बजरंगबली के गुण गाते नहीं अघाते थे।

भगतू को रामी के घर वाले ने समझाया। लड़की में जवानी के लक्षण दिखाई देने लगे हैं। जमाना बहुत बुरा है। इसको तुम देवी की माँ के पास छोड़ जाया करो। देवी और वे साथ ही खेल लिया करेंगी।

परिणाम यह हुआ कि भगतू और मनकी अपने झोपड़े में ताला लगा कर जाने लगे। सन्तू अब पहले से अधिक स्वतन्त्र हो गया। यों तो उसको घर पर भी अपनी बहिन के अतिरिक्त एक अन्य साथिन देवी मिल गई थी, इस पर भी उसको लड़कियों के साथ खेलने की अपेक्षा बाजार में घूमना अधिक पसन्द था।

सन्तू को एक और बात का पता लग गया। वह अपने आवारा मित्रों के साथ घूमता हुआ आती-जाती लड़कियों और औरतों के विषय में उनके कटाक्ष सुना करता था, उन मित्रों में से एक को अपनी बहिन को देखने की इच्छा जान वह समझ गया था कि वह उसके विषय में क्या देखना चाहता है। उसके मन पर इसकी प्रतिक्रिया हुई। वह समझ गया कि जैसे वह अपनी बहिन के विषय में उनकी टीका-टिप्पणी नहीं सुनना चाहता, वैसे ही अन्य बहनों के भाई भी तो नहीं चाहते होंगे। वह समझ गया था कि वह उन लड़कों की बातें सुन और उनमें भाग ले, कुछ अच्छा काम नहीं कर रहा था।

अगले दिन जब वह अपने भ्रमण पर निकला तो उसको चाँदनी चौक के किनारे, लाल किले के पास, अपने मित्रों की टोली

खड़ी दिखाई दी। उस लड़के ने, जिसकी पिछले दिन सन्तू के साथ लड़ाई हुई थी, पहले पहल सन्तू को देखा। उसने अपने साथियों को उसकी ओर हाथ का संकेत कर बताया। इस पर सबके सब "मारो साले को" कहते हुए सन्तू की ओर लपके। सन्तू उनका हल्ला सुन समझ गया कि उसकी खैर नहीं। अकेला वह इन छः का मुकाबला नहीं कर सकेगा। अतः वह सिर पर पाँव रख कर भागा।

बाजार में आने जानेवालों ने जब एक के पीछे छः लड़कों को भागते देखा, तो सन्तू को पकड़ कर उन मारनेवालों को रोकने लगे। बीस-तीस की भीड़ इकट्ठी हो गई। लोगों ने समझा था कि कोई जेब कतरा किसी की जेब कतर कर भागा है। सन्तू ने कह दिया, "ये अकारण ही मुझको मार रहे हैं।"

इस पर एक लाला ने उसके आगे खड़े हो कर पूछा, "क्यों लड़ रहे हो?"

"इसने मुझको कल पीटा था।"

इस पर सब हँस पड़े। उस लड़के की आँख अभी सूज रही थी। सन्तू से वह हृष्ट-पुष्ट और ऊँचे कद का दिखाई देता था। लाला ने कहा, "तो तुम अकेले मार खा कर, अब सब मिल कर इससे बदला लेने के लिये आये हो?"

"हाँ, हम सब दोस्त हैं।' उनमें से एक बोल पड़ा।

इस पर उस लाला ने कह दिया, "और मैं इसका दोस्त हूँ। तुम सब मिल कर एक को पीटोगे तो मैं इसकी ओर से लड़ूँगा।" इतना कह लाला ने घूर कर उनकी ओर देखा। उसकी समझ में आ गया था कि ये अवारा लड़के हैं।

उस लाला के ऐसा कहने पर, वे छओं पीछे हट गये और एक-एक करके वहाँ से खिसकने लगे। इस पर खड़े हुओं ने ताली बजा दी।

वह लाला जाने लगा तो सन्तू ने कृतज्ञता भरी दृष्टि से उसकी ओर देखा। लाला के मन में कुछ आया। उसने कहा "ऐ लड़के! इधर मेरे साथ आओ, उधर तो तुमको वे फिर पीटेंगे।"

× × ×

लाला की चाँदनी चौक में गोटा-किनारी की दुकान थी। वह रामनारायण गोटेवाले के नाम से विख्यात था।

लाला रामनारायण सन्तू को अपनी दुकान पर ले गया। रामनारायण का बड़ा भाई गद्दी पर बैठा था। वह भाई के साथ एक मैले-कुचैले, फटे कपड़ों में दस वर्ष के लड़के को आता देख प्रश्न भरी दृष्टि से उसको देखने लगा।

रामनारायण ने कह दिया, "दादा ! कुछ नहीं। इस अकेले को छः आवारा लड़के पीट रहे थे। उनसे छुड़ा कर लाया हूँ।"

"तो यह आवारा नहीं है क्या ?"

"इस अकेले ने अपने से दुगने बड़े लड़के को पीटा।"

"इसलिये तुम इसे अवारा नहीं समझते ?" रामनारायण का बड़ा भाई हँस पड़ा।

रामनारायण ने मुस्कुराते हुए भाई को देखा और सन्तू को एक ओर ले जा कर बैठा दिया। उसने उससे पूछा, "ये तुम्हारे ही साथी थे क्या ?"

"नहीं, इनके विषय में मैं इतना ही जानता हूँ कि ये लाल किले के मैदान में खेला करते हैं। मैं भी पहले इनके साथ खेल लेता था।"

"तो तुम उससे लड़े क्यों थे ?"

"यह कल कहीं घूमता हुआ हमारे झोपड़े के बाहर आ गया। मैं वहाँ बैठा था। वह मेरी बहिन से हँसी करने लगा तो मैंने पीट दिया। चोट मुझको भी आई थी परन्तु वह अधिक पीटा गया।"

"कहाँ रहते हो तुम ?"

"रेल के पुल के पार जो बीस-तीस झोपड़ियाँ हैं, वहाँ रहता हूँ।"

"क्या करते हो ?"

"मेरे माता-पिता तिमारपुर में किसी इमारत पर मजदूरी करते हैं, मुझे मुंशी ने कोई काम नहीं दिया। वह कहता था, मेरी उमर अभी छोटी है :"

"वहाँ तो प्राय: भिखारी रहते हैं ?"

"हम भिखारी नहीं हैं।"

"तो तुम चोरी करते हो ?"

"जी नहीं, हम मेहनत-मजदूरी करके कमाते हैं।"

"तो तुम कोई काम क्यों नहीं करते ?"

"कोई काम मिले तो करूँ।"

"अच्छा तुम अपने बाप को लेकर आना। हम तुमको नौकर रख लेंगे। हमारे पास रहना होगा। यदि चोरी नहीं करोगे तो हम तुम्हारी तरक्की कर देंगे।"

"तरक्की! हम अपना मकान बना लेंगे क्या ?"

रामनारायण हँस पड़ा और हँस कर पूछने लगा, "क्या करोगे मकान बना कर ?"

"रहूँगा उसमें। हम दूसरों का मकान बनाते हैं। अपना भी बनाना चाहते हैं।"

"हाँ, रुपया इकट्ठा करोगे तो बना लोगे।"

"कल रविवार है। मैं अपने पिता को ले कर आऊँगा।"

सन्तू दुकान से निकला तो पहचानने के लिए उसके बाहर खड़ा हो देखने लगा। वह पढ़ा लिखा बिलकुल नहीं था। इस कारण कोई ऐसी पहिचान देखना चाहता था, जिसे अगले दिन आ कर वह ढूँढ़ सके। रामनारायण के बड़े भाई राधाकृष्ण ने उसे इस प्रकार खड़े देख कर पूछा, "क्या देख रहा है ?"

"दुकान की पहचान कर रहा हूँ।"

"भाग जाओ !"

इस समय तक सन्तू को दुकान के सामने सड़क पर पानी का नल लगा दिखाई दे गया था। उसको पहचान के लिए देख कर वह वहाँ से चला गया।

सन्तू गया तो राधाकृष्ण ने कहा, "यह क्या बला पकड़ कर लाये हो ? वह दुकान को पहचान रहा था। क्या जाने रात को चोरी करवा दे।"

"पर दादा! चोरी तो इसके बिना भी हो गई थी। चोरी

होती है चौकीदार की बेईमानी से। चौकीदार चुस्त हो तो कोई कैसे चोरी कर सकता है ?"

"परन्तु यह था कौन ?

"एक बहादुर और समझदार लड़का है। बहुत गरीब मालूम होता है। इसको नौकर रखने का विचार कर रहा हूँ।"

"सब चौपट कर दो।"

"तो क्या करूँ ? घर का काम बढ़ रहा है। 'लाज' का कोई मददगार भी तो चाहिये ?"

राधाकृष्ण ने असन्तोष का भाव प्रकट किया और मौन हो गया।

बात यह थी कि इनके पिता का देहान्त हो चुका था, इस पर भी दोनों भाई इकट्ठे ही रहते थे। दरीबे में एक बड़े से मकान में इन दोनों का निवास था। भोजन पृथक् बनता था। खर्चा, कपड़े, आभूषण और स्वभाव भी पृथक्-पृथक् थे। मकान और दुकान साझे में थी। दोनों दुकान से तीन-तीन सौ रुपया निकाल लेते थे और दुकान की सम्पत्ति बढ़ती जाती थी।

राधाकृष्ण की कोई सन्तान नहीं थी और रामनारायण के तीन बच्चे थे। दो लड़के और एक लड़की। इस कारण जहाँ राधाकृष्ण की पत्नी को कुछ काम नहीं था, वहाँ रामनारायण की पत्नी काम के भार से दब रही थी। वह कई बार अपने पति से कह चुकी थी कि कोई छोटी उमर का नौकर ला दो। एक नौकर पिछले साल रखा था, तो तीन-चार दिन के पश्चात् ही रामनारायण की पत्नी का लॉकेट चुरा कर भाग गया था।

राधाकृष्ण की सम्मति थी कि नौकर नहीं रखना चाहिये और रामनारायण का सुझाव था कि लाज को अपनी वस्तुएँ सँभाल कर रखनी चाहियें। लाजवन्ती ने वचन दिया था कि अगली बार वह सतर्क रहेगी।

रात घर जा कर रामनारायण ने सन्तू के विषय में लाज को बताया। उसने कहा, "एक लड़का नौकरी के लिये देखा है। नौ-दस वर्ष का होगा। बहुत ही गरीब है। कल यदि वह आया

श्रौर उसके पिता ने स्वीकार कर लिया तो रख लूँगा। परन्तु यदि वह भी चोरी करके भागा तो इसका दोष तुम पर लगेगा।"

दूसरे दिन सन्तू अपने पिता को ले कर आया तो उस समय राधाकृष्ण ही दुकान पर बैठा। उसने पूछा, "क्या चाहते हो?"

"वे दूसरे लाला नौकर रखने को कहते थे।"

"ज़ामिन लाओ।"

सन्तू तो ज़ामिन का अर्थ ही नहीं समझ सका। भगतू ने कह दिया, "लाला साहब, इस शहर में हमारा कोई परिचित नहीं है।"

"तो नौकरी नहीं मिलेगी।"

भगतू दुकान के बाहर आ गया। सन्तू बाहर आ गया। सन्तू बाहर आने में आनाकानी कर रहा था। भगतू ने कहा, "सन्तू लगता है तुम दुकान भूल गये हो।"

"नहीं बापू! यही दुकान है। यहाँ ही रुकते हैं, दूसरा लाला आ जावे तो बात करेंगे। यह तो कल भी काटने को दौड़ता था।"

सन्तू ने बाहर दुकान की पटरी पर खड़े-खड़े यह कहा था। भगतू ने कुछ विचार कर कहा, "तुम कहो तो ठहर जाते हैं। परन्तु उम्मीद नहीं दिखती।"

सन्तू ने इसका कोई उत्तर नहीं दिया और प्रतीक्षा में वह इधर-उधर देखने लगा। चौथाई घंटे तक दोनों लाला की प्रतीक्षा में पटरी पर खड़े रहे। लड़का कह रह रहा था, "बापू! लाला कहता था हमारा भी अपना मकान होगा। उसके लिये हमें रुपये इकट्ठे करना चाहिये।"

भगतू ने भी मुंशी से यही सुना था। एक दिन वेतन बाँटने के समय उसने मुंशी से पूछा था, "दिल्ली में एक छोटा-सा मकान बनाने में कितना रुपया लग जायेगा?"

"यदि भूमि हो तो दो हजार के लगभग बन जायेगा। मुंशी का कहना था।

"एक हजार में कितने सौ होते हैं?"

"दस सौ का एक हजार होता है।"

भगौती विचार करता था कि उसके पास दो मास में पचास अर्थात् आधा सौ एकत्रित हुए हैं। बीस महीने में एक हजार और फिर इससे दुगुने समय में दो हजार। वह समझता था कि इस जीवन में ही मकान बन सकता है। सन्तू नौकरी करे तो कदाचित् मकान बनाने की तारीख और पहिले भी आ सकती है। इस कारण वह सन्तू को नौकर कराने के लिये खड़ा था।

रामनारायण आया तो बाप-बेटे दोनों को पटरी पर खड़ा देख, उनके समीप आ पूछने लगा, "यह तुम्हारा बाप है?"

"जी। ये कहते हैं कि मैं नौकरी कर सकता हूँ।"

"कितना वेतन लोगे?"

"जो आप प्रसन्न हो दे दें।" भगतू ने कहा।

"मैं तो चार रुपया महीना दूँगा और साथ में रोटी कपड़ा।"

"और रविवार को छुट्टी?" सन्तू ने कहा।

"किसलिये?"

"माँ-बाप से मिलने के लिये।"

"ठीक है, आधे दिन की छुट्टी मिल जाया करेगी।"

⊠ ⊠ ⊠

इसके पश्चात् सन्तू अगले रविवार ही अपने माता-पिता से मिलने के लिये जा सका था। वह दोपहर के एक बजे वहाँ पहुँचा। उसके माता-पिता आज आराम कर रहे थे। मोहिनी, देवी के साथ, रामी माँ की झोपड़ी में थी।

सन्तू अपनी कोठरी में गया तो उसके माता-पिता जाग पड़े। "ओ सन्तू!" माँ ने पुत्र को गले लगाते हुए कहा और उसकी आँखों से टप-टप आसू लुढ़कने लगे।

"सुनाओ सन्तू! किस प्रकार रहे इतने दिनों तक?"

"बहुत मजा रहा बाबा! काम तो करना पड़ता है, परन्तु मेहनत-मजदूरी का काम नहीं। ललाइन का एक बच्चा है। छः मास के लगभग का होगा। बस उसको खिलाना पड़ता है। घर में चौका-बासन तथा सफाई के लिये एक और औरत आती है।"

"सन्तू के पश्चात् उसके माता-पिता की दृष्टि उसके कपड़ों

पर गई। कपड़े-साफ-सुथरे और सन्तू के नाप के ही थे। माँ ने पूछ लिया, "ये कपड़े तो तुमको पूरे आ रहे हैं।"

"हाँ, लाला ने साथ की दुकान के दर्जी को कह कर बनवा दिये हैं।"

"ये तुमने खुद ही धोये हैं?"

"हाँ, दो पोशाक बनवाई हैं। एक धोता हूँ दूसरी पहनता हूँ।"

"सन्तू तो गोरा-गोरा हो रहा है।" मनकी ने भगतू से कहा।

"हाँ! क्या खाने को मिलता है रे?"

"नित्य सांग भाजी तथा दाल मिलती है। गेहूँ की रोटी और सफेद चावल होते हैं। साथ चटनी, अचार और कभी-कभी एकाध टुकड़ा मिठाई भी मिल जाती है। वहाँ लाला के घर में पाँच बार खाते हैं। प्रायः कलेवा के समय दूध पीते हैं, कभी-कभी मुझे भी आधा गिलास दे देते हैं। दोपहर को मैं दोनों लालाओं का भोजन ले कर दुकान पर जाता हूँ। तीसरे प्रहर ढंडाई बनती है और साथ में मठरी, समोसा दालमोठ होती है। रात को प्रायः पूरी साग होता है। कभी हलुवा और कभी मिठाई होती है। जब-जब वे खाते हैं, मुझे भी देते हैं।

"नित्य स्नान करने को कहते हैं। स्नान करते समय साबुन तेल लगाने को देते हैं।"

इस समय पड़ोस के झोपड़े में से रामी माँ और उसकी लड़की देवी तथा मोहिनी भी सन्तू की आवाज सुन कर उस को देखती ही रह गईं। रामी माँ ने मुस्कराते हुए सन्तू को देखा तो कह दिया, "सन्तू तो बाबू बन गया है।"

"हाँ रामी माँ! आज सुबह नाई आया था तो मेरे भी बाल कटवा दिये हैं। नाई ने मेरे बाल भी वैसे ही बना दिये हैं, जैसे लाला के लड़के, कुमार, के बनाये हैं।"

"अच्छा, तो क्या खाओगे, रोटी बनाऊँ।" मनकी ने पूछा।

"नहीं माँ! भोजन तो कर आया हूँ। ललाइन कहती थीं कि चार बजे तक पहुँच जाऊँ, नहीं तो लल्ला रोयेगा।"

इस पर रामी माँ हँसने लगी। उस बस्ती में रामी माँ

चौधराइन थी। सब औरतें उससे सब विषयों कर राय किया करती थीं। बच्चों के पैदा होने से उनके दाँत निकलने तक की सब बातों में वह ही राय दिया करती थी। कुछ भी कष्ट हो जाय, प्रथम, उससे ही पूछा जाता था। बच्चा तो उसके घर में एक ही था इस पर भी, उसके अपने आस-पास की बातों में रुचि लेनेने उसको बहुत बातों का ज्ञान करा दिया था।

रामी माँ ने पूछ लिया, "जब वह रोता है, तो क्या करते हो तुम ?"

"रामी माँ ! जैसे तुम सोहनी की मुन्नी को लोरी दिया करती हो, वैसे ही मैं उसको गोद में लोरी देने लगता हूँ। इससे वह चुप हो जाता है। मुझसे बहुत हिल-मिल गया है।"

भगतू और मनकी अपने बच्चे को साफ-सुथरा और नहा-धो चम-चम करता देख बहुत प्रसन्न हुए। चार रुपये तो कुछ अधिक वेतन नहीं था, परन्तु उसको सुखी और प्रसन्न देख वे भी सुख अनुभव करते थे।

जब सन्तू के आने की नवीनता समाप्त हो गई, तो रामी माँ अपनी झोपड़ी में चली गई। उसका घरवाला भी आज दोपहर के समय आ गया था। देवी और मोहिनी बाहर गई तो सन्तू भी उनके साथ बाहर चला आया। पेड़ के नीचे दोनों बैठीं तो सन्तू की समझ में आया कि यदि भूमि पर वह बैठेगा तो उसके कपड़े मैले हो जायँगे। आज ही वह धुले हुए कपड़े पहन कर आया था। इसलिये वह खड़ा रहा देवी ने कहा, "सन्तू, बैठो न ?"

सन्तू की आँखें तो कह रही थीं, "तुम्हारा लहँगा पता नहीं कब का धुला हुआ है। उसका रंग भी गहरा है। परन्तु मेरा पायजामा और कुर्ता तो सफेद और धुले हुये हैं।"

देवी समझ गई। उसने कह दिया, "कपड़ों के मैला होने से डरते हो ? लो मैं अपना लहँगा बिछा देती हूँ।" इतना कह उसने अपने लहँगे का एक पाट बिछा दिया।

"अब तो सन्तू इन्कार नहीं कर सका। वह उस पर बैठ गया। देवी ने कहा, "तुम तो सन्तू, अब बाबू बन गये हो ?"

"नहीं देवी ! बाबू तो बड़ी-बड़ी किताबें पढ़ा करते हैं। मेरे

लाला का बड़ा भाई है न, उसको सब बड़े लाला कहते हैं। उसकी बीबी का भाई कभी-कभी आता है। वह पढ़ता है और बड़ी-बड़ी पोथियाँ लिये होता है। उसको सब बाबू कहते हैं।"

देवी विस्मय में सन्तू का मुख देखती रह गई। मोहिनी ने कह दिया, "सन्तू! तुम नहीं पढ़ सकते?"

"मैं....।" सन्तू इसका कुछ उत्तर न दे सका। वह मुख देखता रह गया। मोहिनी सन्तू को बहुत ही विचित्र लड़का मानती थी। अपने गाँव में और यहाँ भी वह अपनी आयु से बड़ों को भी पीट चुका था। उस दिन वहाँ उस पेड़ के नीचे ही उस लड़के को जो उससे ड्योढ़ा प्रतीत होता था, उसने पीटा था। इसके अतिरिक्त मोहिनी ने रामी माँ को भी सन्तू की प्रशंसा करते सुना था। इससे वह गर्व का अनुभव करती थी।

मोहिनी ने बताया, "वह लड़का, जिसको तुमने पीटा था, एक दिन फिर आया था और तुमको पूछता था। रामी माँ अपनी झाड़ू लेकर, उसको पीटने के लिये दौड़ी तो वह भाग खड़ा हुआ।"

इस सूचना से सन्तू को क्रोध चढ़ आया। यदि वह लड़का इस समय सामने होता सन्तू उससे भिड़ जाता।

जब सूर्य पश्चिम की ओर ढलने लगा तो सन्तू उठा और अपने माता-पिता तथा रामी माँ को राम-राम कह कर चाँदनी चौक की ओर भाग गया।

वह लाला के घर में पहुँचा तो लाला अभी सो रहा था। ललाइन ने दीवार से लगी घड़ी में समय देखा। अभी चार बजने में पाँच मिनट शेष थे। इससे उसने सन्तोष की साँस ली।

उन दिनों दुकानों पर रविवार की छुट्टी नहीं होती थी। यह समझा जाता था कि रविवार के दिन अधिक बिक्री होती है। आस-पास के गाँव के लोग और नौकरी-पेशा, जिनको इस दिन छुट्टी होती थी, खरीद के लिये बाजार करने आते थे। ललाइन ने सन्तू से कहा, "ठीक वक्त पर आ गये हो। लाला जी आज नाश्ता दुकान पर ही करेंगे। तुम वहीं दे आओ।"

एक पेचदार ढकने वाले लोटे में सेर भर दूध और एक कटोरदान में नमकीन, मठरी, समोसे, भाजी, दाल इत्यादि डाल कर उसे

दे दिया गया। जब सन्तू जाने लगा तो बड़ी ललाइन भी ऊपर से आ गई और बोली, "बड़े लाला जी से कह देना कि उनके लिये भी नाश्ता इसी में है।"

"सन्तू एक हाथ में दूध का लोटा और दूसरे में कटोरदान लिये हुए दुकान पर जा पहुँचा।

रामनारायण सामान ले दुकान के भीतर आलमारियों के पीछे चला गया। वहाँ जा उसने अपने तथा अपने भाई के लिये सामान पृथक्-पृथक् कर दिया। कुछ थोड़ा-सा सन्तू के लिये भी एक बड़े कागज पर अलग रख दिया। वह स्वयं बाहर चला आया और आकर उसने राधाकृष्ण को भीतर नाश्ता करने के लिये भेज दिया।

सन्तू जब भी दुकान पर जाता था और उसको प्रतीक्षा करनी पड़ती थी, तो वह उस समय देखा करता था कि वहाँ क्या काम होता है। इनकी दुकान पर लोग पुराने सोने-चाँदी के आभूषण, पुराना तिल्ला गोटा किनारी बेचने के लिये आते थे। आज रविवार का दिन होने के कारण सरकारी नौकर अधिक आ रहे थे।

राधा-कृष्ण भीतर नाश्ता ले रहा था। रामनारायण गद्दी पर बैठा हुआ एक बुढ़िया की पुरानी किनारी तौल रहा था। तौलने के बाद उसने किनारी को भलीभाँति देखा और दाम लगा दिये। उसने कहा, "चार रुपये दस आने।"

बुढ़िया बोली, "दे दो।"

रामनारायण ने किनारी को संदूकची में रखा और उसमें से ही दाम निकाल कर बुढ़िया को दे दिये। इस समय खुला पायजामा, कुर्ता पहने, सिर से नंगा एक आदमी आया और पूछने लगा, "बड़े लाला कहाँ हैं?"

"यहीं हैं, बताओ।" वह आदमी कुछ परेशानी-सी अनुभव कर रहा था। इतने में एक सफेद पोश अपनी पत्नी और बच्चे को लेकर वहाँ पहुँच गया। उसने एक सोने की चूड़ी दिखा कर कहा, "इसका मोल लगा दीजिये।"

"रामनारायण ने कसौटी पर घस लगाई और कह दिया, पन्द्रह रुपये तोला की है।"

"कितना खोट होगा इसमें ?"

"चार रत्ती भर।"

"पूरा दाम बताइये।"

रामनारायण ने चूड़ी तौली और एक कागज पर हिसाब लगा कर बताया, "बाइस रुपये तेरह आने।"

"आप देगें ?"

"हाँ।" रामनारायण अपने रजिस्टर में लिख इनसे हस्ताक्षर कराना चाहता था कि वह खुले पायजामे वाला आदमी उसको एक कागज़ की पुड़िया देते हुए बोला, "लाला ! इसे रखो, मैं अभी थोड़ी देर में आता हूँ।"

रामनारायण ने उसे सिर से पाँव तक देखा। किन्तु कुछ समझ नहीं सका। उसने उससे कहा, "एक मिनट में लालाजी आ रहे हैं, ठहर जाओ।"

विवश हो वह आदमी पीछे हट कर खड़ा हो गया। सन्तू देख रहा था कि आदमी चंचल सा हो रहा है। रामनारायण उस बाबू से हस्ताक्षर करा, बाईस रुपये तेरह आने देने लगा तो राधाकृष्ण नाश्ता कर दुकान के भीतर से निकल आया। रामनारायण ने बाबू को रुपया दिया और नाश्ता करने के लिये भीतर चला गया।

राधाकृष्ण गद्दी पर बैठा तो वही सिर से नंगा, कुर्ता-पायजामा पहने हुए आदमी फिर आया और राधाकृष्ण के हाथ में कागज की पुड़िया दे कर कहने लगा, "लाला, इसे अभी रख लो। मैं थोड़ी देर में आऊँगा।"

लाला ने उसके चले जाने पर उस कागज को खोल कर देखा तो उसमें एक अँगूठी, जिसका नगीना बहुत चमक रहा था, दिखाई दी। लाला ने अंगूठी को बड़ी गौर से देखा। हाथ पर तौल कर अनुमान लगाया और फिर सड़क पर इधर-उधर देखा, उसने अँगूठी को लोहे की तिजोरी के अन्दर रख दिया।

यह सब कुछ अन्य आने वाले और बेचने वालों से विलक्षण था। सन्तू इस आदमी और अँगूठी को देख कर सोच रहा था कि यह क्या है और क्यों है ?

इतने में रामनारायण भी दूध पी बाहर आ गया। उसने सन्तू से कहा, "सन्तू ! वह तुम्हारे लिये रखा है, खा कर बर्तन समेटो और घर चले जाओ।"

× × ×

सन्तू को सोने के लिये, सबसे ऊपर की मंजिल में, सीढ़ियों के एक कोने में छोटी-सी कोठरी मिली हुई थी। आज रात वह वहाँ सोने के लिये पहुँचा तो दोनों लाला मकान की छत पर टहलते हुए बात-चीत कर रहे थे।

"दादा !" रामनारायण कह रहा था, "यह चोरी का माल ले कर तो हम कभी फँस सकते हैं?"

"परन्तु यहीं से तो पैसा पैदा होता है। इस अँगूठी में से कम से कम दो-ढाई हजार बच जायेगा।"

"और यदि कहीं फँस गये तो लेने के देने पड़ जायेंगे।"

"तुम व्यर्थ में ही डरते हो। सारे बाजार में यही कुछ होता है, और हो रहा है।"

"पर दादा ! हम तो सत्य व्यवहार करते हैं। हमारी दुकान की मशहूरी ही इस कारण है कि अनजान सज्ञान कोई भी आये, सबकी वस्तु का हमारे यहाँ उचित मूल्य लगता है।"

"यह मशहूरी तो इस प्रकार के काम पर पर्दा डालने के लिये है। हम सबसे कम आय करते हैं। कभी किसी स्थान पर घाटा भी हो जाता है। यदि इस प्रकार के काम न करते होते तो आज तक हमारा दीवाला निकल चुका होता।"

"नहीं दादा। यह काम ठीक नहीं है। मुझे उस आदमी की सूरत-शक्ल पसन्द नहीं।"

इस पर राधाकृष्ण ने आगे कुछ नहीं कहा। सन्तू कान लगा कर दोनों की बातें सुन रहा था। उसको उस नंगे सिर वाले आदमी की बेचैनी का रहस्य पता चल गया। जब उसकी समझ में यह आ गया कि वह कोई चोर था तो उसको कँपकँपी हुई। उसके मन में राधाकृष्ण के लिये कुछ अधिक मान नहीं था और अब तो उसके प्रति घृणा का भाव जागृत हो गया था।

एकाएक राधाकृष्ण ने कह दिया, "तब तो हमको दुकान पर भी बँटवारा करना पड़ेगा। हमारा काम राम खाता नहीं है, आखिर खर्चा बढ़ रहा है, यह सब आयेगा कहाँ से ?"

"तुम समझते हो कि यह सब कमाई हम कर रहे हैं ? नहीं दादा ! भगवान देता है और वह तो तब और भी अधिक देगा, जब हम चोरों से सम्बन्ध तोड़ लेंगे।

"देखो राम ! चोरी की उसने। मैं न लेता तो उससे कोई और ले लेता। जो डेढ़ हजार मेरी तिजोरी में पड़ने वाला है, वह किसी और की तिजोरी में चला जाता।"

रामनारायण ने कह दिया, "मैं यह काम नहीं करूँगा। मुझे भगवान पर भरोसा है। मैं भूखा नहीं मरूँगा।

"ठीक है, सोच लो। मैं तो समझता हूँ कि सराफे के काम में यह सब होता ही है।"

"दादा ! इसको घर में न रखना। आज रात ही कहीं निकाल दो।"

राधाकृष्ण हँस पड़ा। उसने कह दिया, "यह पहला काम नहीं है राम ! पिताजी भी इस प्रकार करते रहते थे।"

दोनों भाई नीचे उतर गये। सन्तू के मन में बवण्डर उठने लगा था। वह छोटे लाला के लिये अपने मन में आदर का स्थान बना बैठा था।

बड़ी ललाइन बड़े लाला से भिन्न स्वभाव की थी ! वह सन्तू से बहुत मीठा बोलती थी, वह उसे हमेशा बेटा कह कर पुकारा करती थी। उसके घर पर जिस दिन विशेष पकवान बनता था, अपने देवर के बच्चों को बुला कर खिलाती रहती थी। सन्तू को भी उस अवसर पर उसका भाग मिल जाता था। छोटे लल्ला से, जिसको सन्तू खिलाया करता था, वह बहुत प्यार करती थी। इससे सन्तू अपनी ललाइन की अपेक्षा बड़ी ललाइन के घर अधिक रहता था। कारण था कि बड़ी ललाइन का भाई, बाबू भी सन्तू से अधिक मेल-जोल रखता था।

इस अँगूठी का गुल अगले दिन खिला। सन्तू प्रायः पाँच बजे उठ पड़ता था। आज उसको समय से भी पहले जगाया गया। वह

जागा तो उसकी दृष्टि बड़ी ललाइन पर पड़ी। वह उसे धीरे-धीरे आवाज दे जगा रही थी।

"हाँ, बड़ी माँ ?" वह उसको इसी भाँति पुकारा करता था।

बड़ी ललाइन ने कहा, "जल्दी उठो। कुछ काम है।"

सन्तू उठ कर खड़ा हो गया। ललाइन ने उसको एक डिबिया दी उससे कहा, "यह लो, इसे जेब में डाल लो और अपने पिता के झोपड़े में चले जाओ। इसको वहाँ अपने पास सँभाल कर रखना। यहाँ नहीं आना। तुमको दो महीने की छुट्टी है और उसका वेतन और खाने पीने के लिय यह ले जाओ।" इतना कह उसने एक नोटों का बण्डल उसके हाथ में दे दिया।

सन्तू वितर-बितर ललाइन का मुख देख रहा था। उसने समझा कि लड़का बात समझा नहीं। इस कारण उसने बात स्पष्ट करते हुये कहा, "इस डिबिया में एक बहुत ही कीमती वस्तु है। पुलिस उसको लेने के लिये आ रही है। इसको लेकर भाग जाओ। जब तुमको हम वापस बुलायेंगे तो इतना ही इनाम और देंगे।"

इस समय तक सन्तू को रात की बात, जो दोनों भाइयों के मध्य हुई थी, स्मरण हो आई। रामनारायण की बात, कि इससे वे फँस सकते हैं और अब पुलिस के आने की बात सुन, वहाँ से भाग जाने के विषय पर विचार करने लगा। उसने पूछा, "छोटी माँ जी से पूछ लूँ।"

"मैंने पूछ लिया है। जल्दी करो, बहुत कम समय है।"

सन्तू ने जूता पहना और धड़ाधड़ सीढ़ियाँ उतरता हुआ मकान के दरवाजे पर जा खड़ा हुआ। अभी तक डिबिया उसने हाथ में पकड़ रखी थी। अब उसे अपने कुर्ते की जेब में रख वह गली से बाहर निकला और किनारी बाजार में जा खड़ा हुआ। इस प्रातःकाल के समय में बाजार सुनसान था, दुकानें बन्द थीं। कोई आने-जाने वाला दिखाई नहीं देता था। वह दरीबा की ओर चल पड़ा। जब वह दरीबा में पहुँचा तो कोई विरला स्त्री-पुरुष उसको जमुना स्नान के लिये जाता दिखाई दिया। वहाँ से वह चाँदनी चौक की ओर चल पड़ा। इस समय उसको दो दर्जन पुलिस वाले तेजी से चलते हुये सामने से आते मिले। उनके साथ बड़ा लाला राधाकृष्ण

भी था। सन्तू एक ओर हट कर दीवार के साथ लग कर खड़ा हो गया। वह पुलिसवालों को निकल जाने के लिये रास्ता देने के लिये खड़ा हो गया था।

यहाँ खड़े उसने राधाकृष्ण को पुलिस वालों के साथ नंगे सिर जाते देखा। राधाकृष्ण ने उसको देखा अथवा नहीं, वह नहीं जानता था।

जब पुलिस वाले निकल गये तो वह समझा कि लाला पकड़ा गया है और उसी अँगूठी की तलाश हो रही है। वह इतना समझ गया था कि दुकान की तलाशी हो चुकी है और अब घर की तलाशी होने जा रही है।

उसने देखा, पुलिस उसके मकान किनारी बाजार की ओर घूम गई है। वह वहीं खड़ा विचार कर रहा था कि क्या करे। उसकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था। वह समझता था कि उस पर अथवा उसके झोपड़े पर किसी का सन्देह नहीं हो सकता है कि हजारों रुपये की वस्तु उसके पास वहाँ पड़ी होगी। केवल उसको बताना नहीं चाहिये। उसके मन में प्रश्न उत्पन्न हुआ था कि वह इस विषय में अपने बाबा को भी बताये अथवा नहीं।

वह मन ही मन विचार करता था, "उसको बताने से क्या लाभ होगा?"

"नहीं बतायेगा तो क्या बतायेगा कि उसकी नौकरी छूट गई है? किन्तु जब वह अपने अग्रिम वेतन के रुपये दिखायेगा तो बाबा समझेगा कि उसने चोरी की है। वह उसको पीटेगा और कान पकड़ कर लाला की दुकान पर ले जायेगा। इससे तो बात गुप्त नहीं रह सकेगी।"

"इस पर भी वह चोरी के माल को छिपा ले क्या?"

इस प्रकार वह कुछ भी निश्चय नहीं कर सका। इस समय तक वह यमुना के समीप तक पहुँच गया था। उसका अपना घर क्षण प्रति क्षण समीप आता जा रहा था।

निदान वह अपने झोपड़े के बाहर पहुँच गया। इस समय तक भी वह निश्चय नहीं कर सका था कि क्या करे। सत्य बात बताये, झूठ बोले। यदि झूठ बोले तो कितना।

इस समय भगतू घड़ा लिये पानी लेने नल की ओर जाने लगा तो सन्तू को वहाँ खड़ा देख वह स्तब्ध रह गया। उसने पूछा, "सन्तू है क्या ?"

"हाँ बाबा।"

"इस समय आये हो ?"

"हाँ बाबा ! अभी आकर खड़ा ही हुआ हूँ।"

"तो भीतर आओ।"

"बाबा, तुम पानी ले आओ।"

भगतू ने आवाज दे दी, "ओ मनकी ! सन्तू आया है।"

मनकी आँखें मलती हुई बाहर निकल आई। उसने सन्तू को भीतर बुला अपनी गुंदड़ी में बैठा कर पूछा, "क्या है सन्तू, कैसे आये हो ?"

"माँ, लाला पर मुसीबत पड़ गई है। उसको पुलिस पकड़ कर ले गई है, मुझे छुट्टी दे दी गई है।"

"क्यों ?"

"यह मुझे मालूम नहीं। ललाइन ने कहा है कि मेरी नौकरी छूट गई है। और मैं जा सकता हूँ, सो मैं चला आया"

" कुछ पैसे दिये हैं ?"

"कहती थी दो-चार दिन बाद आना मिल जावेंगे। माँ वह रो रही थी। इस कारण मैंने जिद नहीं की।"

इससे माँ को सन्तोष हो गया। उसने कह दिया," कुछ हानि नहीं हुई। किसी दूसरे स्थान पर काम मिल जायेगा।"

भगतू को जब यह किस्सा सुनाया गया तो उसको बहुत दुःख हुआ। पिछले दिन वह अपने लड़के को देख मन में बहुत मनसूबे बनाने लग गया था।

सन्तू को अपने अनायास ही असत्य बात बताने और सफलता-पूर्वक बहुत कुछ छिपाने पर आश्चर्य हुआ था। जब उसके माता-पिता मजदूरी करने चले गये तो उसके तथा मोहिनी के लिये बाजरे की खिचड़ी पका कर छोड़ गये। सन्तू ने खिचड़ी की काली-काली सूरत देखी तो खा नहीं सका। इस पर भी मध्यान्ह तक जब भूख तेजी से लगी तो वह उसको ही खाने के लिये बैठ गया।

मध्यान्ह के समय रामी माँ और देवी उसकी झोपड़ी में आये। मोहिनी आज उनकी झोपड़ी में नहीं गई थी। इसका कारण जानने के लिये वे आईं थीं।

× × ×

रामी माँ ने जब सन्तू की बात जो उसने अपने माता-पिता को सुनाई थी, सुनी तो उसने पूछ लिया, "पुलिस क्यों पकड़ कर ले गई है लाला को ?"

सन्तू रामी माँ को सारी बात सच-सच बताने के लिये तैयार हो गया। वह मन में विचार करता था कि रामी माँ अवश्य ठीक राय देगी। इस पर भी वह पूर्ण सत्य नहीं बता सका। उसने पूछ लिया, "रामी माँ ! मालिक की बात को छिपाना चाहिए अथवा बता देना चाहिये ?"

रामी माँ गम्भीर हो गई। कुछ क्षण विचार कर बोली, "तो तुम कुछ बात जानते हो ? क्या कोई बुरी बात है ?"

"अवश्य है, पुलिस पकड़ने के लिये जो आई थी।"

"देखो सन्तू ! हम लोग सत्य, झूठ, पाप, पुण्य, अच्छा, बुरे में भेद नहीं कर सकते। इस कारण जो कुछ तुम्हें पता हो, ज्यों का त्यों बता देना। उसमें न राई कम अथवा न राई अधिक बताना अथवा कहना।"

"तो अपने आप पुलिस में बताने के लिये चला जाऊँ ?"

"इसकी आवश्यकता नहीं। जब कोई पूछे तो बता देना।"

"देखो रामी माँ ! पुलिस के सामने न आने के लिये ही उन्होंने मुझे यहाँ भेजा है।"

"नौकरी से निकाल दिया है क्या ?"

"नहीं, उन्होंने कहा है मुझे इस काल का वेतन मिलेगा।"

"तुम्हारा स्वयं पुलिस में जाना ठीक नहीं। देखो, एक बार देवी के पिता भी पुलिस में एक चोरी की सूचना देने के लिये गये थे। उस दुकान में जहाँ वे काम करते थे, चोरी हो गई थी। इनको कुछ पता था। ये बताने चले गये। पुलिस वालों ने इनको ही पकड़ लिया। पन्द्रह दिन हवालात में रखा और इस काल में तीन बार

खूब पीटा। ये बेचारे तो कुछ अधिक जानते नहीं थे। कुछ बता नहीं सके। पुलिस ने तो छोड़ दिया, परन्तु चोरों के वकील ने कई बार तो इनको कचहरी में बुलाया, इनकी साक्षी कराई और फिर इनके साथ जिरह की। और इनके ऊपर ही चोरी करने का अपराध लगाया। बहुत कठिनाई से वे बचे, परन्तु वहाँ से नौकरी छूट गई।

"देखो बेटा सन्तू! चोरी करना पाप है। परन्तु जिसका अन्न खाया हो, उसके विरुद्ध कुछ कहना भी तो पाप है।"

इस बात ने सन्तू की आत्मा को शान्ति प्रदान की। फिर रामी माँ ने कह दिया—"कबिरा तेरी झौंपड़ी, गलकटियन के पास। जो करनगे सो भरणगे, तू क्यों भया उदास!"

सन्तू ने वह डिबिया, जो उसको बड़ी ललाइन ने दी थी, बिना किसी को उसके विषय में कुछ कहे, अपनी झोंपड़ी के सामने के पेड़ की जड़ में, एक गढ़ा खोद कर दबा दी। यह उसने तब किया जब रामी माँ अपनी बेटी और मोहिनी को लेकर वहाँ से चली गई थी।

सन्तू ने जेब के रुपये निकाल कर भी गिने। दस-दस रुपये के दस नोट थे। अभी तक वह यह नहीं विचार कर सका था कि इन रुपयों को कहाँ छिपाया जाय।

दिन पर दिन व्यतीत होने लगे। सन्तू को देवी के पिता का पुलिस द्वारा पीटा जाना, जब भी स्मरण होता, तो वह भयभीत हो जाता था। वह दुकान की ओर जाने का भी साहस नहीं कर सका। कुछ दिन व्यतीत होने पर भगवू ने उससे कहा, "बेटा! जा कर पता करना कि तुम्हारे लाला छूटे अथवा नहीं। यह भी पता करना कि वे तुम्हारा वेतन देंगे अथवा तुम्हें नौकरी पर रख लेंगे।"

"बाबा! यदि वे फिर नौकर रख लें तो क्या मैं नौकरी कर लूँ।"

'हाँ, मैं समझता हूँ कि इसमें तुम्हारा भला है।"

इससे सन्तू ने आज चाँदनी चौक जाने का साहस किया। उसने दूर से ही दुकान को देखा। वह खुली थी। इस पर साहस कर वह कुछ और आगे बढ़ गया। वह दुकान के सामने जा खड़ा हुआ। रामनारायण ने देखा तो माथे पर त्योरी चढ़ा कर पूछा, "अबे सन्तू! कहाँ चला गया था?"

सन्तू का विचार था कि छोटे लाला को पता होना चाहिये कि वह कहाँ और क्यों गया है। इससे वह दुकान पर चढ़ जूता उतार लाला जी के सम्मुख बैठ कर बोला, "तो आपको बड़ी माँ जी ने बताया नही ?"

"क्या बताया नहीं ?"

"यही कि मै कहाँ चला गया था ?"

"तो उनको बता कर गये थे ?"

"उन्होंने भेजा था। मैंने कहा था कि छोटी माँ को बता कर जाता हूँ तो वे कहने लगीं कि उन्होंने उनसे पूछ लिया है। इस कारण मैं बिना छोटी माँ को बताये चला गया।"

"अब कहाँ नौकरी करते हो ?"

"आपकी ही। मुझे बड़ी माँ ने कहा था कि मेरी नौकरी छूटेगी नहीं।"

अबे गधे ! तू मेरा नौकर था, तुझे मुझे बताये बिना कहीं नहीं जाना चाहिये था। अब तुम जानो और तुम्हारी बड़ी माँ जाने, मैं क्यों वेतन दूँगा ?"

उन्होंने कई महीने का वेतन तो पहले ही दे दिया था।" इतना कह सन्तू ने जेब से नोटों की गड्डी निकाल कर दिखा दी।

रामनारायण ने नोट हाथ में पकड़ कर गिने और विस्मय में वह सन्तू का मुख देखने लगा। इस पर संतू ने उसके घर से भाग कर जाने का पूर्ण वृत्तान्त बता दिया।

"वह डिबिया कहाँ है ?"

"मैंने एक जगह छिपा कर रखी है।"

"अपने बाप के पास ?"

"जी नहीं, मैंने उनको भी नहीं बताया। पुलिस में देने के लिये जाने का भी विचार नहीं किया।"

"क्यों ?"

"हमारे पड़ोस में एक रामी माँ रहती है। वह बहुत ही समझदार है। उससे मैंने पूछा था कि मुझे पुलिस को बताना चाहिये अथवा नहीं, तो वह बोली, हम न्यायकर्ता नहीं। हमको अपने मालिक के कामों पर कुछ कहने की आवश्यता नहीं।"

"तो डिबिया कहाँ रखी है ?"

"एक स्थान पर भूमि में गाड़ रखी है।"

"वहाँ से कोई निकाल ले तो ?"

"कोई जानता नहीं, किसी ने गाड़ते देखा नहीं। इसलिये मैं समझता हूँ कि कोई नहीं निकाल सकता।"

रामनारायण ने कुछ काल तक विचार कर कहा, "तुम जानो, तुम्हारी बड़ी माँ जाने। उनसे पूछ लेना कि वे अपनी डिबिया लेंगी कि नहीं। ये लो अपने रुपये भी सँभालो।"

"लाला जी ! ये रुपये को क्या करूँगा ? मुझे तो अपना वेतन चाहिये।"

इस पर रामनारायण फिर कुछ विचार करने लगा। वह नहीं जानता था कि इस विषय में क्या करे। उस रात जब उसने कहा था "दादा ! इसको रात ही कहीं निकाल दो, घर पर न रखना।" तब वह यह नहीं समझ सका था कि उसका भाई उस चोरी के माल को कहाँ छिपा कर रखेगा। अब यह देख कि उसके भाई से तो उसकी भाभी ही अधिक चतुर निकली है, वह विचार करने लगा कि इसमें उसका क्या कर्त्तव्य है ?

⊠ ⊠ ×

राधाकृष्ण को यह पता नहीं था कि पुलिस को इतनी जल्दी चोरी का पता चल जायेगा और, वह दिन चढ़ने से पूर्व ही उस अँगूठी का सूराग पा जावेगी। वह उस रात रामनारायण से बात-चीत कर अपने कमरे में गया और उसने अँगूठी को निकाल, उसमें से नगीना पृथक कर दिया। अँगूठी के सोने के ढाँचे को वह गला देना चाहता था। किन्तु फिर कुछ विचार कर उसने उसे अपनी जेब में रख लिया। और नगीना, जो दस कैरट का हीरा था, एक पीतल की डिबिया में रख अपनी पत्नी को दे दिया। उसने कहा, "अभी रखो, सुबह लेता जाऊँगा।"

परन्तु पुलिस तो रात को ही आ गई। एक कॉन्सटेबल ने रात के दो बजे ही दरवाजा खटखटाया। राधाकृष्ण नीचे उतरा तो पकड़ लिया गया। उसको कहा गया कि दुकान की तलाशी

होगी। वह चल पड़ा। बड़ी माँ ने अपने पति को पुलिस के साथ जाते देखा तो वह समझ गई। उसको रात वाली डिबिया का स्मरण हो आया। उसको विश्वास हो रहा था कि यदि वह हीरा दुकान पर नहीं मिला तो घर पर खोज होगी और अगर घर से निकल आया तो चोरी पकड़ी जाने के साथ-साथ चोर भी पकड़ा जायेगा। इस कारण वह विचार करने लगी कि इसको कहाँ छुपाया जाय ?

बारी-बारी से सब स्थानों का, जहाँ वह उस समय रखा जा सकता था, विचार करने पर उसको कोई भी स्थान, सुरक्षित नहीं जँचा। इस समय उसको सन्तू का स्मरण हो आया। उसको विदित नहीं था कि सन्तू को उस चोरी के माल के विषय में कुछ जानकारी है। इस कारण वह समझी कि उसको बिना बताये माल रखने-वाला बनाया जा सकता है। अतः वह डिबिया ले उसके कमरे में जा पहुँची।

इस प्रकार वह सन्तू को पुलिस के आने से केवल पाँच मिनट पूर्व ही वहाँ से निकाल सकी थी। इस कारण जब पुलिस घर पर पहुँची तो उसने एक प्रकार से सुख की ही साँस ली। इस समय तक एक दुर्घटना हो चुकी थी। दुकान की तलाशी लेने से पूर्व राधाकृष्ण की तलाशी ली गई, तो उसकी जेब में से अँगूठी का ढाँचा निकल आया। वह पुलिस ने अपने अधिकार में ले लिया। और अब हीरे की खोज होने लगी। दो-घण्टे तक दुकान की तलाशी होती रही, किन्तु हीरा न मिला। इस कारण पुलिस राधाकृष्ण के घर की तलाशी लेने के लिए चल पड़ी।

घर की तलाशी होनें लगी तो रामनारायण को पता चला कि पुलिस तो रात के दो बजे ही आ गई थी परन्तु उसको जगाया नहीं गया। पूर्ण घर की तलाशी ली गई, किन्तु हीरा फिर भी नहीं मिला।

जब रामनारायण से पूछा गया तो रामनारायण ने इस विषय में अपनी अनभिज्ञता ही प्रकट की। राधाकृष्ण हवालात में भेज दिया गया। साथ ही रामनाराण को दस बजे कोतवाली में उप-स्थित होनें के लिये कहा गया।

कोतवाली में जा कर रामनारायण को पता चला कि अँगूठी बेचने वाला हथकड़ियों से बँधा पड़ा है। उसको दोनों भाइयों को पहचानने के लिये वहाँ लाया गया था।

रामनारायण को विदित हुआ कि वह आदमी बड़े लाट की कोठी में खानसामा है और अंगूठी, जो चुराई गई है, लाट साहब की पत्नी की है। वह अँगूठी बम्बई के एक जौहरी से दस हजार रुपये में खरीदी गई थी।

पिछले दिन खानसामा अब्दुल्ला किसी काम से 'हर ऐक्सीलैंसी' के सोने वाले कमरे में गया था और उसके वहाँ जाने के पाँच मिनट बाद ही अँगूठी गुम पाई गई। वह सोने के पलंग के पास एक तिपाई पर रखी हुई थी।

तुरन्त अब्दुल्ला की खोज आरम्भ हुई। और जब वह नहीं मिला तो पुलिस में रिपोर्ट कर दी गई। अब्दुल्ला रात आठ बजे कोठी में लौटा तो पकड़ लिया गया। जब पुलिस ने तीसरे दर्जे की वेदनायें देनी आरम्भ कीं तो वह बक गया और उसने दुकान का, जहाँ उसने अँगूठी दी थी, पता दे दिया। उसने बताया था कि दुकान पर दो भाई बैठते हैं, छोटा भाई तो ऐसा माल नहीं लेता, बड़े भाई को वह अँगूठी दे आया है। बड़े भाई ने अभी दाम नहीं दिये ह। अगले दिन तक दाम लगाकर देगा।

इस प्रकार बयान लिख मजिस्ट्रेट से तलाशी की आज्ञा ले, पुलिस रात के दो बजे अब्दुल्ला को साथ लेकर राधाकृष्ण की दुकान पर जा पहुँची। अब्दुल्ला से दुकान का नाम तथा उसके घर का पता पूछा और उसको दुकान पर बुला लिया।

अँगूठी का ढाँचा तो लाला की जेब से निकला, परन्तु हीरा न तो जेब से, न दुकान से और न ही घर से मिला। अब्दुल्ला ने बताया कि उसने उसी लाला को अँगूठी दी थी।

राधाकृष्ण ने पुलिस में बयान दे दिया कि यह आदमी केवल अँगूठी का ढाँचा बेचने ही मेरी दुकान पर आया था। मैंने पूछा था, "इसका नगीना कहाँ है ?" इसने कहा कि वह तो बिल्लौर का टुकड़ा था। इसने फेंक दिया है। मुझे इसने यह भी नहीं बताया

था कि यह उस अँगूठी को कहीं से चुरा कर लाया है। मैं इसके नगीने के विषय में कुछ नहीं जानता।"

थानेदार ने पूछा, "इसकी खरीद रजिस्टर में क्यों नहीं लिखी गई?"

"यह खरीदी ही नहीं थी। मैंने उसको कहा था कि वह बिल्लौर का टुकड़ा ले आये तो दाम लगाऊँगा। मेरा विचार था कि दस-बीस रुपये का तो वह भी जरूर होगा। इसने दिन के समय लाने का वचन दिया था। इसी कारण मैंने वह ढाँचा अभी तक अपनी जेब में ही रखा था। इसकी चस लगा कर भी नहीं देखी।"

"यह पहले भी कभी कुछ बेचने आया है?"

"हाँ, एकाध बार पहले चाँदी के कुछ आभूषण लाया था कि उसकी पत्नी के हैं।"

रामनारायण के भी बयान हुए। उसने कहा, "मैं इस आदमी को नहीं जानता। मैंने इसको पहले कभी नहीं देखा।

"हमारी दुकान साझें में है। परन्तु हम पृथक्-पृथक् रहते हैं। हम दुकान में बराबर के पट्टीदार हैं। दुकान पर सब माल की खरीद और बिक्री लिखी जाती है। मुझको भाई ने कोई अँगूठी नहीं दिखाई। खरीद-फरोख्त का हिसाब रजिस्टर में लिखता हूँ। दुकान के लियें खरीदी जाती तो लिखाई जाती।"

"इस पर भी पुलिस नें राधाकृष्ण को नहीं छोड़ा। मैजिस्ट्रेट के सम्मुख राधाकृष्ण को उपस्थित किया गया तो उसनें पुलिस को चार दिन का रिमाण्ड दे दिया। चौथे दिन मैजिस्ट्रेट नें पुलिस से पूछ लिया, "चोर के बयान पर किसी भले घर के आदमी को पकड़ लेना तभी ठीक होता है, जब कोई प्रमाण मिल जाय। प्रमाण इस बात का होना चाहिये कि दुकानदार जानता था कि अँगूठी का ढाँचा चोरी का है। यह कैसे जान सकता था? इसलियें इसकी जाँच के लियें अँगूठी खरीदी नहीं, केवल रख ली थी।

पुलिस ने बहुत कहा, परन्तु दस हजार की जमानत पर राधा-कृष्ण को, पुलिस की जाँच तक के लियें छोड़ दिया गया। जमानत

हो गई और राधाकृष्ण शुक्रवार सायंकाल घर आ गया। राधाकृष्ण के श्वसुर की बहुत पक्की सिफारिश लग गई थी। उसनें ही राधाकृष्ण की जमानत की थी।

शुक्रवार प्रातःकाल ही सन्तू दुकान पर आया था और रामनारायाण ने उसको अपनी भावज के पास भेज दिया।

सन्तू जब ललाइन के सामने उपस्थित हुआ तो उसने उसको पूछ लिया, "अभी क्यों आये हो ?"

"मैं यह पता करने के लिये आया था कि अब क्या करना चाहिये ?"

"देखो सन्तू ! कल किसी समय आना। आशा है, बड़े लालाजी आ जायेंगे और फिर वे ही बतायेंगे कि तुमको क्या करना चाहियें। वह तुमको भारी इनाम भी देंगे। "लेकिन वह चीज कहाँ रखी है तुमनें ?"

"एक स्थान पर भूमि में गाड़ कर रख दी है।"

"तो भाग जाओ। उस जगह की खबरदारी करना। वह डिदिया गुम नहीं होनी चाहियें।"

रामनारायण के बच्चों नें सन्तू को आते हुए देख लिया था। रामनारायण का बड़ा लड़का तो स्कूल चला गया था। लड़की, जो तीन वर्ष की थी, उसको आया देख हल्ला करनें लगी। "सन्तू आया, सन्तू आया।"

रामनारायण की पत्नी रसोई घर में थी। आवाज सुन वह बाहर चली आई। लड़की ने बताया—"वह ताई जी के घर में गया है।" रामनारायण की पत्नी वहाँ जा पहुँची। अपनी जेठानी और सन्तू की बातें सुन उसको विदित हो गया कि चोरी के विषय में सन्तू का भी कुछ भाग है। जब सन्तू चला गया तो जेठानी ने देवरानी से सब बातें कह दीं।

सब वृतान्त सुन लाजवन्ती ने पूछ लिया, "तो सन्तू को पता था कि वह चोरी की वस्तु है ?"

"उसको सन्देह तो हो गया होगा। जिस प्रकार मैंने उसको उस दिन भगाया था और वह कह रहा है, उसने लाला जी को

पुलिस के साथ आते देखा था, वह समझ तो गया होगा। आज वह यह पूछने के लिये आया था कि क्या वह उस वस्तु को ले आये ? साथ ही वह कह रहा था कि रुपया, जो उसको मैंने दिया था, वह मधु के पिता जी के पास जमा करा आया है। कहता था, उसको केवल वेतन चाहिये। वेतन से अधिक लेगा तो चोरी में भागीदार बन जायेगा।"

"तो फिर तुमने उसको क्या कहा है ?"

"मैंने तो उसे कल आने के लिये कहा है।"

लाजवन्ती मन में सन्तू के चरित्र का अनुमान लगा रही थी। इस समय रामनारायण दुकान से आ गया। उसने पूछ लिया, "भोजन तैयार है क्या ? आज भैया की पेशी है।"

भोजन के समय लाजवन्ती नें जेठानी के साथ हुई वार्तालाप का विवरण सुना दिया। इस पर रामनारायण ने कहा, "सन्तू आज दुकान पर भी आया था और उसने यह सब मुझे बताया है। वह सौ रुपया मेरे पास दे गया है।"

"बहुत ही विचित्र लड़का है।"

"हाँ, अपने ढंग का ईमानदार है। मुझे उसकी बातों से विश्वास हो गया है कि वह जानता था कि उस डिबिया में चोरी का कीमती माल है। इस पर भी उसने न तो अपने माता-पिता को इस विषय में बताया, न ही उसकी चोरी कर लेने की इच्छा प्रतीत होती है। पाँच दिन तक उसकी जेब में सौ रुपया पड़ा रहा। उसको भी उसनें छुआ नहीं है।"

"बहुत विचित्र है ?"

"इस पर पुलिस में रिपोर्ट करने भी नहीं गया। उसने अपनी एक पड़ोसिन से पूछा था कि वह अपनें मालिक का भेद पुलिस को बताये अथवा नहीं। उसकी पड़ोसिन ने उसको नहीं बताने की सलाह दी है। किन्तु सन्तू ने उस पड़ोसिन को भी यह नहीं बताया कि चोरी का माल उसके पास है।"

"बहुत ही चतुर प्रतीत होता है।"

"वह तो है ही। साथ ही उसमें नैसर्गिक ईमानदारी की प्रवृत्ति है।"

"वह कल आयेगा। जेठानी जी का विचार है कि जेठ आज छट जायेंगे। अब बताइये सन्तू को रखना है अथवा नहीं ?"

"उसका क्या दोष है ? वह अभी बच्चा है। उसको कानून की लम्बी-चौड़ी बातें विदित नहीं। उसको समझा देंगे तो ऐसी भूल नहीं करेगा।"

× × ×

राधाकृष्ण छूट कर आया तो रात्रि के समय घर वालों में विचार गोष्ठी हुई। इसमें घर के वयस्क सदस्यों के अतिरिक्त राधाकृष्ण के श्वसुर लाला बनवारीलाल तथा साला भी उपस्थित थे। रामनारायण की ससुराल तो दिल्ली से बाहर थी इस कारण उनकी ओर से कोई नहीं आया था।

मुकदमे के लिए दिल्ली के विख्यात बैरिस्टर मिस्टर गुप्ता को करने का निश्चय किया गया। इस पर रामनारायण ने अपनी यह इच्छा व्यक्त की कि वह अब भाई से पृथक् काम करना चाहता है।

बनवारीलाल ने पूछ लिया, "क्यों ?"

"मैं इस प्रकार के व्यापार को उचित नहीं समझता और इस कारण इसमें भागीदार भी बनना नहीं चाहता।"

"बहुत ही कृतघ्न हो रामनारायण ! तुम्हारे बड़े भाई ने अपने बयान में तुम्हारा नाम न लाकर तुमको साफ-साफ बचा दिया है और तुम उससे पृथक् होना चाहते हो।"

"मैं भाई की मुखबिरी करने के लिये नहीं जा रहा हूँ। मैं तो सुलह-सफाई से घर पर ही बँटवारे की बात कर रहा हूँ।"

"मैं बँटवारे का विरोध नहीं कर रहा।" बनवारीलाल ने कहा, "मैं तो यह कह रहा हूँ कि तुम बिना प्रमाण भाई को बेईमान कह रहे हो।"

"प्रमाण तो है।"

"तो दिखाओ !"

"भाई साहब कह दें कि मैं गलत कह रहा हूँ।"

राधाकृष्ण आँखें नीची किये बैठा रहा। इस पर केदारनाथ, राधाकृष्ण के साले ने कह दिया, "पिताजी ! क्रोध करने की बात

नहीं है। जब छोटे लाला जी कहते हैं कि वे मुखविरी करने के लिये नहीं जा रहे, तो झगड़े की तो बात ही नहीं रही। रही बात पृथक्-पृथक् करने की, मैं समझता हूँ कि यह भी ठीक ही है। केवल बँटवारा मुकदमे के पश्चात् होगा।"

रामनारायण ने कहा, "वह इस शर्त पर कि जब तक मुकदमा चले भैया दुकान पर नहीं आयेंगे।"

इस प्रस्ताव पर तो सब चुप कर गये, बात राधाकृष्ण की पत्नी चन्दोबीबी ने बना ली। उसने कहा, "रामनारायण भैया ठीक ही कहते हैं। इतनी बदनामी हो जाने के पश्चात् उनका अभी दुकान पर जाना ठीक नहीं। वे घर पर बैठ कर चण्डी का जाप करेंगे, जिससे कि यह संकट टल जाय।"

राधाकृष्ण भी कहने लगा, "मुझे स्वीकार है।"

इस प्रकार गोष्ठी समाप्त हो गई। रात को चन्दो ने हीरे का सन्तू के पास होना बताया तो कितनी ही देर तक राधाकृष्ण अपनी पत्नी का मुख देखता रह गया। बहुत देर तक विचार कर पूछने लगा, तुम्हें उसे रखने के लिये और कोई नहीं मिला था?"

"केदार यहाँ था नहीं। पड़ोसियों पर मुझको विश्वास नहीं था।"

"तो सन्तू पर बहुत विश्वास है? वह भिखारियों का लड़का कहीं यह जान गया कि उस डिबिया में क्या है, तो उसको हजम कर जायेगा।"

"सन्तू यह जानता है कि उसमें चोरी की गई कोई मूल्यवान वस्तु है। इस पर भी वह आज आया था, यह पूछने के लिये कि वह उसे कब वापस लाये।"

"तो तुमने क्या कहा है?"

"मुझे तो अभी भी उसे घर पर रखने में डर ही लगता है।"

"मैं समझता हूँ कि उसे मँगवा तुम केदार के पास रखवा दो।"

"वह नहीं रखेगा। वह भी एक दिन कह रहा था कि 'यह चोरी का काम जीजा जी क्यों करते हैं?' आज भी उसने आपकी ईमानदारी के विषय में आपका समर्थन नहीं किया।"

"तो फिर क्या करें ?"

"आप जानें आपका काम। कहीं दोबारा तलाशी हुई और वह हीरा यहाँ मिल गया तो सब कुछ बरबाद हो जायेगा। उसको अब निकाल ही देना चाहिये।"

"यह रामनारायण भी अब बहुत तंग करने लगा है।"

"वह ठीक ही कहता है। उसकी पत्नी भी एक दिन कहती थी, 'हम निर्धनता का जीवन व्यतीत कर लेंगे परन्तु वह पाप का बोझा नही ढोयेंगे।'"

इस पर राधाकृष्ण चुप कर रहा। कई दिन की हवालात के पश्चात् वह आज अपने कमरे में लेटा तो दोनों स्थानों का अन्तर देख सुख की नींद सो गया। यों तो हवालात में भी रुपये के बल पर वह एक सीमा तक सुखी था। इस पर भी हवालत की, घर के साथ किसी अंश में भी तुलना नहीं की जा सकती थी।

राधाकृष्ण सोचता रहता था कि हीरे को कहाँ छिपायेगा। परन्तु इस विषय में सब कुछ भी निर्णय नहीं कर सका। अगले दिन सन्तू दुकान पर आया तो रामनारायण ने उसे घर भेज दिया।

सन्तू को आया देख राधाकृष्ण ने पूछा, 'वह डिबिया कहाँ है ?"

"मैंने एक जगह भूमि में गाड़ रखी है। कहिये तो निकाल कर ले जाऊँ।"

"नहीं अभी नहीं, परन्तु उसको सावधानी से रखना।"

"लाला जी ! यमुना में बाढ़ आ रही है। और कहीं पानी आ गया तो वह भूमि जल में डूब जायेगी, फिर मैं नहीं जानता कि क्या होगा।"

यह एक नई समस्या थी। सन्तू ने बताया, "कल मैंने यमुना में जल चढ़ने का समाचार सुन वहाँ के पुराने निवासियों से पूछा था, तो वे कह रहे थे कि एक बार पहिले भी बाढ़ आई थी। उस समय यह सब भूमि जलमग्न हो गई थी। इससे मुझे आपकी डिबिया की चिन्ता लग गई है।"

"तो ऐसा करो, उसे निकाल कर अपनी जेब में रख लो। किसी दिन मैं तुमसे लूँगा।"

इस पर सन्तू बहुत गम्भीर विचार में पड़ गया। उसे चुप देख राधाकृष्ण ने कह दिया "जाओ ले कर यहाँ चले आओ। उसे अपनी जेब में रखना, परन्तु किसी को इस बात का पता नहीं होना चाहिये।"

सन्तू को यह योजना पसन्द नहीं थी। वह छोटी ललाइन के पास चला गया। उसने हाथ जोड़ कर राम-राम की तो लाज ने पूछ लिया, "सुनाओ सन्तू! काम पर कब आओगे? लल्ला तो तुमको बहुत याद करता है।"

"छोटी माँ! मैं तो नौकरी पर आने के लिये सदा ही तैयार रहता हूँ, परन्तु बड़ी माँ कहती थीं कि मैं कुछ दिन अभी और न आऊँ। वे यह भी कहती थीं कि ये सब वह आपसे पूछ कर ही कर रही हैं।"

"मुझे यह सब पता है। अभी तुम बड़े लाला जी से मिलकर आये हो न। वे क्या कहते हैं?"

"वे तो कहते हैं मैं कल से नौकरी पर आ जाऊँ। उनकी डिबिया मैं अपनी जेब में रख लूँ। कुछ कहीं किसी को सन्देह हो जाय तो यहाँ से भाग जाऊँ।"

"यह तो ठीक नहीं। इस विषय में तुम छोटे लाला जी से राय कर लो। जैसा वे कहें, वैसा करना। नौकरी तो तुम उनके घर में ही कर रहे हो न?"

सन्तू दुकान पर जा पहुँचा। उसने घर पर हुई बातचीत का विवरण उसको सुनाया तो रामनारायण ने कह दिया, "तो बड़े लाला जी की नौकरी कर लो, उस स्थिति में न तो तुम इस दुकान पर आ सकोगे और न ही मेरे घर पर।"

सन्तू इस पर बहुत परेशान हुआ। उसने कुछ विचार कर कहा, "लालाजी! मुझे मालूम है उस डिबिया में क्या है। यद्यपि मैं उसका मूल्य नहीं जानता तो भी इतना तो कह सकता हूँ कि वह कोई मूल्यवान् वस्तु है। तभी लाला जी उसके लिये जेल भी जाने को तैयार हैं।

"इस पर भी मैं उसे नहीं लूँगा। जो वस्तु मेरी नहीं, उसे लेकर मैं क्या करूँगा? मैं वह डिबिया लाकर अभी आपके सम्मुख ही बड़ी माँ को दे देता हूँ। तब तो आप मुझे नौकर रख लेंगे?"

"हाँ।"

इस पर सन्तू भागा-भागा गया और अपने झोंपड़े के सम्मुख वाले पेड़ के नीचे की भूमि खोदने लगा। उसके मन में बड़े लाला और ललाइन के विरुद्ध क्रोध भर रहा था। क्यों वे उसे अपनी चोरी का माल छिपा कर रखने के लिये कह रहे थे? वह मन में कह रहा था, उसने अभी तक अपना वचन पालन किया है। उसने डिबिया की बात किसी को नहीं बताई। अपने माता-पिता को भी नहीं। अब उस डिबिया के लिये उसकी नौकरी जाती है। छोटे लाला इसको पाप समझते हैं और पापी को वे अपने घर में स्थान नहीं देंगे।

इन्हीं विचारों में वह अपने झोंपड़े में से चाकू ला भूमि को खोद रहा था। इस समय रामी माँ की दृष्टि उस पर पड़ी। वह वहाँ आ कर उसको देखने लगी। सन्तू अपने काम में इतना लीन था कि उसको रामी माँ की वहाँ उपस्थिति का आभास भी नहीं हुआ। जब वह मिट्टी में से पीतल की डिबिया निकालने लगा तो रामी माँ ने पूछ लिया, "क्या है सन्तू इसमें?"

सन्तू इस प्रकार डिबिया निकालते देखे जाने पर काँप सा उठा। रामी माँ की दृष्टि में उसकी कँपकँपी छिपी नहीं रह सकी। उसको कुछ सन्देह हुआ तो वह उसका निवारण करने लगी।

सन्तू इस प्रकार पकड़े जाने पर विचार करने लगा कि उसको सब कुछ बता दे अथवा नहीं। रामी माँ को वह बहुत ही समझदार औरत मानता था। यहाँ तक कि अपने पिता से भी अधिक। इस कारण उसका निश्चय रामी माँ को सब कुछ बता देने का हो गया।

सन्तू ने डिबिया को झाड़ कर कहा, "रामी माँ! बताता हूँ। हमारी झोपड़ी में आ जाओ।"

झोंपड़ी में पहुँच कर सन्तू ने खड़े-खड़े ही उस अंगूठी की पूर्ण कहानी रामी माँ को बता दीं और अपना भविष्य का निश्चय भी बता दिया। रामी माँ ने सन्तू के हाथ से डिबिया ले कर खोली और उसमें रखे हीरे को देख कर चकाचौंध रह गई। वह बोली "बहुत बढ़िया है।"

"हाँ, बड़े लाला कह रहे थे कि इससे दो-ढाई हजार का लाभ होने वाला है।"

रामी माँ ने कुछ देर तक उस हीरे को अपने हाथ में रख तौल कर देखा। पुनः उसे डिबिया में रख बन्द कर दिया। इस समय उसके पूर्ण शरीर में कँपकँपी हुई। उसने सन्तू को कहा, "चलो मैं तुम्हारे साथ चलती हूँ।"

"क्यों रामी माँ! मैं दे कर अभी आता हूँ।"

"नहीं, तुम नहीं जानते सन्तू! इसको लेने के लिये कोई भी तुम्हारी हत्या कर सकता है।"

हत्या का नाम सुन तो सन्तू का मुख पीला पड़ गया। फिर बोला, "मैं किसी को दिखाऊँगा ही नहीं।"

"ठीक है, डाकुओं के पास अन्तर्दृष्टि होती है और वे सात डिबियों में बन्द धन की भी जानकारी रखते हैं। मैं चलती हूँ।"

रामी माँ नें मोहिनी और देवी को बुला कर सावधानी से दोनों झोंपड़ियों का ध्यान रखने के लिये कहा और स्वयं सन्तू के साथ चल पड़ी। सन्तू ने डिबिया अपनी जेब में रख ली। सन्तू दो पग आगे-आगे था और रामी माँ उसको देखती हुई, उसके पीछे-पीछे चल रही थी।

वे दुकान पर पहुँचे। वहाँ से छोटे लाला को साथ ले राधाकृष्ण के पास जा पहुँचे। वहाँ पहुँच सन्तू ने डिबिया जेब से निकाल कर ललाइन के सामने रख दी। राधाकृष्ण और ललाइन दोनों ही प्रश्नभरी दृष्टि में सन्तू का मुख देखने लगे। उनका विचार था कि वह सन्तू की माँ खड़ी है।

सन्तू ने कह दिया, "माँ! मैं यह आपकी चीज आपको वापस करने के लिये लाया हूँ।"

"क्यों, अभी रखो न ?"

"नहीं, मैं छोटे लाला की नौकरी करता हूँ और इसको अपने पास रखे हुए मैं उनकी नौकरी नहीं कर सकता।"

"क्यों रामनारायण! तुमने इसको सिखाया है क्या?"

"जी नहीं, सिखाने की बात नहीं है। मैंने इसको यह डिबिया रखने से भी मना नहीं किया। मैंने तो केवल यही कहा है कि इस वस्तु को अपने पास रखे हुए वह मेरी नौकरी नहीं कर सकता।"

"तो सन्तू!" राधाकृष्ण ने कह दिया," "तुम हमारी नौकरी कर लो?"

"जी नहीं। मैं छोटे लाला की नौकरी कर रहा हूँ। ये निकाल देंगे तो विचार करूँगा।"

"देखो, ये तुमको चार रुपया महीना ही तो देते हैं। मैं तुमको सौ रुपया महीना दूँगा।"

"जी नहीं, एक लाख रुपये पर भी, इस काम के लिये मैं आपकी नौकरी नहीं करूँगा।"

इतना कह सन्तू उठ खड़ा हुआ और कमरे से बाहर निकलने लगा तो रामकृष्ण ने कह दिया, "ठहरो।"

सन्तू ठहर गया। राधाकृष्ण ने रामी माँ की ओर देख कर कहा, "तुम इसकी माँ हो क्या?"

"नहीं।"

"तो कौन हो?"

"बताने की जरूरत नहीं।"

"क्या नाम है?"

"रामी। मैं अपने आस-पड़ोस में रामी माँ के नाम से विख्यात हूँ।"

"देखो, इसे समझाओ कि यह मेरी नौकरी कर ले। यदि नहीं करेगा तो मैं इसको कोतवाली में ले जा कर चोरी करने के अपराध में पकड़वा दूँगा।"

"इसी लिये तो मैं साथ आई हूँ। यह नहीं, इसके स्थान पर मैं पकड़ी जाऊँगी।"

इस पर तो रामनाराण से भी नहीं रहा गया। उसने कहा

"और मैं सब सत्य-सत्य बता दूँगा। दादा, ऐंसे फँसोगे कि सात वर्षों से कम की जेल नहीं होगी।"

"सन्तू ! चलो, देखता हूँ, कौन पकड़ता है तुम को ?"

राधाकृष्ण और रामनारायण की प्रकृति में जन्मजात ही अन्तर था। एक लाभ के कारण निस्संकोच प्रत्येक प्रकार के कार्य करने के लिये तत्पर रहता था और दूसरा उचितानुचित, न्यायान्याय, पाप-पुण्य इत्यादि की विवेचना में लगा रहता था।

राधाकृष्ण अपने प्रत्येक कार्य को लाभ-हानि की दृष्टि से ही देखता था। जब अभी वह बालक मात्र ही था तब भी वह इस लाभ-हानि वाली ही प्रकृति से प्रेरित हो कर कार्य किया करता था।

रामनारायण राधाकृष्ण से दो वर्ष छोटा था। वह अपनी माँ के स्वभाव पर गया था। एक दिन जब वह अभी सात-आठ वर्ष का बालक ही था, वह अपने पिता से एक आना ले कर लाहौरी गेट के एक दुकानदार से अपने स्कूल का काम करने के लिये एक कापी लेने के लिये गया था। दुकान से कापी लेकर देखने लगा कि ठीक है अथवा नहीं। जब वह देख ही रहा था, दुकानदार किसी अन्य ग्राहक को एक वस्तु दिखाने लगा। रामनारायण कापी लेकर चला आया और वह दाम देना भूल गया।

घर आ कर वह स्कूल का काम करने में लग गया। रात को खाना खाते समय उसने कुर्ते की जेब में हाथ डाला तो उसमें एक आने का सिक्का पड़ा देख, वह विचार करने लगा कि यह कहाँ से आया होगा। उसको जब स्मरण हुआ कि उसने कापी का दाम नहीं दिया और ऐसे ही देखते-देखते चला आया है, तो उसको पश्चात्ताप होने लगा। वह मन में विचार करता था कि दुकानदार उसको चोर तथा झूठा, समझने लगा होगा। कदाचित् वह कहता होगा कि उसके माता-पिता भी वैसे ही होंगे, जैसे कि लड़का है।

अपनी इस भूल के लिये रामनारायण मन में लज्जा का अनुभव कर रहा था। एकाएक उसको विचार आया कि कापी का दाम देना ही चाहिये। वह भोजन के लिये जाता-जाता रुक गया और माँ को, जो उसको बुला रही थी, कहने लगा, "माँ, मैं अभी थोड़ी देर में आता हूँ।"

"क्यों बेटा ! रोटी ठंडी हो रही है।"

"पर माँ ! एक भूल हो गई है, उसको सुधारना आवश्यक है।"

"वह मकान के नीचे उतरा तो सामने राधाकृष्ण दिखाई दे गया। उसने बड़ा भाई होने के नाते पूछ दिया, "कहाँ जा रहे हो, राम ?"

"दादा ! मैं तीसरे पहर एक दुकानदार से कापी लाया था, किन्तु दाम देना भूल गया था। अब देने के लिये जा रहा हूँ।"

राधाकृष्ण ने हँस कर कह दिया, "तुम्हें उससे कुछ लेना है अथवा उसको देना है ?"

"उसका एक आना देना है।"

"जाने की आवश्यकता नहीं, जिसको लेना होगा, वह स्वयं ही आ कर ले जावेगा।"

"पर वह तो हमारा घर जानता नहीं।"

"तो ठीक है, वह नहीं ले सकेगा। उसने दाम नहीं लिया, यह उसकी भूल है। भूल का फल उसको मिलना ही चहिये।"

रामनारायण सोचता था कि क्या उसका भाई ठीक कहता है? वह समझता था कि राधाकृष्ण का कहना ठीक नहीं है।

माँ, जो रामनारायण को खाना छोड़ जाते देख उसके पीछे-पीछे सीढ़ियों तक आ गई थी, दोनों भाइयों की बातें सुन रही थी। उसने राधा की युक्ति सुनी, मन से अस्वीकार की और बोल पड़ी, "राम ! जल्दी जाओ और कापी का मूल्य चुका कर आओ। देखो, भागते-भागते जाना और वैसे ही आना।"

राम को अपने विचारों का समर्थन प्राप्त हुआ तो वह घर से भाग कर लाहौर गेट की ओर चल पड़ा। इस समय तक उसका पिता भी दुकान बन्द करके आ गया। कपड़े उतार कर चौके में भोजन के लिये पहुँचा तो राम को वहाँ उपस्थित न देख उसने अपनी पत्नी से पूछा, "राम कहां है आज ?"

उसके प्रश्न का उत्तर राधाकृष्ण ने देते हुए बताया, "मूर्ख है, एक दुकानदार से एक आने की कॉपी लाया था दाम देना भूल गया। दुकानदार ने माँगा नहीं। यह चला आया। अब चार घंटे के पीछे याद आया है तो दाम देने चल पड़ा।"

फग्गूमल ने कह दिया "स्कूल में पढ़ने का यही तो फल है । माँ का बेटा है न ? किसी दुकानकार की शिक्षा मिली होती तो जाता नहीं । हमको तो कोई ग्राहक भूल से दाम न दे सका हो अथवा देना ही भूल गया हो तो दोबारा देने कभी आया नहीं ।"

माँ ने मुस्कराते हुए कह दिया, "दाम तो देकर ही आना चाहिये और साथ में भूल के लिये क्षमा याचना भी करनी आवश्यक है ।"

"तुम तो राम को चर्खा कातना सिखा दोगी । वह किसी दुकान पर काम धन्धा नहीं कर सकेगा ।"

इस समय रामनायण हाँफता हुआ आ पहुँचा । वह हाथ-पाँव धो चौके में आया तो राधाकृष्ण उसको हाँफता देख हँस पड़ा । पिता ने पूछ लिया, "दे आये हो ?"

"हाँ पिता जी ! वह दुकान बन्द कर रहा था और उसको पैसे न लेने का ध्यान भी नहीं था । मैंने एक आना दिया और अपनी भूल के लिये क्षमा माँगी । वह बोला, "भाई, मुझको तो स्मरण नहीं, तुम कहते हो तो ठीक है ।"

"तुम महा मूर्ख हो राम ! इतनी दूर भागते हुए गये और आये । न जाते तो एक आना बच जाता । यह भाग दौड़ न करनी पड़ती और उसको तो पता भी न चलता ।"

"परन्तु पिता जी ! जिसका था, उसको तो मिलना ही चाहिये था नं ?"

"किसका था ।"

"उस दुकानदार का ।"

"क्यों था ?"

"मैं उससे जो कापी लाया था ।"

"तो उसको दाम देना चहिये था न ? उसने नहीं लिया तो स्मरण उसको होना चहिये था ।"

"मैं जो देना भूल गया था ?"

"यह लेने वाले का काम है कि वह माँगे ।"

"क्या उल्टी बात सिखा रहे हो बेटे को ? राम ! तुमने ठीक किया है, जो जिसका है, उसको मिलना ही चहिये ।" माँ ने व्यवस्था दे दी ।

"यह बेटा दुकान कर चुका ।" बाप ने भी निर्णय सुनाया ।

"यह बाबू बनेगा, बड़ा अफसर होगा और दुनिया में नाम कमायेगा ।"

× × ×

इस पर भी रामनायण बाबू अथवा अफसर नहीं बन सका। वह इन्टर में पढ़ रहा था कि उसकी माँ का देहान्त हो गया। और माँ के देहान्त के तीन मास पश्चात् पिता का भी देहान्त हो गया । इस समय राधाकृष्ण का विवाह हो चुका था। माता-पिता के देहान्त के पश्चात् रामनारायण की पढ़ाई बन्द हो गई। रामनारायण ने कहा भी, "दादा ! मैं पढ़ूँगा ।"

"क्या लाभ होगा ?"

"पढ़ने से ज्ञान में वृद्धि होगी और फिर कोई अच्छी सी नौकरी मिल गई तो नाम होगा ।"

"देखो राम ! पिता जी ने मेरा विवाह दिल्ली के एक धनी आदमी की लड़की से किया। हमारा नाम हुआ। पिता जी ने आधा मील लम्बी बारात चढ़ाई, हमारा नाम हुआ। मुझे दहेज में सवा-सौ तोला सोना मिला, हमारा नाम हुआ । यह सब कुछ हम कर रहे हैं। इस लिये कि हमारे पास धन है। हमारा सदा बैंक में तीन-चार लाख रुपया जमा रहता है । हमारे बाईस मकान दिल्ली में हैं। उन से पन्द्रह हजार वार्षिक की आय होती है। हमारी दुकान से भी डेढ़ दो हजार मासिक आय होती है। कभी व्यापार में हाथ लग जाता है तो बीस-तीस हजार ऐसे ही मिल जाता है । इस सबसे हमारी मान-प्रतिष्ठा खूब होती है। रामलीला में हमारा चन्दा सब से अधिक रहता है। इससे हमारा मान होता है।

"भला बाबू बन कर सौ दो सौ की नौकरी पा कर क्या मान-सम्पति कमाओगे ? नहीं राम ! अब मैं तुम्हारा सरपरस्त हूँ। मेरी सम्मति में पढ़ना व्यर्थ है। इस से कुछ नहीं होगा ।"

परिणाम स्वरूप अगले दिन से ही राम नारायण का कालेज जाना बन्द हो गया। अब वह दुकान पर बैठने लगा। चार वर्ष और निकल गये । रामनारायण दुकान की खुशहाली का रहस्य जान

गया। नित्य प्रति पाँच छै सौ रुपये का काम होता था। इससे सौ-सवा सौ रुपया नकद बच जाता था। कभी कोई अधिक जरूरतमन्द आता तो लाभ की मात्रा और भी बढ़ जाती।

रामनारायण के विवाह के समय भी, भाइयों की जन्मजात प्रकृति के कारण भारी झगड़ा हो गया।

रामनारायण की सगाई के समय उसका बड़ा भाई लेन देन की बात करने लगा तो रामनारायण बीच में बोल उठा और सीधे अपने होने वाले श्वसुर से बात-चीत करने लगा। उस ने बरेली के जीवन लाल को, जो अपनी लड़की से उसका रिश्ता करना चाहता था, कहने लगा," आप को कुछ भी नहीं देना होगा। जो कुछ आप देना चाहेंगे, उस का दिखावा भी नहीं करने दूंगा।"

जीवन लाल को राम नारायण की बात से विस्मय तो हुआ ही, साथ ही उस को हर्ष भी हुआ। जीवन लाल ने राधाकृष्ण से बात-चीत छोड़ सीधी राम नारायण से बातचीत करनी आरम्भ कर दी।

जीवन लाल की लड़की लाजवंती से विवाह तो हुआ परन्तु भाइयों ने पृथक-पृथक रहना आरम्भ कर दिया। अभी दुकान साँझी थी। परन्तु रहना पृथक-पृथक हो गया। दोनों बराबर-बराबर खर्चा दुकान से निकालने लगे।

राधाकृष्ण तो दुकान से भी राम नारायण को पृथक कर दना चाहता था पर राधा कृष्ण की पत्नी चन्दो बीवी ने बात को इतना दूर जाने से रोक लिया। उसने कह दिया," दुकान का घर की बातों से क्या सम्बन्ध है? साथ ही वह राम की बहू को अपने पास रखेगी।"

× × ×

इस दिन से राधाकृष्ण और रामनारायण की विभिन्न प्रवृतियों में चंदा बीवी एक कड़ी बन गई। राम नारायण ने अपना स्थान उसी मकान में पृथक बना लिया। धीरे-धीरे वह उस में सामान एकत्रित करने लगा। मकान तीन छत का था। प्रत्येक छत पर चार-चार कमरे थे। सो राम नारायण ने तीनों छतों पर दो-दो कमरों पर अधिकार कर लिया। उन को अपने खर्च से सजाने लगा।

राधा कृष्ण की पत्नी दोनों भाइयों का भोजन बनाती थी और रामनायण इसके लिये तीस पया महीना दे देता था। इस खर्च के विषय में भी एक दिन पति-पत्नी में विवाद हुआ। राधाकृष्ण का कहना था," यह तीस रुपये तो बहुत कम हैं।"

"जी नहीं, यह उचित से अधिक ही हैं। मेरे पास हिसाब लिखा हुआ है। पिछले मास घर के रसद पानी में सत्तर रुपये दस आने खर्च हुए थे। उस हिसाब से उस से तेईस रुपये नौ आने लेने चहिये थे। परन्तु जब वह तीस रुपये दे गया तो मैं ने शेष रुपये लौटाये नहीं।"

"क्यों नहीं लौटाये तुम ने ?"

"इस लिये कि भाई-भाई में आने दो आने की गिनती करना उचित नहीं। किन्तु मैं ने उस को यह बता जरूर दिया था कि पैसे अधिक हैं इस पर वह बोला, "भाभी ! रख छोड़ो, कभी अधिक भी खर्च हो सकते हैं।"

इस पर मैंने उस से पूछा, "तो क्या हिसाब देखोगे ?"

उस ने अपना गाल आगे करते हुए कहा, "भाभी मुख पर चपत लगाओ। माँ से भी कभी हिसाब पूछा जाता है ?" इतना कह आँखों में आँसू भरे वह चला गया।

"राम तो बहुत चतुर हो गया है।" राधाकृष्ण नें मुस्कराते हुए कहा, "होटल में खाता तो सौ रुपयों से कम खर्च न होते।"

"पर यह तो होटल नहीं है। यह तो घर है। जहाँ वह सब खर्चे तो नहीं लगाये जा सकते जो होटल के खाने में सम्मिलित होते हैं।"

"क्यों नहीं लगाये जा सकते ?"

"मैं तो नहीं लूँगी ये सब खर्चे।"

रामनारायण के विवाह में राधाकृष्ण चुपचाप एक कोने में बैठा रहा। सब कार्य या तो उसकी पत्नी ने किया अथवा उस के श्वसुर एवं साले ने। देखने वालों को कुछ ऐसा लगा कि लाला बनवारी लाल के किसी निर्धन सम्बन्धी की लड़की है। इसी कारण यह सरल सा प्रबन्ध है।

विवाह हो गया। राधाकृष्ण के मन में एक असन्तोष बना ही रहा। परन्तु बहू ने अपने शील-स्वभाव से इस विषाद को कम कर दिया।

वह चन्दो बीबी को माँ और राधाकृष्ण को पिता जी कह कर पुकारती रही ।

रामनारायण के तीन बच्चे हुए । पहला लकड़ा था, उस का नाम सुरेश रखा गया । दूसरी लड़की हुई, उस का नाम पार्वती रखा गया । तीसरा फिर लड़का हुआ, इसका नाम महेश रखा गया ।

विपरीत इस के राधाकृष्ण और चन्दोबीबी के कोई सन्तान नहीं हुई । कभी-कभी राधाकृष्ण कहता, "तुमको क्या हो गया है ? ऊसर की ऊसर ही पड़ी हो ।"

"मैं क्या जानूँ, आप एक और विवाह कर लीजिये ।"

"परन्तु तुम्हें नहीं चाहिये क्या कोई बच्चा ?"

"मेरे तो तीन हैं ।"

"लाज के बच्चे तुम्हारे किस तरह हो गये ?"

"उनसे तनिक आप पूछिये तो सही कि माँ किधर है । वह मेरी ओर ही संकेत करेंगे ।

यह ठीक भी था । चन्दोबीबी लाज की माँ थी तो बच्चों की बड़ी माँ हो गयी ।

जब सन्तू उस घर में आया तो सुरेश उस समय सात वर्ष का था । पार्वती पाँच वर्ष की और महेश नौ मास का था । सुरेश और पार्वती स्कूल जाने लगे थे । महेश सन्तू की गोद में खेलता था ।

चोरी की अंगूठी वाली घटना के समय भी राधाकृष्ण और रामनारायण में जन्मजात प्रवृतियों का ही झगड़ा हुआ था ।

सन्तू जब राधाकृष्ण के सामने डिबिया रख उसके कमरे से निकला तो राधाकृष्ण और उसकी पत्नी मुख देखते रह गये । राधाकृष्ण के सम्मुख यह समस्या थी कि वह हीरे को कहाँ छिपाये और चन्दोबीबी को सन्तू के व्यवहार पर आश्चर्य हो रहा था ।

जब रामनारायण, सन्तू और रामी वहाँ से चले गये तो राधाकृष्ण ने पूछा, "अब इसका क्या करूँ ?"

"हो जायेगा, इस का भी प्रबन्ध । मुकद्मे तक के लिये कोई स्थल ढूँढ़ ही लूँगी । परन्तु मैं तो यह विचार कर रही हूँ कि यह

सन्तू कितना अच्छा है। मैं तो, यदि यह 'अपनी बिरादरी का होता तो इसे अपना लड़का बना लेती।"

"बना लेना, जब छूट जायेगा, अभी तो इसकी चिन्ता करो।" उस ने डिबिया की ओर संकेत किया।

मेरे मन में तो आता है कि कल यमुना जी में स्नान करने के लिये जाऊँ और इस डिबिया को उस में प्रवाहित कर आऊँ।"

राधाकृष्ण के माथे पर त्योरी चढ़ गई। वह बोला, "इधर लाओ मैं इस के तीन टुकड़े कर दूँगा जिस से यह पहचाना भी न जा सके।"

"और यदि टुकड़े करने वालों ने मुखबरी कर दी तो?"

यह सुन राधाकृष्ण अपनी पत्नी का मुख देखता रह गया।

उधर रामनारायण ने सन्तू को ले जा कर कहा, "देखो सन्तू! फिर कभी ऐसा काम नहीं करना। जहाँ चोरी करना पाप है, वहाँ चोरीका माल छिपाना भी पाप है। दोनों में बराबर कैद का का दण्ड होता है।"

लाजवन्ती ने कहा, "अच्छा अब तुम लल्ला को ले जाओ। देखो वह तुम्हारा मुँह देख रहा है।" रामी सन्तू के पीछे-पीछे वहाँ तक आई थी। जब सन्तू महेश को गोदी में ले घुमाने के लिये चला तो रामी माँ उसके साथ जाने लगी, परन्तु लाजवन्ती ने उसको बुला कर अपने पास बिठा लिया। रामनारायण दुकान पर चला गया।

लाजवन्ती ने पूछा, "सन्तू तुम्हारा क्या लगता है?"

"बहुत कुछ और कुछ भी नहीं। मेरा नाम रामी है, हमारा झोंपड़ा और इसका झोंपड़ा साथ-साथ है। मेरा घर वाला कपड़ा मारकिट में लाला बनवारीलाल की दुकान पर कुली का काम करता है।"

"ओह! वे तो मेरी जेठानी के पिता हैं। क्या नाम है तुम्हारे घर वाले का?"

रामी ने आँखे नीची किये ही कह दिया, 'लाल चन्द। वे दस वर्ष से उनकी दुकान पर ही गाँठें उठाने का काम कर रहे हैं। यह सन्तू मुझे बहुत प्यारा लगता है। भगवान को स्वीकार हुआ

तो......।" वह कहती-कहती रुक गई। फिर कुछ विचार कर बोली, "अभी नहीं बताऊँगी।"

लाज मुस्कराई और बोली, "अभी क्यों नहीं बताओगी ?"

"अभी अपने भगवान को रिझा नहीं सकी। दिन-रात उससे कहती रहती हूँ। ऐसा प्रतीत होता है दो-तीन वर्ष और लग जायेंगे। तब ही बता सकूँगी।"

फिर एका-एक पूछ बैठी, "जाऊँ ?"

लाज ने उसको ठहरने के लिये कहा। उसको पता था कि सन्तू की एक बहन है। वह भीतर गई और रूमाल में बहुत-सी मिठाई बाँध लाई। रामी को वह रूमाल देते हुए कहने लगी, "इसे ले जाओ। कभी इधर आओ तो मिलती रहना। मुझे तुम्हारी बातें बहुत अच्छी लगी हैं। तुम सन्तू को पसन्द करती हो। मैं भी उसे बहुत अच्छा लड़का समझती हूँ।"

"इसकी क्या आवश्यकता है ?"

"देखो रामी माँ, कुछ बात है जिससे हम दोनों ने ही सन्तू को अच्छा लड़का समझा है। यह मनों में एक ममता ही है। यह तो मैं तुमसे सम्बन्ध बनाने के लिये कह रही हूँ।

फिर बोली, "सन्तू की एक बहिन है न, इसमें से कुछ उसको दे देना और तुम्हारे कितने बच्चे हैं ?"

"सात वर्ष की एक लड़की है।"

"उसको भी खिलाना। उन दोनों को भी कभी इधर ले कर आना।"

रामी चलने के लिये उठी और लाजवन्ती को आशीर्वाद देती हुई बोली, "बिटिया चिर सौभाग्यवती बनी रहो।"

⊠ ⊠ ⊠

यमुना में बाढ़ आ रही थी। मीलों तक पानी ही पानी दिखाई देता था। अनेकों गाँव जलमग्न हो गये थे। कई स्थानों पर तो लोग रात को सोये-सोये ही जल से घिर गये थे। अब उनका निकल सकना असम्भव हो रहा था। ऐसे स्थिति में लोग अपनी-अपनी बुद्धि के अनुसार निकलने का उपाय कर रहे थे। कोई

पेड़ों से चिपटे हुए, कोई लकड़ियाँ पकड़ कर, उनको इक्ट्ठे बाँध कर, उन पर अपने बाल-बच्चों की जान को समेटे हुए, अनिश्चित भविष्य में बहे चले जा रहे थे।

यमुना के तटवर्ती क्षेत्रों में हाहाकार मचा हुआ था। जानकार लोगों का अनुमान था कि उनके जीवनकाल में इतनी बड़ी बाढ़ कभी नहीं आई थी।

इस बाढ़ का विनाशकारी प्रभाव यमुना के पूर्ववर्ती तट पर बसी भिखारियों की वीस-तीस झोंपड़ियों पर भी हुआ। बस्ती कुछ ऊँचे स्थान पर थी। उसके चारों ओर नीची जगह थी। अतः रात होने से पूर्व ही वह भी घिर गई।

भगतू और मनकी काम पर से लौटे तो घुटने-घुटनें पानी में चल कर वे अपनी झोंपड़ी तक पहुँच पाये थे। वहाँ पहुँचे तो रामी माँ अपनी नगदी और एकाध आभूषण और धोती अँगौछा एक पोटली में बाँधें अपनें घर वालें की प्रतीक्षा में खड़ी थी। अन्य पड़ोसी भी घबरायें हुए थें।

इस बस्ती में कुछ भिखारी भी रहते थें। वे तो अपनी-अपनी गुदड़ी समेट झोंपड़ी को छोड़ कर भाग चुके थे। भगतू, रामी के घरवाला लालचन्द और कुछ अन्य लोग ही थे, जो अपनी किंचित्-सी सम्पत्ति और सामान बचानें के लोभ में अनिश्चित मन से खड़ें, कभी यमुना की ओर और कभी दिल्ली नगर की ओर देख रहें थे।

रामी नें भगतू की ओर देख कहा, "भैया! जल्दी करो। आवश्यक वस्तुएँ बाँध लो। रात, यहाँ रहना उचित नहीं प्रतीत होता। पिछले एक घंटे में पानी उस आक के पौधे से यहाँ तक बढ़ गया है।"

मनकी की आँखों से आँसू बह रहे थें। भगतू ने पूछा, "रामी बहिन! देवी के पिता की भी प्रतीक्षा नहीं करोगी?"

"अँधेरा हो रहा है। मैं तो यह गठरी और देवी को लेकर नगर की ओर के किनारे पर जा रही हूँ। वह आयेगा तो उधर से ही। नगर भर के लोग तमाशा देखने के लिये आ गये हैं। उसको अभी तक पता ही न चला क्या? मैं समझती हूँ कि उसको हमारे भय की सूझ ही नहीं आई। भैया, बुद्धू तो वह है ही।"

भगतू ने अँधेरा होने की बात सोची तो अपने झोंपड़ें में घुस गया। एक कोने में उसने नगदी रखने के लिये स्थान बनाया था। उसने उस स्थान में हाथ डाल सब कुछ निकाल लिया। छः मास की पूर्ण बचत उसमें रखी हुई थी। वह सब एक सौ रुपये के लगभग था।

इस धन को निकालते हुए भगतू विचार करता था, 'जीवन में पहली बार ही तो इतना कुछ देखने के लिये मिला था। अब यह भी बालू की भाँति मुट्ठी में से निकलता प्रतीत होता है।'

मनकी अपनी धोती, चोली इत्यादि की गठरी बाँध रही थी। इस सब समय मोहिनी और देवी समीप खड़ी अज्ञात भय से त्रसित अपने बड़ों को पीत मुख सामान समेटते देख रही थी।

पाँच मिनट में जो कुछ समेटा जा सकता था, समेट लिया गया। तीन गठरियाँ बाँध ली गईं—दो बड़ी, एक छोटी। एक-एक को सिर पर रख चलने के लिए तैयार हो गये। रामी ने एक गठरी देवी के सिर पर लादी और जल में घुस नगर की ओर चल पड़े।

पिछले पाँच-दस मिनट में ही पानी तीन-चार इंच और ऊँचा हो गया था। भगतू को अपना शेष सामान पीछे छोड़ आने का भारी दुःख था। नगर की गन्दगी में तथा शिष्टाचार-विहीन पड़ोसियों में रहते हुए और जलती धूप तथा आँधी पानी में काम करते हुए वह मन में विचार करता था कि निकट भविष्य में वह धन के बल से अपनी अवस्था और वातावरण को सुधार सकेगा; परन्तु अब सब कुछ उसकी आँखों के देखते-देखते यमुना में बहता प्रतीत होता था।

गाँव में वह एक छोटे-से जमीन्दार शेरसिंह के खेत पर काम करता था। उसके घर के आँगन में ही बनी एक झोंपड़ी में वह रहता था। वहाँ तो नग्न दारिद्रय का जीवन था।

यहाँ आकर दिन-रात मनकी को पथ-च्युत करनेवालों से वास्ता पड़ता रहता था। इन भिखारियों की बस्ती में आकर तो उसको और उसकी लड़की मोहिनी को तंग करने वालों से नित्य झगड़ना पड़ता था। उसके सौभाग्य से रामी माँ उसको एक अच्छी पड़ोसिन

मिल गई थी। अन्यथा स्थिति विचित्र ही होती और मोहिनी का क्या से क्या हो गया होता--इस बात को जान भगतू और मनकी गाँव के जीवन का मूल्यांकन करने लगे थे।

रामी माँ अति साहसी महिला थी। वह अपने आस-पास रहनेवालों की गतिविधियों को भली-भाँति समझती थी। धर्म, कर्म और शिष्टता में विश्वास रखने से वह इनकी रक्षा करने के लिये तैयार हो गई थी और पिछले छः मास सरलता से निकल गये थे।

मनकी और भगतू सिर पर गठरियाँ लादे जल पार करते हुए नगर के किनारे की ओर जा रहे थे, तो वे अपने जीवन के पूर्ण हेर-फेर को स्मरण कर रो-से रहे थे। मनकी तो स्वयं को रामी माँ जैसी की सहायता पाने पर भाग्यशालिनी मान रही थी। भगतू झोंपड़े में रह गये सामान को स्मरण कर जीवन की कटुता अनुभव कर रहा था।

रामी अपने सिर पर सामान लादे हुए देवी और मोहिनी को साथ लिये प्रसन्न चली आ रही थी। वह मन में, जीवन बचा कर बाहर आ निकल सकने पर भगवान् का धन्यवाद कर रही थी।

यमुना के दिल्ली के ओर के तट पर सहस्रों लोग बाढ़ का तमाशा देखने के लिये खड़े थे। वे इन निर्धनों को भी अपने सामान के मोह में अपने झोपड़ों के समीप अनिश्चित मन से खड़े देख हँसते थे। कुछ भले लोग इनको निकल आने के लिये पुकार भी रहे थे। कोई लोग किश्ती में इनको इस ओर ले आने का भी विचार करते थे। किश्तियाँ तो अन्य स्थानों पर धनियों का सामान निकालने में लगी हुई थीं, इनकी ओर किसी का ध्यान ही नहीं गया।

जब ये चारों किनारे पर पहुँचे, तो पीछे झोपड़ियों में भारी हल्ला मचा। सायंकाल के धुँधले प्रकाश में रामी माँ की तीव्र दृष्टि ने देखा और समझ लिया कि वहाँ पर शोर कैसा मच रहा है। इनके कुटिया छोड़ इस किनारे पर पहुँचते ही इनके झोंपड़ों में अवशिष्ट सामान पर लूट मच गयी थी। वे सब, जो पीछे रह गये थे, इनके सामान को लूटते हुए परस्पर लड़ने-झगड़ने लगे थे।

इधर इनके उधर हो रही लूट-खसूट को देखते समय देवी वहाँ की खड़ी भीड़ में इनसे भटक गई। इस समय रामी माँ का

घर वाला लाल भी भागता हुआ आया और अपनी पत्नी से "कैसे आई, क्या-क्या लाई," आदि प्रश्न पूछने लगा। सन्तू भी आ पहुँचा था और वह अपने माता-पिता को अपने लाला के घर में चलने के लिये कहने लगा, तो ये रामी माँ से राम-राम करने लगे। इस समय उनको देवी का ध्यान आया। उसका कहीं पता नहीं था। इस पर मोहिनी को एक पेड़ के नीचे खड़ा कर और सब सामान उसके समीप रख सभी देवी को उस भीड़ में ढूँढ़ने लगे ? किन्तु वह नहीं मिली।

आधी रात तक उसकी खोज होती रही। जब वह नहीं मिली, तो सब लाला रामनारायण के मकान पर जा पहुँचे। नीचे की मंजिल पर एक कमरा उनके लिये खोल दिया गया था। दिन निकलने पर रामनारायण की राय से देवी के गुम हो जाने की रिपोर्ट कोतवाली में लिखवा दी गयी। भगतू और मनकी तो काम पर चले गये। लाल और रामी दिन भर देवी की खोज करते रहे।

रामी अपने मन में विचार करती थी कि वह देवी का सन्तू के साथ विवाह कर देगी। उसके बाल-बच्चों से वह अपने स्नेह की तृषा शान्त करने की कल्पना कर बैठी थी। ये सब कल्पना के दुर्ग रेत की भाँति ढह गये। इससे उसके मन को भारी चोट लगी थी। परन्तु भाग्य के विधान के सम्मुख नत-मस्तक हो चलने के अतिरिक्त अन्य कोई साधन ही नहीं रहा था।

एक सप्ताह की भाग-दौड़ और रोने-धोने के पश्चात् लाल अपने काम पर जाने लगा। रामी पुनः किसी झोंपड़े में चल कर रहने का विचार करने लगी।

उसी लाला ने, जिसने यमुना-तट पर झोपड़े बनवाये थे, पुनः वहीं पर, जल उतर जाने के पश्चात् झोपड़े बनवाने आरम्भ कर दिये थे; परन्तु इस बार रामी को वहाँ जाकर बसने की रुचि नहीं हुई। इस पर भगतू ने एक अन्य बस्ती का उल्लेख कर दिया। यह तिमारपुर के पास एक ऊँचे टीले पर थी। भगतू के साथ काम करने वाले अधिकांश मजदूर वहाँ, अपनी-अपनी कुल्लियाँ बना कर रहते थे।

एक कुल्ली बनाने में तीस से पचास तक रुपये खर्च होते थे।

भगतू उस स्थान को पसन्द कर आया था। रामी और लाल ने भी उसी स्थान पर अपनी कुल्ली बना लेना उचित समझा।

भूमि सरकारी थी। अभी निकट भविष्य में उस स्थान के समीप कोई इमारत बनने की सम्भावना नहीं थी। इस कारण वहाँ पर बनाई गई कुल्ली अधिक स्थायी प्रतीत होती थी, अतः दो कुल्लियाँ एक साथ बनने लगीं। जब तक वहाँ स्थान नहीं बन गया, ये लाला रामनारायण के मकान पर ही रहते रहे।

रविवार को भगतू और मनकी की छुट्टी होती थी। वे अपने तथा रामी माँ के लिये एक स्थान ढूँढ़ वहाँ पर कुल्ली बनाने के लिये चले गये। वहाँ रहनेवाले प्रायः भगतू के साथ काम करनेवाले मजदूर ही थे। उनमें से बहुत से भगतू के साथ लग गये और सायंकाल तक दोनों कुल्लियों की दीवारें और छतें बन कर तैयार हो गईं। अगले रविवार को दरवाजे लग गये तो, ये लोग वहाँ जाकर रहने लगे। अब पुनः यहाँ पर सुख-आराम के लिये सामान जुटाया जाने लगा।

इससे एक बात यह हो गयी थी कि लाल को अपने स्थान से पर्याप्त दूरी पर काम के लिये आना-जाना पड़ता था। सन्तू को भी रविवार के दिन उस बस्ती तक जाने में कठिनाई होने लगी थी।

× × ×

तिमारपुर वाली इस मजदूरों की बस्ती में एक कठिनाई और उपस्थित हो रही थी। बस्ती में लगभग पचास कुल्लियाँ बनी थीं। इसका अर्थ था पचास परिवार यहाँ रहते हैं। इन पचास परिवारों में बस्ती के एक कोने पर कुछ मुसलमान भी रहते थे।

आरम्भ में एक शहीदू नाम का मजदूर वहाँ आकर रहने लगा था। उसने वहाँ कुल्ली बनाई तो पहले रहनेवालों को बुरा प्रतीत हुआ। इस पर भी कोई उसको मना नहीं कर सका। भूमि सरकारी थी, कुल्ली के लिये अन्य सामग्री वह अपने पैसे से खरीद कर लाया था। वह वहाँ रहनेवालों की सहायता के बिना ही, किराये के मजदूर लाकर कुल्ली बनवा रहा था। सबसे बड़ी बात यह थी कि वह बस्ती के अन्य सभी रहने वालों के साथ बड़ी सहानुभूति और प्रेम का व्यवहार रखता था।

इस बस्ती में एक सहतू नाम का व्यक्ति था। वह अपनी पत्नी और तीन लड़कों के साथ एक ही कुल्ली में रहता था। घर के चार प्राणी कमाते थे और लड़कों की माँ उनके खाने-पीने तथा कुल्ली की देखभाल का प्रबन्ध करती थी। इससे पूर्ण बस्ती में ये कुछ अधिक पैसे वाले हो गये थे। दो-चार रुपया कोई समय-कुसमय उधार माँगता तो ये दे देते। इससे वह बस्ती में चौधरी सहतू के नाम से विख्यात हो गया था।

सहतू ने जब शहीदू को कुल्ली बनवाते देखा तो, आकर पूछने लगा, "कहाँ काम करते हो भैया?"

"राजपुर रोड पर ठेकेदार शादीराम का जहाँ काम लगता है, वहाँ चला जाता हूँ। पहले मजदूर का काम करने पर नौकर हुआ था। पश्चात् राजगीर का काम करने लगा, अब मेठ बन गया हूँ।"

"क्या नाम है?"

"मुझे शहीदू कहते हैं।"

"कोई बाल-बच्चा भी है?"

"हाँ, खुदा का फज़ल है। बीवी है, दो लड़कियाँ तथा एक लड़का है। आजकल लाला ने तिमारपुर में सरकारी क्वार्टर बनाने का ठेका लिया हुआ है। मेरी देख-रेख में दस क्वार्टर बन रहे हैं। लालाजी का कहना है कि तीन-चार वर्ष तक यहाँ काम चलेगा। इस कारण यहाँ रहने के लिये यह बनवाने लगा हूँ।"

इसमें सहतू को कुछ आपत्तिजनक प्रतीत नहीं हुआ। एक परिवारवाले के आने पर वह क्या आपत्ति कर सकता था? बस्ती के अन्य रहनेवालों ने भी एक अहिन्दू को वहाँ आकर रहते देख कुछ चिन्ता अनुभव की थी; परन्तु चौधरी के कहने पर कि वह बाल-बच्चेदार गरीब आदमी है, उसका धर्म-ईमान उसके साथ है और हमारा हमारे साथ, बात शान्त हो गयी।

परन्तु शहीदू को आये अभी तीन मास ही हुए थे कि सहतू का लड़का रामचन्द से रहीम हो गया। शहीदू की बड़ी लड़की वहीदन से उसका निकाह पढ़ दिया गया।

बात इस प्रकार हुई कि एक रात सहतू एक बजे पेशाब करने के

लिये उठा और उसने बीड़ी पीने के लिये माचिस जलाई, तो तीन लड़कों में से एक के सोने का स्थान खाली देखा। पहले तो सहतू ने देखा कि कहीं पेशाब करने के लिये गया होगा। परन्तु जब देर तक प्रतीक्षा करने के पश्चात् भी वह नहीं आया, तो उसने दीपक जला दिया और अपनी पत्नी तथा अन्य लड़कों को उठा कर रामचन्द के लापता होने की बात बता दी।

उसने पूछा, "किसन ! रामचन्द्र किधर गया है ?"

"बापू ! सो जाओ, वह अभी आ जायेगा।"

"कहाँ गया है ?"

किसन बताना नहीं चाहता था; परन्तु पिता के बार-बार पूछने पर वह बक गया। उसने बताया, "यह साथ की झोपड़ी में शहीदू की लड़की वहीदन है न, उसके साथ उस की आशनाई हो गई है।"

"कब से ?"

"एक महीने से ऊपर हो गया है। कभी-कभी वह रात के बारह बजे अपनी कुल्ली से निकल आती है और हमारी कुल्ली के बाहर आकर खड़ाक करती है। इस पर रामचन्द उठ कर बाहर चला जाता है। वह एक घंटे में लौटा करता है, आज देर हो गयी होगी।"

"तुम ने पहले क्यों नहीं बताया ?"

"मेरा भी तो चित्त किसी में लगा हुआ है।"

"किसमें लगा हुआ है, रे ?"

"वह शीतलू मेठ है न, उसकी लड़की से।"

"तो तुम भी रात को उठ कर उससे मिलने के लिये जाया करते हो ?"

"नहीं बापू ! वैसे नहीं। मैं तो उसके साथ शादी करूँगा।"

यह सब सुन सहतू तो भौंचक्का-सा रह गया। उसे चुप देख उसकी पत्नी ने पूछ लिया "अब क्या करोगे ?"

"यह रामचन्द वाली बात तो भयंकर प्रतीत होती है। न जाने कितना झगड़ा बढ़ जाय !"

लछमी ने कहा, "झगड़ा क्यों होगा। रामचन्द का किसी हिन्दू लड़की से विवाह कर दो और उसके लिये एक अलग कुल्ली बनवा दो। यह हो जाय तो फिर किसन का भी विवाह हो जायेगा।"

"तुम इसको सरल बात समझती हो। मेरे लिये यह बहुत कठिन प्रतीत हो रही है। जिसको इस प्रकार चोरी-चोरी माल खाने की लटक लग जाती है, उसको फिर सब संसार फीका लगने लगता है। यदि उसको मना किया तो झगड़ा होगा। शहीदू को पता चल गया, तो कत्ल हो जाने में भी शक नहीं।"

"तो फिर क्या करोगे?"

"कुछ समझ में नहीं आ रहा है।"

इस समय रामचन्द कुल्ली में आ गया। उसके आते ही बाप ने पूछा, "कहाँ गये थे राम?"

रामचन्द आज कुलिया में बत्ती जली देख और सब को जागा हुआ पा, विस्मय में मुख देखता रह गया। उसने कहा, "बाबा! अब सो जाओ। सुबह बताऊँगा।"

"अभी क्यों नहीं?"

"व्यर्थ में हो-हल्ला होगा।"

"नहीं राम! मुझको नींद नहीं आयेगी। वास्तव में किसन ने कुछ तो बताया है। क्या वह सब ठीक है?"

रामचन्द ने किसनू का मुख देखा। वह आँखें नीची किये बैठा था। इस पर रामचन्द ने किसनू से पूछ लिया, "क्या बताया किसनू?"

"सब कुछ बता दिया है और अपने मन की बात भी बता दी है।"

इस पर सहतू ने कह दिया, "राम! यह तो अधर्म हो गया है।"

"हाँ बापू! पर क्या करूँ? बस नहीं चलता। जब से यह वहीदन यहाँ आई है वह सदा मेरी ओर देख कर मुस्कराया करती थी। एक दिन वह मुझे कुएँ पर अकेले में मिली, तो कहने लगी कि उसे मुझसे मुहब्बत हो गयी है। मैंने कहा, 'लगती तो मुझको भी अच्छी हो।' इस पर वह कहने लगी रात को मैं आकर तुम्हारी

कुल्ली के बाहर हल्की आवाज में गीदड़ की बोली करूँगी, तुम उसे सुनकर बाहर आ जाना। फिर सारी बात बताऊँगी।'

"उस रात वह आई तो मैं बाहर चला गया। वह मुझे उस पीपल के पेड़ के नीचे ले गयी। वहाँ उसने मुझसे प्यार किया और मैं अपने को रोक नहीं सका। शहीदू हफ्ते में दो दिन शराब पीता है और अपनी पत्नी के साथ सोता है। तब वहीदन उठ कर यहाँ चली आती है। तब हम उसी पीपल के नीचे घण्टा भर बैठ कर चले आते हैं।

"बापू! अब तो मुझसे भी उसके बिना रहा नहीं जाता। वहीदन ने सारी बात अपनी माँ से बता दी है और वह हमको विवाह के लिये कह रही है। उसका विचार है कि एक कुल्ली उनकी कुलिया के समीप में बनवा लूँ, तब हम दोनों का विवाह हो जायेगा।"

"परन्तु रामचन्द! वह तो मुसलमानिन है, उसके साथ विवाह किस प्रकार करोगे?"

"बाबा! यह तो उसके विचार करने की बात है। लड़की उसकी है और उसे हमारे घर में आना है।"

"परन्तु तुम तो मुसलमान हो जाओगे?"

इस कथन से विस्मय में रामचन्द अपने बाप का मुख देखता रह गया। फिर कुछ विचार कर वह कहने लगा, "मैं कैसे मुसलमान हो जाऊँगा?"

"तुम मुसलमान की लड़की के साथ रहोगे। फिर तुम्हारे बाल-बच्चे होंगे, वे सभी तो मुसलमान ही हो जायेंगे।"

"नहीं होंगे बाबा! वे मुसलमान नहीं होंगे।"

यह बात सहतू की समझ में नहीं आयी। इस पर भी वह चुपचाप बैठा नहीं रह सका। उसने कह दिया, "राम! तुम इस लड़की को छोड़ दो। मैं तुम्हारा विवाह शीघ्र ही एक हिन्दू लड़की से कर दूँगा।"

"नहीं बापू! विवाह तो इसी से होगा। मैं इसको छोड़ नहीं सकता।"

"अगर मैं न मानूँ तो ?"

"मुझे तुम्हारा घर तो छोड़ना ही है। चाहे तो विवाह इससे हो अथवा किसी अन्य से।"

सहतू के मस्तिष्क में घर छोड़ने की बात नहीं थी। वह तो धर्म छोड़ने की बात पर विचार कर रहा था। इस पर उसकी पत्नी लछमी ने कह दिया, "मुसलमान तो तुम पहले ही हो गये हो। मुसलमान लड़की से मिले हो। उसको प्यार किया है। मुसलमान तो हो ही गये हो।"

सहतू चाहता था कि यह बात अभी न कही जाय। उसको अपने पुत्र से बिछुड़ते हुए दुःख हो रहा था। उसने कह दिया, "यह कैसे हुआ ? लोग रंडियों के पास जाते हैं तो क्या वे मुसलमान हो जाते हैं ?"

इसका उत्तर लछमी के पास नहीं था। वह मौन रही। इस पर रामचन्द ने आश्वासन देते हुए कहा, "बापू ! मैं मुसलमान नहीं बनूँगा।"

× ⊠ ⊠

एक दिन चुपचाप रामचन्द का वहीदन से निकाह पढ़ दिया गया। दोनों का विवाह शहीदू की कुल्ली में हुआ। लिखा-पढ़ी हुई और दोनों मियाँ-बीवी नई कुल्ली में जा कर रहने लगे।

सहतू ने बात छिपा कर रखी थी। उसने बस्ती में किसी को कानों-कान पता भी नहीं चलने दिया। लिखा-पढ़ी तो मुल्ला ने की थी और उसने क्या लिखा, क्या नहीं, किसी को विदित नहीं हुआ। चुपचाप रामचन्द का नाम रहीम लिख दिया गया।

अगले दिन बस्ती वालों को पता चल गया कि सहतू के लड़के का निकाह शहीदू की लड़की वहीदन से पढ़ा गया है; इसके साथ ही यह बात विख्यात हो गई कि रामचन्द मुसलमान हो गया है। सब यही कहते थे। सहतू इसका उत्तर देना नहीं चाहता था। साथ ही रामचन्द और उसकी बीवी दोनों उसकी कुल्ली में आते रहते थे। इससे बस्तीवालों की समझ में यह आया कि वह भी मुसलमान हो गया है—उसके साथ ही उसका सारा परिवार भी।

इसका सबसे पहला परिणाम यह हुआ कि सहतू जब किसनू के विवाह के लिये सीतलू मेठ से कहने गया, तो उसने स्पष्ट शब्दों में कह दिया—"मैं अपनी लड़की का मुसलमान लड़के से विवाह नहीं कर सकता।"

घर आ सहतू ने अपने लड़के किसनू को बताया कि उसका विवाह यहाँ बस्ती में तो नहीं हो सकता। इस पर किसनू को बहुत दुःख हुआ। उसने बताया, "बापू! मैं तो सीतलू की लौंडिया से ही विवाह करना चाहता था। परन्तु अब इस अवस्था में तो मेरा विवाह किसी हिन्दू लड़की से हो ही नहीं सकता। इधर शहीदू मुझसे कह रहा है कि मैं उसकी छोटी लड़की से विवाह कर लूँ। मैंने उससे कहा भी था कि वह तो अभी बहुत ही छोटी है। इस पर उसने बताया कि वह पूरे तेरह वर्ष की हो गयी है।"

अब सहतू इस विवाह का उतना भी विरोध नहीं कर सका, जितना रामचन्द के विवाह के समय किया था। परिणाम यह हुआ कि शहीदू की दूसरी लड़की का भी विवाह एक हिन्दू लड़के से हो गया। किसनू का नाम करीम रख दिया गया। इस प्रकार इस बस्ती में तीन मुसलमानों की कुल्लियाँ बन गयीं।

शहीदू को उस स्थान पर आये अभी छः मास ही हुए थे। कुछ समय और बीता तो शहीदू का लड़का रहमान कहीं बाहर से एक लड़की विवाह लाया और एक और मुसलमान परिवार वहाँ बस्ती में बस गया।

जब भगतू और लाल ने वहाँ अपनी कुल्लियाँ बनवाईं और वे आकर रहने लगे, तो उस समय तक वहाँ पाँच मुसलमानों के परिवार रहने लग गये थे। ये थे—शहीदू, रहमान, रहीम, करीम और पाँचवा सहतू, जो बिना मुसलमानी नाम के ही मुसलमान समझ लिया गया था।

भगतू और लाल ने अपनी कुल्लियाँ उस ओर बनाने का निश्चय किया जिस ओर सहतू की कुल्लियाँ थीं। जब कुल्लियाँ बनने लगीं तो भगतू के साथ काम करनेवाले एक मजदूर ने उसको बताया, "तुम इस ओर अपनी कुल्ली न बना कर मेरी कुल्ली के पास बनाओ।"

"परन्तु तुम्हारा स्थान तो नीचा है। सब कुल्लियों का पानी बह कर उस ओर जाता है।"

"किन्तु जिस ओर तुम बनवाने लगे हो, मियाँ लोग रहते हैं।"

"तो वे क्या कहते हैं ?"

इस पर भगतू के साथी ने सहतू और उसके लड़कों की कहानियाँ सुना दीं। भगतू को इससे चिन्ता अवश्य लगी थी। परन्तु अब तक कुल्लियों पर चालीस के लगभग रुपये व्यय हो चुके थे। उस दिन भगतू कुल्लियों के स्थान पर पहुँचा तो रामी माँ और मनकी कुल्लियों पर पड़ रही छतों को देख रही थीं। मोहिनी उनके पास खड़ी किसी गम्भीर विचार में निमग्न थी।

भगतू ने रामी माँ से अपने साथी की कही घटना सुना दी। रामी माँ, जब से देवी लापता हुई थी, जीवन में रस खो बैठी थी। वह सहतू की पत्नी से मिली थी। वह बेचारी धर्म-कर्म में लीन भगवान् में चित्त लगानेवाली स्त्री थी। न तो रामी ने उससे उस की जीवन-कथा के विषय में पूछा था, और न ही लछमी ने अपने लड़कों और उनकी पत्नियों के विषय में बताया था।

अब भगतू की बात सुन तो वह चिन्तित मन खड़ी रह गयी। इस समय तक कुल्लियों में काम करनेवालों ने अपना काम समाप्त कर दिया था। उन्होंने बताया, "अब मिट्टी इत्यादि भूमि पर डाल, पोताई करनी रह गयी है। कहो तो कल आ जायें ?"

"नहीं, तुम अपनी मजदूरी लो और शेष काम हम स्वयं कर लेंगे।"

इस प्रकार मजदूरों को उनकी मजदूरी दे कर विदा कर दिया गया। रामी ने कुल्लियों के द्वार बन्द कर उन पर ताला लगा दिया। अभी उनका सामान यहाँ नहीं आया था। तीनों किनारी बाजार की ओर, जहाँ वे आजकल रह रहे थे, चल पड़े। यह विचार था कि अगले दिन रामी माँ और मनकी अपना-अपना सामान गठरियों में बाँध यहाँ ले आयेंगी और भगतू अकेला काम पर जायेगा। लाल तो दुकान पर नौकर था। उसे छुट्टी नहीं मिल सकती थी।

मार्ग में रामी भगतू के कथन पर विचार करती रही। मनकी तो कोई लम्बा-चौड़ा विचार कर नहीं सकती थी। वह चुपचाप अपने पति और रामी माँ की बातें सुन रही थी। रामी माँ ने

दूसरी बार सहतू और उसके लड़कों की कथा सुन, अपना विचार बता दिया। उसने कहा, "भगतू भैया! मुझे तो कोई खराबी नहीं प्रतीत हुई। सहतू के लड़कों की बात तो मुझे विदित नहीं। उनकी बीवियाँ आई थीं। हमारा नाम और तुम लोगों का काम पूछ कर चली गईं। उनको देख कर तो मैं जान नहीं सकी कि वे हिन्दू हैं अथवा मुसलमान। हाँ सहतू की पत्नी बहुत कुछ बताती रही है। वह तो बात-बात पर भगवान् की इच्छा, अपने भाग्य और धर्म-कर्म की बात बताती है। वह तो मुझे सोलहों आने हिन्दू प्रतीत हुई है।

"मैं समझती हूँ कि हमको अपना घर रखना चाहिये। चोर तो संसार भर में घूमते रहते हैं। देखो न, दो मिनट की भूल से मैं कहाँ की कहाँ पहुँच गई हूँ। कहाँ मैं देवी के विवाह, उसके बाल-बच्चों से अपने परिवार की वृद्धि के स्वप्न देख रही थी और अब कहाँ वृद्धावस्था तक ऐसे ही एकाकी जीवन व्यतीत करने की सम्भावना पर विचार कर रही हूँ। अब तो तुम्हारे सन्तू को देख-देख कर ही मन में कुछ धैर्य होता है। परन्तु मनकी! बच्चों का जब विवाह हो जाये, उसकी बहू घर में आ जाय, तब ही अपने भविष्य के विषय में अनुमान लगा सकती हूँ। उससे पूर्व तो सब कुछ स्वप्नमात्र ही है।"

भगतू अपनी लड़की मोहिनी के भविष्य की बात पर विचार कर रहा था। मोहिनी अब बारह वर्ष की होने जा रही थी। एकाध वर्ष में वह विवाहने योग्य हो जायेगी। तब से पूर्व ही वह उसका हाथ किसी को पकड़ा देना चाहता था। इससे रामी के कहने में उसको कुछ भी अरुचिकर प्रतीत नहीं हुआ था।

अगले दिन अपने निश्चित कार्यक्रम के अनुसार मनकी, रामी माँ, मोहिनी और सन्तू सामान उठा कर अपनी नयी कुल्लियों में आ गये। सोमवार का दिन था, भगतू काम पर गया हुआ था। सन्तू अपनी ललाइन से आधे दिन की छुट्टी ले आया था। लाल सदा की भाँति दुकान पर चला गया था।

शहीदू छुट्टी पर था और उसका लड़का भी। अतः वे अपनी-अपनी कुल्लियों के बाहर आ खड़े हो, इन नवागन्तुकों को देखने लगे।

सहतू और उसकी पत्नी लछमी भी, बाहर निकल कर आ गये। लछमी रामी के पास आ कर पूछने लगी, "तो तुम लोग आ गये हो?"

"हाँ, मर्द लोग तो काम पर गये हैं, उनके आने तक हम यहाँ पर ठीक-ठाक कर लेंगी। कुल्लियों में अभी कुछ काम बाकी है। वह शाम तक पूर्ण हो जायेगा।"

"मैं तुम्हारी सहायता कर दूँगी। तुम सामान रखो और अभी थोड़ी देर में भूमि कूट कर पोताई हो जाती है।"

"तुम्हें कष्ट करने की आवश्यकता नहीं बहिन! देखते-देखते हम सब ठीक कर लेंगे।"

इस पर भी लछमी उनकी सहायता करती रही। सहतू के लड़के भी काम पर गये हुए थे। उनकी बीवियाँ अपनी-अपनी कुल्लियों के बाहर खड़ी हो तमाशा देख रही थीं।

अगले दिन जब सबके घरवाले अपने-अपने काम पर चले गये तो शहीदू की बीवी और उसकी दोनों लड़कियाँ तथा बहू रामी के पास आ कर बैठ गईं। रामी अपने स्वभावानुसार अपनी कुल्ली के बाहर भूमि साफ कर, उस पर बैठी मोहिनी को रोटी बनाने के लिये कह रही थी कि पहले सहतू की पत्नी आयी। पश्चात अन्य स्त्रियाँ वहाँ आकर बैठ गईं।

रामी ने लछमी से पूछ लिया, "खाना खा लिया है बहिन?"

"नहीं, अभी नहीं। बना तो घरवालों के काम पर जाने से पहले ही लेती हूँ। वह कुछ खा जाता है और कुछ साथ में ले जाता है। मैं पीछे नहा-धोकर पूजा करती हूँ, अब पूजा से छुट्टी पायी है तो पूछने के लिये आई हूँ कि रामी माँ ने खाया है अथवा नहीं।"

"मेरा ढंग दूसरा है। वे तो दोपहर का खाना वहीं लालाजी के यहाँ खाते हैं। प्रातः का कलेवा रात ही बना कर रख देती हूँ। सवेरे वह कर लिया है और अब स्नान और जपादि करके निवृत्त हुई हूँ और मोहिनी खाना बनाने लगी है। बन जायेगा तो खा लेंगे।"

इस पर शहीदू की पत्नी सईदन ने पूछ लिया, "यह मोहिनी तुम्हारी बेटी है या इन दूसरी कुल्ली वालों की?"

"नहीं, यह मेरी नहीं, हमारे पड़ोसी भगतू भैया और मनकी

बहिन की बेटी है। हम इससे पहले भी साथ-साथ ही रहते थे। इसलिये दोनों में प्रेम हो गया है। मुझे यह अपनी लड़की की भाँति ही प्यारी लगती है।"

इस समय रहीम और करीम की बीवियाँ भी वहाँ आ गयीं। वे दोनों खाना खाकर आयी थीं। उनका तरीका था कि रात को ही हंड़िया चढ़ जाती थी। रात भर खाना पकता रहता था, प्रातः उठ नित्यकर्म से निवृत्त हो वे खाने बैठ जाते थे। उनके घर वाले खाना खाकर अपने-अपने काम पर चले जाते थे और औरतें खाकर बर्तनों को एक ओर धकेल देती थीं। फिर बैठी बातें बनाया करती थीं। वहीदन और रहमान की बीवी शबनम तो जब भी बैठ जाती थीं, अपने घर वालों की अच्छी-बुरी बातें बताया करती थीं। करीम की बीवी नसीम को उनकी बातें नहीं भाती थीं। कभी उसकी बहिन वहीदन उससे पूछने का इसरार भी करती, तो वह वह आँखें नीची कर चुप रह जाती। इससे दो बड़ी लड़कियाँ भाँति-भाँति की आशंकाएँ किया करती थीं। नसीम इन से कतराती रहती थी।

आज एक नई पड़ोसिन की बातें सुनने वहीदन और शबनम आईं तो नसीम भी आ बैठी। सईदन कह रही थी, "मोहिनी तो अब विवाहने लायक हो गयी है।"

"अभी तो यह बच्ची ही है, अभी कपड़े आने भी शुरू नहीं हुए।"

"छाती तो उभर रही है।"

"हाँ, कई लड़कियों के यह पहले निकल आती हैं। यह तो अभी ग्यारह ही वर्ष की है।"

"हमारी इस नसीम की उमर साढ़े ग्यारह वर्ष की थी, जब इसकी शादी हो गयी थी। इसके भी कपड़े अब आने लगे हैं।"

"तो तुमने इसकी इतनी जल्दी शादी क्यों कर दी ?"

"बात यह है कि वहीदन का देवर करीम जवान हो गया था। उसके विवाह की चर्चा चली तो कोई हिन्दू उसको अपनी लड़की देना नहीं चाहता था। वे समझने लगे थे कि यह मुसलमान हो चुका हैं। नसीम के बाप ने समझा कि लड़का कहीं खराब न हो जाय इसलिये अपनी लड़की देनी कबूल कर ली।"

इस समय वहीदन ने अपनी शंका का वर्णन कर दिया। उसने कहा, "माँ, मुझको तो ऐसा लगता है कि यह अभी तक अपने खाविन्द से मिली भी नहीं है।"

"कैसे मालूम होता है?" माँ ने पूछा।

नसीम की आँखें झुक गईं। उसके गालों पर लाली छा गई। वहीदन ने बताया, "हमने इससे कई बार पूछा है कि करीम भैया रात को क्या करते हैं, क्या कहते हैं और इसको कैसा महसूस होता है? इस बारे में यह एक लफ्ज भी तो नहीं कहती। चुप कर जाती है और हम बहुत कहते हैं तो यह रो देती है।"

रामी नसीम के मुख पर देख रही थी। वह उसकी आँखों में हया और गालों की लाली में पति के सुख की झलक समझ रही थी। उसने इस विषय की बात को बदल दिया।

रामी ने बताया, "वहीदन बिटिया की बात गलत मालूम देती है। देखो बहिन सईदन! मोहिनी का विवाह अभी दो वर्ष के बाद करेंगे। यों तो विवाह के समय मेरी आयु सात वर्ष की थी। मेरे माता-पिता मेरे विवाह से पहले ही फौत हो चुके थे। इस वजह से विवाह होते ही मैं ससुराल चली गई। मेरी सास मुझे अपने साथ सुलाती थी और मेरा घरवाला भँवरे की भाँति मेरे चारों ओर मँडराता रहता था। वह उस वक्त चौदह वर्ष का हो चुका था।

"मेरी सास मेरे विवाह से तीन वर्ष पीछे परलोक सिधार गई। तब मैं अपने घरवाले के पल्ले पड़ी। हमारी पहली मुलाकात बहुत ही कष्टकारक हुई थी। अब भी मैं उस दिन की बात स्मरण कर रो पड़ती हूँ। पीछे आहिस्ता-आहिस्ता जिन्दगी में मिठास आती गयी। अब हमारे विवाह को बीस वर्ष हो गय हैं। अपने घरवाले के खिलाफ कुछ भी शिकायत नहीं है।"

× × ×

रामी माँ भगतू के इस कथन पर कि सहतू के लड़के तो मुसलमान हो गये हैं, साथ ही बस्ती के सब लोग सहतू और उसकी पत्नी को भी मुसलमान समझते हैं, विचार करती रहती थी। उसको कई दिन लछमी, सहतू और उनके अविवाहित पुत्र मंगल के रहन-

सहन और उनके विचारों को जानने में लगे । उसका यह दृढ़ मत था कि ये तो मुसलमान नहीं हो सकते । इसके पश्चात् वह सहतू के लड़कों और उनकी पत्नियों की बातों को समझने लगी । उसको वहीदन तो एक कामातुर युवती ही प्रतीत हुई थी । नसीम उससे भिन्न स्वभाव रखती थी ।

जब से रामी ने उसके सामने अपने विवाहित जीवन के आरम्भ की बात बताई थी, नसीम रामी माँ को अपनी माँ और बहिनों से अधिक अपने समीप समझने लगी थी । अब वह उसके पास आ कर बैठ जाती और उसके साथ इधर-उधर की बातें कर जी बहलाया करती थी । एक दिन, जब रामी और वे अकेली बैठी थीं, तो नसीम ने अपनी बड़ी बहिन की बात बता दी । उसने बताया, "वहीदन हममें सबसे बड़ी है, रहमान उससे छोटा है । एक मेरा और भाई रहमान और मेरे बीच में था, वह फौत हो चुका है ।

"पिछले वर्ष वह बीस वर्ष की हो गई है और उसका विवाह नहीं हो रहा था। हमने इस जगह कुल्ली बनाई तो उसकी नजर जीजाजी पर पड़ी । दोनों में विवाह से पहले ही मेल-जोल हो गया था । वहीदन रात को मेरे साथ सोया करती थी । जब मैं सो जाया करती तो वह मेरे पास से उठ कुल्ली से बाहर निकल जाया करती थी ।

"एक दिन वह लौट कर आयी तो मेरी नींद खुल गयी । उसको बिस्तर में घुसते देख मैंने पूछा, "जीजी ! कहाँ गयी थी ?"

"वह बोली, "कहीं नहीं, सो जाओ ।"

"गयी तो थी । मैं एक घण्टे से तुम्हें टोह रही थी ।"

"इस पर उसने कस कर मुझे छाती से लगाते हुए मेरा मुख चूम लिया । पश्चात् उसने बताया, "मैं अपने लिये खाविन्द ढूँढने के लिये गयी थी ।"

"कहाँ ?"

"यह लछमी के लड़के को । बहुत अच्छा है वह !"

"अब्बा को पता चला तो वे पीटेंगे ।"

"उनको पता है, बहुत जल्दी मेरी शादी हो जायेगी ।"

"पर शादी से पहले तुम उससे मिलती क्यों हो ?"

"वह हिन्दू है न ! अब्बाजान कहते थे पहले उससे मुहब्बत करो, फिर वह भी मुसलमान हो जायेगा।"

इस पर रामी ने पूछा, "तो वह मुसलमान हो गया है क्या ?"

"अब्बाजान और मुल्ला ने तो उसका नाम रहीम रख दिया है।"

"नाम वदल जाने से ही क्या वह मुसलमान हो गया है ?"

"अब्बाजान कहते हैं और यहाँ बस्ती के बाकी सब लोग भी यही कहते हैं। लछमी भी यही, समझती है और अब तो उसके हाथ का उसके माँ-बाप भी नहीं खाते।"

"क्या कहते हैं वे ?"

"वे कहते हैं कि वह पतित हो गया है। पहिले आबदस्त लेने के बाद मिट्टी से हाथ धोता था, अब नहीं धोता।"

"तो अब हाथ साफ नहीं करता वह ?"

"करता है, मगर मिट्टी से नहीं पानी से सिरफ।"

"तुम्हारा घरवाला कैसे साफ करता है ?"

"वह तो साबुन ले आया है। वह आबदस्त के पीछे साबुन से हाथ सफा कर लेता है। वह रोज कुएँ पर जा कर नहाता है, मुझे पानी भर कर दे जाता है और नहाने तथा साबुन लगाने पर इस-रार करता है।"

"और तुम यह सब करती हो ?"

"हाँ, रामी माँ ! जब वे कहते हैं तो मैं करती हूँ। इस तरह साफ-सुथरे रहने में लुत्फ भी आता है।"

"तुम नमाज़ पढ़ती हो क्या ?"

"नहीं। अब्बाजान ने सिखाई थी, हम तीनों भाई-बहिनों को। मगर एक दिन एक मुल्ला ने पढ़ते सुना तो उसने कह दिया, 'यह बिलकुल गलत है।' तब से हमने नमाज पढ़नी छोड़ दी है। मुझे तो अब नमाज पढ़ने की जरूरत भी महसूस नहीं होती।"

रामी माँ उसकी कुल्ली में गई और उसको वहीदन की कुल्ली से अधिक साफ-सुथरा पा बोली, "नसीम ! तुम बहुत अच्छी हो।"

इससे नसीम की आँखों की चमक बढ़ गयी। उसके मुख पर

मुस्कराहट दौड़ गयी। नसीम की कुलिया में दो पृथक्-पृथक् बिस्तर रखे थे। वे इस समय लपेटे हुए थे और इन पर चादर पड़ी हुई थी।

"तो तुम पृथक्-पृथक् सोते हो?"

नसीम मुस्कुराई और चुप कर रही। रामी को कुछ ऐसा समझ आया कि नसीम अपनी बहिन से कुछ अधिक समझदार है और चरित्र की बात समझती है। वह यही विचार कर रही थी कि एक ही माँ-बाप की दो बेटियाँ हैं। एक सर्वथा पशु है और दूसरी बहुत सीमा तक इन्सान। रामी ने उसके मन की बात स्पष्ट जानने के लिये मुस्कुराते हुए पूछ लिया, "तो वहीदन ठीक कहती है कि..."।

"रामी माँ! यह बात नहीं। वहीदन की तो वहशियाना तबीयत है। वह दिन-रात अपने खाविन्द के साथ लेटी रहती है। हमको यह पसन्द नहीं। मेरे अब्बाजान भी कुछ वैसी ही तबीयत के हैं। वह शराब पीते हैं और शराब पी कर तो अपने लड़कों और लड़कियों से भी शर्म-हया नहीं करते। पहले तो मैं समझती नहीं थी कि वे क्या कहते और करते हैं। कुछ-कुछ बात तो वहीदन के बताने पर समझ में आने लगी थी, शेष अब आने लगी है।

"मेरा घरवाला कहता था कि उसने अपनी माँ और बाप को कभी इकट्ठे सोये नहीं देखा। इस पर भी वे मिलते तो होंगे ही। मैं समझती हूँ कि उनमें अपनी तबीयत पर कमाल का काबू है। हमने भी अपने में वैसी बात पैदा करने का फैसला किया है।"

इस पर रामी माँ बोली, "मुझे तो तुम एक बहुत ही अच्छी हिन्दू लड़की जैसी ही लगी हो।"

"मेरे घर वाले भी यही कहते हैं, परन्तु यहाँ के सब लोग तो हमें मुसलमान ही समझते हैं।"

"वे सब मूर्ख हैं।"

"तो क्या तुम मेरे हाथ का बना खा सकती हो?"

"हाँ, पर मैं मोटा मांस नहीं खाती। न ही उसे खाने वालों के साथ बैठ कर खा सकती हूँ।"

"अब्बाजान कहते थे कि अब तो बड़े-बड़े हिन्दू भी यह खाने लगे हैं।"

"हाँ, सुना तो मैंने भी है। देखो, पहले हिन्दुओं में एक मत जैन नाम का होता था। वे मांस खाना तो पृथक्, इसे दूर से देख भी नहीं सकते थे। सुना है, अब नवयुवक जैनी मांस, मछली, अण्डा, मुर्गी खाने लगे हैं। इस प्रकार विलायत हो आये हिन्दू तो गो-मांस भी खा जाते हैं। परन्तु मैं तो मांस ही नहीं खाती।

"फिर मैं तो अपने मन के भाव बता रही हूँ। न तो मैं मांस-मछली इत्यादि अथवा गोमांस खाने वालों को अहिन्दू समझती हूँ, न ही किसी के कहने से किसी को हिन्दू-अहिन्दू मानती हूँ।

"मेरे विचार में तो हिन्दू होने के लिये शुचि धर्म तथा इन्द्रियों का दमन धर्म, आवश्यक है।"

"ये क्या होते हैं?" नसीम ने पूछा।

"जो तुम कर रही हो। शौच याने पाक-साफ रहना, बोलना और सोचना एक बात है। अपनी ख्वाहिशात पर काबू पाना, अपने बोलों और कामों पर काबू रखना दूसरी बात है। ऐसा करने वाले को हिन्दू कहते हैं।"

"कोई मुसलमान भी तो ऐसा हो सकता है?"

"मैं उसे हिन्दू ही समझती हूँ।"

"परन्तु अन्य तो कोई उनको ऐसा नहीं मानता।"

"ऐसे ही जैसे मूर्ख लोग तुमको हिन्दू नहीं मानते और तुम्हारे श्वसुर को जो सब तरह से हिन्दू है, लोग मुसलमान मानते हैं।"

"तो नाम रखने से कोई हिन्दू और मुसलमान होता है?"

"नहीं, यह बात भी गलत है।"

"अब्बाजान एक दिन रहमान से कह रहे थे कि जो पाँच बार नमाज पढ़ता है, वह मुसलमान है।"

"तब तो तुम्हारे अब्बाजान भी मुसलमान नहीं हुए। न रहमान, न तुम मुसलमान हो। पर मैं इस बात को भी मुसलमान और हिन्दू में फरकवाली नहीं मानती।"

"तो तुम अब्बाजान को क्या मानती हो?"

"मैं उसको हिन्दू नहीं मानती। मैं रहमान और रहीम को भी हिन्दू नहीं मानती, परन्तु तुम को हिन्दू मानती हूँ।"

"एक दिन जीजा जी ने जीजी से कहा कि वह हिन्दू हो जाय।

यहाँ एक आर्यसमाज बनी है, जो मुसलमानों को हिन्दू बनाती है। जीजी ने अब्बाजान से पूछ लिया। इस पर अब्बाजान आर्यसमाजियों को गालियाँ देने लगे। जीजी ने जीजा से कह दिया कि वह आर्यसमाज में नहीं जायेगी।"

रामी माँ मुस्कुराई और बोली, "हाँ, एक आर्यसमाजी से मेरी बात भी हुई थी। मैं सोचती हूँ की हिन्दू तो अपनी करनी से बनता है। वहाँ तो सिर्फ मान्यता होती है। देखो, मेरे घरवाले एक लाला बनवारी लाल की नौकरी करते हैं। वे लाला स्कूल कालेज में कहीं भी नहीं पढ़े। मगर पढ़े-लिखों के कान कतर लेते हैं। उनका लड़का कानून की परीक्षा पास है और बहुत-सी बातें लड़के से ज्यादा बाप जानता है। दरअसल बात यह है कि उसने हकीकत में पढ़ा है।

"इसी तरह तुम हिन्दू हो। हाँ, स्कूल कालेज में इम्तिहान पास करने की तरह तुमको हिन्दू होने का सर्टिफिकेट नहीं मिला।

"कोई स्कूल-कालेज ऐसे भी हो सकते हैं, जहाँ रियायती सर्टिफिकेट मिल जाते हैं। यही बात आर्यसमाज की हो सकती है। यदि तुम्हारी जीजी और जीजा आर्यसमाज में जा कर हिन्दू हो जाते तो आर्यसमाज उस स्कूल-कालेज की भाँति होती जो रियायती सर्टिफिकेट देता है।

"पहले कर्म से हिन्दू हो तो पीछे सर्टिफिकेट मिलना ठीक हो सकता है।

"लाला बनवारी लाल की भाँति बिना पढ़े-लिखे भी, कानून की बात जानने वाले लोगों के समान ही तुम हिन्दू हो। बनवारी लाल बहुत समझदार और पढ़ा लिखा तो है, परन्तु वह कहीं नौकरी नहीं पा सकेगा। उसके पास सर्टिफिकेट नहीं है। इस प्रकार तुम हिन्दू तो हो, परन्तु तुम दूसरों द्वारा हिन्दू नहीं मानी जाओगी। जब तक किसी से तुमको हिन्दू होने का सर्टिफिकेट न मिल जाय।

"परन्तु रहीम और रहमान को हिन्दू बनाना तो रियायती सर्टिफिकेट देने के समान हो जाता। यदि आर्यसमाज उनको हिन्दू होने का सर्टिफिकेट दे देती तो वह रियायती पास करने वाले स्कूल-कालेज की तरह खुद बदनाम हो जाती।

नसीम को रामी की सब बातें विचित्र प्रतीत हुईं। अभी भी उसके मन में बात स्पष्ट नहीं हुई थी। दोनों कुल्ली से बाहर आ गईं। लक्ष्मी रामी की कुल्ली के बाहर बैठी थी। वह इन दोनों को कुल्ली से बाहर निकलते देख विस्मय करने लगी। जब वे दोनों उसके समीप आ गयीं तो लक्ष्मी ने पूछ लिया, "क्यों, क्या हो रहा था वहाँ ?"

इसका उत्तर नसीम ने दिया, "रामी माँ कह रही हैं कि मैं तो हिन्दू हूँ।"

लक्ष्मी यह हिन्दू-मुसलमान के झमेले को समझ नहीं सकती थी। बस्ती के सब लोग तो उसको भी मुसलमान कहते थे। और यह रामी नसीम को भी हिन्दू कहने लगी थी। वह प्रश्न भरी दृष्टि से रामी का मुख देखने लगी। रामी ने कुछ कहने के स्थान पर लक्ष्मी से पूछ लिया, "लक्ष्मी तुम हिन्दू हो अथवा नहीं ?"

"मैं तो हिन्दू हूँ। मैं अपने भगवान को साक्षी रख कर कह सकती हूँ कि मैं अपने 'जप सत' पर कायम हूँ। परन्तु रामी ! ये सब लोग जब मुझको मुसलमान कहते हैं तो मेरे अपने मन में सन्देह उत्पन्न होने लगता है कि ये ठीक कहते हैं या मैं ठीक समझती हूँ।"

"दूसरे तुमको मूर्ख समझें तो तुम भी स्वयं को मूर्ख समझने लगोगी क्या ?

"देखो लक्ष्मी ! यह धर्म-कर्म की बातें तो अपने मन और आत्मा से सम्बन्ध रखती हैं। तुम बहुत अच्छी हो। परमात्मा का नित्य नाम लेती हो। मन-बचन-कर्म से सत्य विचारती, कहती और करती हो। तुम शरीर, मन और आत्मा में सफाई रखती हो, तुम हिन्दू हो। कोई माने न माने, इस पर भी तुम हिन्दू हो।

"ऐसे ही मैं नसीम को भी हिन्दू समझती हूँ।"

"तो तुम इसके हाथ का खा लोगी ?"

"हाँ।"

लक्ष्मी भी अपने मन में कुछ ऐसा ही मानती थी। परन्तु लोक-निन्दा से डरती थी। उसने अपने मन की बात कह दी--"मुझे तो लोगों के कहने का डर लगा रहता है।"

"क्यों डर लगता है तुम्हें ?"

"अभी मेरा एक और लड़का है। उसका भी विवाह होना है। कहीं ऐसा न हो कि उसके लिये भी किसी मुसलमान की ही लड़की का सहारा लेना पड़ जाय।"

रामी हँस पड़ी। उसने कह दिया, "तो तुम अपने एक पुत्र के लिये दूसरे पुत्र को मुसलमान बना रही हो।"

लक्ष्मी को यह बात, जो अत्यन्त कटु थी, सत्य प्रतीत हुई। इस पर उसने कह दिया, "पर नसीम अपने को हिन्दू कह देगी क्या ?"

"हाँ, यदि यह समझ गई कि यह हिन्दू है और हिन्दू होना बहुत अच्छी बात है तो हो जायेगी।"

"कैसे हो जायेगी ? इसे फिर अपना हिन्दुआना नाम रख लेना चाहिये।"

"मैं तो नाम को कुछ बड़ी बात नहीं मानती। हाँ यदि तुमको नाम रखने से यह हिन्दू समझ आ सकती है तो इसको हिन्दुआना नाम रखने के लिए कह दो।"

नसीम ने इस पर पूछ लिया, "मैं कैसे रख लूँ ?"

"जैसे रामचन्द का तेरे अब्बाजान ने मुसलमानी नाम रख लिया है।"

"वह तो मुल्ला ने रखा है।"

"मुल्ला परमात्मा का उतना ही बड़ा दूत है, जितनी मैं हूँ। अथवा जितनी तुम हो। देखो मैं नसीम का नाम नानकी रखती हूँ।" इस पर तो नसीम खिलखिला कर हँस पड़ी।

हँसती-हँसती वह एकदम चुप कर गई। उसने लक्ष्मी से पूछ लिया, "तो माँ जी ! नानकी ठीक है अथवा नसीम।"

"तुम हँसी क्यों हो ?" लक्ष्मी ने चिन्ता की मुद्रा में पूछा।

"मैं हँसी इसलिए थी कि नाम मात्र के बदल देने से मुसलमान से हिन्दू होना विचित्र सा लग रहा है। मगर मुझको अपने नसीम नाम की बात भी अजीब समझ में आई है। इससे हँसी बन्द हो गई। मेरे बाप ने नाम नसीम रखा। वह नगीना भी रख सकता था। इस प्रकार सोचने पर मैं यह समझी हूँ कि नाम एक बहुत मामूली

सी बात है। पैदा होने पर नाम रखा ही जाता है। जो नाम बाप को पसन्द आया, वह उस वक्त रख दिया गया। अब मैं आपकी बहू, जो आपको पसन्द हो आप रख दो।"

लक्ष्मी अभी भी अनिश्चित मन थी। रामी ने कह दिया, "लक्ष्मी बहन! नानकी बहुत अच्छा नाम है। गुरु नानक महाराज की प्यारी हो जायेगी।"

लक्ष्मी ने कह दिया, "रामी! तुम्हारी बातें विचित्र हैं। इस पर भी भली लगती हैं।"

"तो नसीम! आज से तुम्हारा नाम नानकी हो गया, ठीक है?"

"न नसीम मुझसे पूछ कर रखा गया था न नानकी रखने के लिये मुझसे पूछने की जरूरत है। मुझे दूसरों के अच्छा-बुरा कहने की भी चिन्ता नहीं। मेरा घरवाला, उसकी माँ और रामी माँ मुझको जिस प्रकार भी अच्छा समझें, मैं तो उसी से खुश हूँ।"

इस समय वहीदन और शबनम वहाँ आ गईं। बात बदल गई। वहीदन ने कहा, "रामी माँ! तुम मोहिनी को रेशम में लपेट कर रखती हो। उसको भी यहाँ बुला लिया करो।"

"वह सिलाई का काम सीख रही है। मैंने उसको कुर्ता काट कर दिया है और वह आज सुबह से उसे सी रही है।"

"मशीन से सी रही है।"

"नहीं, हाथ से सीने का ढंग मैंने उसको सिखाया है और लड़की समझदार प्रतीत होती है। तुरन्त समझ जाती है और जैसा कहो, कर लेती है।"

"तो मुझको भी कुछ सिखा दो न?"

"तुम को अपने घर वाले से कुछ फुरसत मिले, तब न? रात तुम उसकी सेवा करती हो, तो दिन दोपहर तक सोया करती हो।"

वहीदन को हँसी निकल गई। उसने कहा, "जवानी चार दिन की है जितनी लूटी जाय, क्यों न लूट लें।"

'ठीक है' कुर्ता सीना जवानी लूटने में नहीं आता न? वहीदन! यह जिन्दगी जवानी लूटने से कुछ ज्यादा भी है?"

"इस पर तो बाद मे भी विचार किया जा सकता है।"

"तब कुर्ता सीना आजायेगा ।"

इस पर सब हँसने लगीं ।

रात को नसीम ने अपने घर वाले को बताया, "रामी माँ ने मेरा नाम बदल दिया है ।"

"क्या रखा है ?"

"नानकी ।"

"नानकी ? यह तो हिन्दुआना नाम है ?"

"हाँ, वह आज हमारी कुल्ली देखने के लिये आईं थीं । यहाँ की सफाई वगैरा देख बोलीं कि मैं तो हिन्दू हूँ । मैंने कहा, 'कोई मानता नहीं ।' इस पर वे बोलीं कि कोई हिन्दू अथवा मुसलमान किसी दूसरे के कहने से नहीं होता । यह तो अपने अमलों से होता है । उसका कहना था कि मेरे अमल तो हिन्दुओं के से हैं । इस पर आप की अम्मी ने पूछ लिया कि मैं कैसे हिन्दू हो सकती हूँ तो उन्होंने, कह दिया, मेरा नाम हिन्दुआना रखने से । बस फिर क्या था । मेरा नाम नानकी रख दिया ।"

"पर कौन मानेगा ?"

"अभी तो रामी माँ और आपकी माँ ने माना है । अब आप मान जाइये । जब आप मान जायेंगे तो फिर अन्य किसी की मुझे परवाह नहीं ।"

"अपने बाप की भी नहीं ?"

"बाप ने तो मुझे आप के हवाले कर दिया है ।"

"अच्छा जरा रामी माँ को बुलाओ तो सही । मैं भी पूछ करके देखूँ ?"

"उसके घर वाला सोया है । मुझे वहाँ जाते शर्म आती है ।"

"तो मैं ही खुद चला जाता हूँ ।"

किसन रामी माँ की कुल्ली के पास जा आवाज देने लगा तो वह बाहर आ गई । किसन ने पूछा, "रामी माँ ! यह नसीम क्या कह रही है ?"

रामी माँ हँस पड़ी । उसने कहा, "अपनी माँ से पूछ लो । वह तुम को अपना बेटा मानना छोड़ बैठी थी । मैंने समझाया है ।

वह मान गई है । अब तुम वही लछमी के बेटे किसन हो जो पहले थे ।"

"पर रामी माँ ! यह कैसे हुआ है ?"

"बाबा ! उससे पूछो । मेरे लिये तो तुम वैसे ही हो जैसे थे । हाँ, तुम्हारी पत्नी कुछ और ही निकली है । मैं उसे ऐसा नहीं समझती थी ।"

इस समय नसीम भी उनके पास आ कर खड़ी हो गई थी । उस दिन चाँदनी रात थी । पूर्णिमा का चाँद निकल आकाश में ऊपर आ चुका था और चारों ओर स्वच्छ प्रकाश फैला हुआ था । रामी को एक बात सूझी । वह सहतू की कुल्ली के बाहर जा कर खड़ी हो गई और धीरे से आवाज दे कर भीतर चली गई । सहतू और उसका छोटा लड़का मंगल बैठे हुए भोजन कर रहे थे । लक्ष्मी भोजन करा रही थी । रामी ने खड़ी-खड़ी कह दिया, "नानकी को भेज दूँ ?"

लछमी ने अपने घर वाले की ओर देखा । सहतू के हाथ में ग्रास पकड़ा ही रह गया । वह अवाक् रामी का मुख देख रहा था । रामी ने कहा, "देखो सहतू भैया, तुमने ऐसी कौन सी बात देखी है, जो तुम उस बच्ची से डरते हो ?"

"रामी बहिन !" सहतू ने ग्रास मुख में डालने के स्थान थाली में रखते हुए कहा, "तुम्हारे से पहले लछमी यही बात कर रही थी । मैं उससे नहीं डरता । मैं तो बस्ती के अन्य लोगों से डरता हूँ । एक बात और है, नसीम का बाप बहुत हल्ला करेगा ।"

"वह क्यों हल्ला करेगा ?"

"वह नसीम को हमारे खिलाफ कर देगा ।"

"नसीम खिलाफ हो जायेगी तो हो जाय । तुम तो उसके खिलाफ नहीं होगे । रहे बस्ती के लोग, वे तो पहले ही खिलाफ हैं ।"

लछमी ने आवाज़ दे दी, "किसन । भीतर आ जाओ बेटा ।"

किसन भीतर आया तो लछमी ने कहा, "बहू को भी ले आओ ।"

नसीम और किसन एक ओर कोने में बैठ गये । सहतू ने कुछ विचार कर खाना आरम्भ कर दिया । मंगल खा रहा था । बात

रामी ने कही, "लछमी बहिन ! 'मन के हारे हार है और मन के जीते जीत' तुम अपने मन को दृढ़ करो।"

लछमी ने बहू को कहा, "खाना खाओगी बहू ?"

"हम खा कर आये हैं, माँ जी !"

लछमी बोली, "कल से हमारा खाना साथ ही बनेगा। पर मेरा मन अभी राम को घर में लाने के लिये नहीं करता।"

नसीम समझती थी, लछमी उसके खान-पान और अमलों को देख कर ही कह रही है। रामी ने कह दिया, "समय पर इस बात पर भी विचार कर लिया जावेगा। नानकी के विषय में तो किसी तरह का शक नहीं है न ?"

राधाकृष्ण मुकदमे में बरी हो गया। मुकदमे में नौ मास का समय तो लगा ही, साथ ही पाँच हजार रुपया भी व्यय हो गया। इस मुकदमें के कारण रामनारायण और राधाकृष्ण में बँटवारा हो गया। दोनों भाइयों में द्वेषाग्नि भड़क उठी। दुकानें दो हो गईं और उनमें प्रतिस्पर्द्धा चलने लगी।

इस पर चन्दो बीबी और लाजवन्ती के सम्बन्ध बने ही रहे। रामनारायण के मन में भी अपनी भाभी के लिये आदर और स्नेह बना ही रहा। इससे तो राधाकृष्ण क्रोध से लाल-पीला होने लग गया।

दोनों भाई एक ही घर में रहते थे, सीढ़ियाँ दोनों की एक ही थीं। सीढ़ियों की सफाई सन्तू करता था, शेष कमरे अपने-अपने, दोनों गृहिणियाँ करती थीं।

राधाकृष्ण ने घर पर कोई नौकर नहीं रखा था। दुकान का नौकर ही दोपहर का खाना ले आता था। उसको घर पर नौकर की आवश्यकता भी अनुभव नहीं होती थी। घर में कोई बच्चा नहीं था। राधाकृष्ण ने कई बार यत्न किया कि सन्तू उनकी नौकरी कर ले, परन्तु वह नहीं माना। वह कह देता, "बड़ी माँजी जी काम बतायेंगी, मैं कर दूँगा, मैं तो दोनों का ही नौकर हूँ।"

"पर तुम वेतन तो राम से लेते हो ?"

"मेरे लिये आप में और उनमें कोई अन्तर नहीं है। इस विषय में आप छोटे लाला जी से स्वयं ही बात कर लीजिये।"

सन्तू को अपने पास रखने में नौकर की आवश्यकता कारण नहीं थी, वह तो केवल रामनारायण को तंग करना मात्र ही था। चन्दो को जब पता चला कि उसका घर वाला सन्तू को फुसला कर राम को नौकरी छोड़ने के लिये कह रहा है तो उसने पूछ लिया, "आप को क्या करना है, नौकर रख कर ?"

"मैं सन्तू को दुकान का काम सिखा कर उसे अपना सहायक बनाना चाहता हूँ।"

"परन्तु वह तो आपके काम से घृणा करता है। दुकान पर चल रही ठगी-चोरी को तो वह कभी भी पसन्द नहीं करेगा।"

"अभी तो वह बालक ही है। उसको हानि-लाभ का ज्ञान नहीं। जब उसको इस बात का ज्ञान हुआ और उसको मैंने दुकान में आना-दो आना रुपये का भागीदार बनाने का लोभ दिया, तो वह मान जायेगा।"

"वह मानेगा अथवा नहीं, इस समय कहना कठिन है। परन्तु इससे आप दोहरे पाप के भागी बन जायेंगे। चोरी ठगी तो आप-करते ही हैं, साथ ही एक निष्कपट मनवाले बालक को भी चोर बना देंगे।"

राधाकृष्ण को अपनी पत्नी के कटु वाक्य पसन्द तो नहीं आते थे, परन्तु एक तो वह बड़े बाप की बेटी थी। दूसरे चन्दो के पिता ने मुकदमे में उसकी बड़ी सहायता की थी, इस कारण वह अपने को चोर-ठग कहा जाना चुप-चाप सुन लेता था।

उसने केवल यह कह दिया, "मैं सन्तू को आदमी बना देना चाहता हूँ तुम उसकी उन्नति में बाधक बन रही हो।"

"मैं उसको आप की नौकरी करने से रोक तो नहीं रही। मैं तो आपको रोक रही हूँ कि पहले स्वयं ऐसा बन जाइये, जिससे बाहर के लोग आप को भला आदमी समझने लगें। पश्चात् बीसियों सन्तू आप के कार्य में सहायक बनने लगेंगे।"

"मैंने तो बहुत सोच-विचार किया है। आज संसार में इसी

प्रकार से कार्य चल रहा है। बिना बेईमानी के धन एकत्रित ही नहीं होता।"

चन्दो बीबी अपने पति को समझा नहीं सकी। वास्तव में वह जब भी उससे धर्म, पुण्य और सत्य इत्यादि की बातें करती, वह उसको उसके पिता बनवारी लाल की कहानियाँ सुनाने लगता। "लाला जी ने अमुक ठेके में इतना घटिया माल लगाया और उसमें अनायास ही उनको बीस हजार का लाभ हो गया। केवल दो हजार रिश्वत के अफसरों को देने पड़े थे।"

एक और घटना का वर्णन करते हुए राधाकृष्ण ने कहा, "रामकृष्ण बनवारी लाल एक फर्म के कपड़े का एक वैगन आया था। उसमें मारकीन का एक हजार थान था।

"आज कल मारकीन का दाम पाँच रुपये थान के हिसाव से वढ़ा हुआ है। तुम्हारे पिता इन्डैमनिटी बाँड भर कर माल छुड़ा लाये और देखते-देखते पाँच हजार रुपये का लाभ कर लिया। इसमें से पाँच सौ रुपया रेल के बाबुओं को देना पड़ा।

"पीछे जब झगड़ा हुआ तो तुम्हारे पिता ने कह दिया, यह सब भूल से हुआ है। मैं माल का दाम और उस पर मिलने वाला कमीशन देने के लिये तैयार हूँ। जज से सिफारिश लग गई। उसको आधी दर्जन विस्की की बोतलें देनी पड़ीं। फैसला इनके पक्ष में हो गया। इस प्रकार चार हजार के लगभग इनका अतिरिक्त लाभ हो गया।"

इस प्रकार की बातें सुन चन्दो बीबी चुप कर जाती और राधाकृष्ण अपने काम को चालू रखता।

एक वर्ष में ही राधाकृष्ण की दुकान चोरों का अड्डा बन गया। अब राधाकृष्ण ने पुलिस से भी साँठ-गाँठ कर ली। उनका कमीशन नियत हो गया। जब भी कोई चोरी का माल इसके हाथ में आता, यह थानेदार से मिल कुछ ले-दे कर बात को ठप्प करा देता। इस प्रकार दिन दूनी-रात चौगुनी उन्नति हो रही थी।

रामनारायण का कार्य साधारण था। इस पर भी दिन भर में चालीस-पचास रुपये की आय हो जाती थी। उससे खर्च मजे में चल जाता था और खर्च करने के पश्चात् बचत भी हो जाती थी। सबसे बड़ी वात यह थी कि रामनारायण एण्ड सन्स की दुकान ईमानदारी और सचाई के लिए विख्यात हो रही थी। रामनारायण

ने अब नये भूषण बनाने और बेचने का काम भी आरम्भ कर दिया था। इससे व्यवसाय में उत्तरोत्तर उन्नति हो रही थी। इस पर भी राधाकृष्ण की आय तक वह नहीं पहुँच पाता था। राधाकृष्ण को तो मास में एकाध सौदे पर ही पाँच-दस हजार का लाभ हो जाता था।

इस पर भी रामनारायण जीवन से सन्तुष्ट था। सन्तू का वेतन दस रुपये मासिक हो गया था। न तो सन्तू इस पर असन्तोष कर रहा था और न ही रामनारायण सन्तू जैसे समझदार और सत्यपरायण लड़के के लिये इतना पर्याप्त समझता था। वह अब रात के समय सन्तू को हिन्दी और अंग्रेजी पढ़ाने लगा था।

सन्तू अपने माता-पिता से मिलने के लिये जाया करता था और वहाँ पर हो रहे संघर्ष से पूर्णतया परिचित था। रामी माँ के नसीम के विषय में विचार सुन तो सन्तू को भी आश्चर्य हुआ था।

× × ×

एक रविवार के दिन सन्तू अपने माता पिता से मिल कर आया तो छोटी ललाइन को वहाँ की बात बताने लगा। उसने सन्तू के लड़के रामचन्द के शहीदू की लड़की वहीदन से विवाह और बस्ती के हिन्दुओं से उसके बहिष्कार, इस बहिष्कार से विवश हो किसनू की दूसरी लड़की नसीम से विवाह की बात बताई। पश्चात् बस्ती के सब लोगों द्वारा सहतू और उसके परिवार के मुसलमान हो जाने की व्यवस्था बताई। तत्पश्चात् रामी माँ का नसीम को नानकी बना सहतू के परिवार में सम्मिलित कर लेने की बात बता दी।

लाजवन्ती और रामनारायण इस कथा को सुन अवाक् बैठे रह गये। रामनारायण ने कह दिया, "नसीम तो हिन्दू नहीं हो सकती हाँ, सहतू अब पक्का मुसलमान हो गया है। क्यों सन्तू, नसीम का बाप क्या कहता है?"

"वह भी यही कहता है, जो आप कह रहे हैं। उसने रामी माँ को कह दिया है कि इससे तो सहतू पक्का मुसलमान हो गया है। साथ ही रामी माँ और लालचन्द भी मुसलमान हो गये हैं। वह उनको नाम बदलने के लिये कह रहा है।"

"और रामी माँ क्या कहती है?"

वह कहती थी, 'डूमों के कहने से गौऐं नहीं मरा करतीं।' वह नाम नहीं बदलेगी। इस पर भी सहतू ने उसका नाम तो रसूलन रख दिया और उसके घर वाले का लतीफ हुसेन और सहतू का सरवर रख दिया। अब शहीदू और उसका लड़का रहमान तो इनको इन नामों से ही पुकारते हैं और नसीम, सहतू और रामी परस्पर अपने पुराने और नये नामों से बुलाते हैं। रामी माँ का कहना है—नाम बदलने से भी भला हिन्दू अथवा मुसलमान बनाया जा सकता है।" इस पर भी बस्ती वालों ने इनके साथ बोलचाल बन्द कर दी है।"

रामनारायण ने चिन्ता में सिर हिलाते हुए कहा, "बेचारी रामी भी गई।"

"कहाँ गई?" लाजवन्ती ने विस्मय प्रकट करते हुए पूछा।

"मुसलमान हो गई और कहाँ जायेगी!"

"एक बात तो वह ठीक कहती है कि नाम से धर्म कैसे बदल गया। नाम का तो कर्मों से सम्बन्ध है।"

"धीरे-धीरे कर्म सब गौण हो जावेंगे, नाम ही मुख्य रह जावेगा।"

"अच्छा सन्तू! तुम कल फिर जाना और रामी माँ को कहना कि मैं मिलना चाहती हूँ।"

रामनारायण ने पूछा, "तुम क्यों इस झगड़े में पड़ना चाहती हो?"

"मैं उसको वहाँ रहने की अपेक्षा किसी अन्य स्थान पर रहने के लिये कहना चाहती हूँ। वह एक भली औरत है, और भले लोगों की सहायता तो करनी ही चाहिये।"

अगले दिन सन्तू गया और रामी को ला बुलाया। रामी मोहनी को साथ लेकर आ गई। देवी के लापता हो जाने के पश्चात् वह मोहिनी से और भी अधिक स्नेह करने लगी थी। रामी लाजवन्ती से तब ही मिली थी जब वे बाढ़ के कारण उनके घर के नीचे वाले कमरे में आकर रहे थे। उस घटना को आज एक वर्ष से अधिक हो चुका था। मोहिनी अब सज्ञान होने लगी थी।

लाजवन्ती ने रामी को बिठाया और उससे देवी के विषय में पूछताछ की।

रामी बोली, "मैं तो समझती हूँ कि किसी ने उसके हाथ में गठरी देख यह समझ लिया होगा कि कोई कीमती वस्तु है। वह उसको भीड़ से बाहर ले गया होगा और गठरी को अपने कब्जे में कर उसे यमुना में ढकेल दिया होगा।"

"मेरा विचार इसके विपरीत यह है कि वह गठरी की अपेक्षा लड़की को अपने साथ ले गया होगा और गठरी को बहा गया होगा। वह उसको पाल-पोस कर उससे पेशा करवायेगा।"

इस सम्भावना से तो रामी काँप उठी। परन्तु वह इस सम्भावना से अपनी लड़की को बचाने के साधनों से विहीन थी। इस कारण चुप रही। अब लाजवन्ती ने नसीम की बात आरम्भ कर दी। रामी ने तो उस घटना का और भी विस्तार से वर्णन कर दिया और अन्त में कहा, "ललाइन! मेरा तो केवल इतना ही कहना है कि हिन्दू कर्मों के कारण श्रेष्ठ है न कि नामों के कारण। एक मुल्ला ने किसी का नाम करीम और किसी का रहीम रख दिया और इतने मात्र से ही वे मुसलमान हो गये, यह बात मेरी इस छोटी-सी बुद्धि में नहीं समाती।"

"तो तुम जन्म से हिन्दू होना नहीं मानती?"

"मानती हूँ, परन्तु कौन जाने किसका जन्म किससे है। मैंने तो सुना है कि बीज पेट में पड़ते समय देवता आशीर्वाद दे जाते हैं और बालक वैसा ही हो जाता है।

"नानकी के विषय में तो ऐसा ही लगता है। उसका बाप शराबी, व्यसनी और निर्लज्ज है, परन्तु लड़की इससे भिन्न प्रकृति और व्यवहार वाली है। मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है कि वह किसी देवता के बीज से उत्पन्न हुई है।"

लाज हँस पड़ी। उसने कहा, "परन्तु वहाँ के दूसरे हिन्दू ही तुम्हारा विरोध कर रहे हैं?"

"उनके विरोध करने से क्या होगा? किसनू को लड़की देने से उन्होंने इन्कार कर दिया तो उसको नसीम मिल गई। अब वे लोग मंगल के विषय में कह रहे हैं कि यह मुसलमान है। उसका विवाह मैं मोहिनी से करने का विचार कर रही हूँ।"

"भगतू मान जावेगा क्या?"

"पहले तो वह नहीं मानता था, किन्तु उसको बहुत कुछ बताना पड़ा है। साथ ही मैं मोहिनी को समझा-बुझा कर तैयार कर रही हूँ। उसको मूर्ख लोगों की बातों की अवहेलना करने का स्वभाव डाल रही हूं।"

"मैं तो तुमसे यह कहना चाहती थी कि तुम और सन्तू के माता-पिता वहाँ से किसी अन्य स्थान पर चले जाओ। वहाँ झगड़ा होने की संभावना प्रतीत होती है।

"है तो, परन्तु ललाइन! मैं तो अब सहतू के परिवार के साथ बहुत ही घनिष्ट सम्बन्ध बना बैठी हूँ। यह अपनी बिटिया उनके मंगल से विवाहने का वचन दे चुकी हूं। इससे उनके परिवार के उद्धार का यत्न कर रही हूँ।"

"क्या उद्धार कर रही हो ? किसनू और उसकी बहू नानकी को भी साथ लेती आओ।"

"और राम को वहीं छोड़ दूं ?"

"तुम ही तो कहती हो न कि वह म्लेच्छों का सा व्यवहार रखता है?"

"हाँ, परन्तु वह अपनी बीवी के मोह में फँसा हुआ ऐसा कर रहा है।"

"तो उसको अपनी बीवी से पृथक् कर दोगी ?"

"यह सम्भव नहीं प्रतीत होता। बहीदन जबरदस्त है। उसने ही उसको अपने जाल में फँसा कर पथ-भ्रष्ट किया था और अब भी वहीं उसको उँगलियों पर नचा रही है। मैं तो उससे भी हिन्दू-धर्म-कर्म तथा आचार-व्यवहार का पालन कराने का विचार करती हूँ। साथ ही बस्ती के दूसरे हिन्दुओं को भी अपने पक्ष में करने का यत्न कर रही हूँ।"

"रामी माँ! बड़ा भारी झगड़ा मोल ले रही हो। मुझे तो इस सबमें किसी प्रकार की भी अच्छाई दृष्टिगोचर नहीं हो रही।"

रामी चुप रही। लाजवन्ती ने उसका तथा मोहिनी का खूब अतिथि सत्कार किया और रामी के जाने से पूर्व उसको पुनः कहा, "मेरा कहा मानो। तुम भगतू और तुम्हारी इच्छा हो तो नानकी

इत्यादि को लेकर वहाँ से चली आओ। यदि किसी बात में सहायता चाहो तो हम कर देंगे।"

रामी अपनी कठिनाई तो समझती थी। इस पर भी वह वहाँ से भाग आने का विचार नहीं रखती थी। उसका यह स्वभाव बन गया था कि वह अपनी बात पर अड़ जाया करती थी। वहाँ से भाग आने में उसने अपनी पराजय समझी। अतः मन में न आने का निश्चय कर भी उसने कह दिया, "ललाइन! हम निर्धन लोग तो आप जैसे धनवानों के ही आश्रय पलते हैं। इस कारण समय-समय पर आपसे मिल कर जिस वस्तु की आवश्यकता होगी कह दिया करूँगी।"

रामी मन में विचार करती हुई जा रही थी कि क्या करे? रह-रहकर उसके मन में यह विचार आता था कि अपने मन में आई बात को कर ही देना चाहिए। वह समझती थी कि वह कोई अपराध तो कर नहीं रही है। यदि निरपराध मारी जाती है तो उसको इसलिए चिन्ता क्यों करनी चाहिए? उसकी बेटी बिचारी न जाने कहाँ कहाँ कष्ट भोग रही होगी।

इस प्रकार वह विचार करती हुई लम्बे लम्बे डग भरती हुई अपनी बस्ती की ओर जा रही थी कि पीछे से शहीदू आता हुआ मिल गया। उसने उसको कहा, "रहीमन माँ! किधर से आ रही हो?"

"मोहिनी के भाई की मालकिन के पास गई थी। मैं कभी-कभी उनसे मिलने के लिए जाया करती हूँ।"

"देखो रहीमन! यह मोहिनी नाम से मेरे मन में वहम पैदा हो जाता है कि तुम किसकी बात कर रही हो। हम तो उसको मुमताज कह कर बुलाते हैं।"

"ठीक है, इसके दो नाम हैं, मोहिनी भी और ममताज भी।"

"पर मोहिनी नाम छोड़ क्यों नहीं देती?"

"इसके माता पिता को मोहिनी पसन्द है। मैं इसमें क्या कर सकती हूँ। मुझे भी मोहिनी कहने में कोई दिक्कत नहीं होती।"

"तुम्हारे और इस लड़की के बाप के मन में अभी भी उम्मीद लगी है कि वे हिन्दू मान लिये जावेंगे। मैं तुमको बाज़ा कर रहा हूँ

कि ये हिन्दू इतनी मगरूर कौम हैं कि तुमको वे कभी भी हिन्दू मानने के लिए तैयार नहीं होंगे।"

"मैं उनके मानने, न मानने की परवाह नहीं करती। तुम मुझको नसीम के साथ खाना खा लेने से मुसलमान हो गया मानते हो तो मान लो। मैं तुम्हारे मानने से स्वयं को मुसलमान नहीं मानती।"

"बहुत अजीब औरत हो तुम ?"

"हूँ भैया ! ऐसा ही है।"

"इसीलिये मुल्ला कहता था कि मुसलमान बना कर गाय का गोश्त खिला देना चाहिए।"

"तुमने राम को तो उससे भी बुरी बात करनी सिखा दी है।"

"वह क्या ?"

"गन्दा रहना। अब तो वह महीनों ही नहाता भी नहीं। आबदस्त लेकर हाथ साफ नहीं करता। कपड़े बदलता नहीं और उसके जिस्म से बदबू आने लगती है।"

"तो क्या यह गाय का गोश्त खाने से भी बुरी बात है ?"

"मैं तो ऐसा ही समझती हूँ। वह नजदीक आता है तो कै करने को जी करता है।"

"हाँ, एक बात याद आ गयी। वहीदन अब रोज नहाने लग गई है।"

"बहुत तकलीफ हो रही है उसको ?"

"यह तो वही बतायेगी, मगर इससे उसकी खूबसूरती निखर रही है।"

रामी चुप कर रही। वास्तव में यह बात उसके कहने से ही होने लगी थी।

☒ × ☒

५

उक्त घटना को बीते एक वर्ष हो चुका था । रामी अपनी बात सबको बताती और समझाती थी । उसके समझाने का लोगों पर प्रभाव भी होने लगा था । बस्ती में सीतलू मेट सबसे पूर्व उसके विचार का हुआ था । उसकी लड़की सत्तो के विवाह की चर्चा सहतू के पुत्र किसनू के साथ थी, परन्तु उसने सहतू को मुसलमान मान इस विवाह को अस्वीकार कर दिया था । जब किसनू का नसीम के साथ निकाह पढ़ा गया तो उसने लड़की का विवाह पड़ोस में रहने वाले एक राजगीर से कर दिया । अब सत्तो के घर एक लड़की उत्पन्न हुई तो उसके घर वाले बसन्ता ने मार-मार कर उसको घर से निकाल दिया था ।

सीतलू की समझ में नहीं आ रहा था कि किसलिए उसके दामाद ने उसकी लड़की को निकाला है । सत्तो तीन मास की लड़की लिये अपने बाप के घर आई तो सीतलू ने बिरादरी बुला ली । पहले उनका चौधरी सहतू था, परन्तु अब उसको कोई नहीं मानता था । एक अन्य मेट निरंजन अब चौधरी बन गया था ।

निरंजन ने बसन्त को बुलाया और सबके सामने उससे पूछ लिया, "क्यों बे बसन्त ! बिटिया को घर से क्यों निकाल दिया है ?"

"तुम पूछने वाले कौन होते हो ?"

"भाई ! मैं यहाँ का चौधरी हूँ । सबके कहने से ही पूछ रहा हूँ ।"

"मैं तुमको चौधरी नहीं मानता । मेरी बीबी दुराचारिणी है । मैं उसको खिला-पिला नहीं सकता ।"

"यह तुम किस प्रकार कहते हो कि वह दुराचारिणी है । इस बात का तुम्हारे पास क्या प्रमाण है ?"

"मुझे ज्योतिषी ने मेरा पत्रा पढ़ कर बताया था कि मेरे घर लड़का होगा । हो गई है लड़की । इससे यह बात स्पष्ट है कि यह लड़की किसी और की है ।"

इस पर सब हँसने लगे। चौधरी को साहस नहीं हुआ कि वह कहे कि ज्योतिषी ने झूठ कहा है। सत्तो के बाप ने कहा, "यह झूठ बोलता है। किसी ज्योतिषी ने नहीं बताया। बच्चे को पालने से बचने के लिये यह झूठ बोल रहा है।"

लोग, जो वहाँ उपस्थित थे, अपनी-अपनी सम्मति देने लगे। कोई तो कहते थे कि ज्योतिषी जी महाराज का कहा झूठा नहीं हो सकता। और अन्य यह कहते थे कि बसन्त का पत्रा किसी अन्य ज्योतिषी को दिखाया जाय। निरंजन ने जब मतभेद देखा तो बसन्त को कह दिया, "तुम अपनी पत्नी से राय कर उससे सुलह कर लो।"

बसन्ता ने कहा, "मुझे यह फैसला मंजूर है। मैं सत्तो से पूछता हूँ कि वह कौन है, जिससे वह यह लड़की लेकर आई है।"

इस पर सब वाह-वाह करन लगे। निरंजन के चौधरीपन की प्रशंसा होने लगी। सीतलू बेचारा निराश पंचायत से निकल कर अपनी कुल्ली के बाहर खड़ा था। उस समय रामी अपने घर के लिये रसद लेकर आ रही थी। उसने सीतलू की रोनी सूरत देखी तो पूछने लगी, "सीतलू भैया! उदास क्यों हो?"

"डूबते को तिनके का सहारा" भी बहुत होता है। वह रामी की सहानुभूतिपूर्ण बात सुन आँखों में आँसू भर कहने लगा, "बसन्ते ने बिटिया को घर से निकाल दिया है।"

"क्यों?"

"कहता है वह दुराचारिणी थी।"

"झूठ बोलता है पाजी कहीं का।"

"बिरादरी ने उसकी बात मान ली है।"

"तुम इन मूर्खों की बिरादरी को छोड़ दो।"

"पर बिटिया का क्या बनेगा?"

"देखो भैया! आओ मैं तुमको बताऊँ। साहस छोड़ देने से तो कुछ बनता नहीं। सारी बात पर विचार करने से तो कुछ मार्ग मिल ही जावेगा।"

सीतलू रामी के साथ-साथ चल पड़ा। रामी ने कहा, "तुम्हारी जात बिरादरी में तो लड़कियाँ दूसरा घर कर लेती हैं। इससे

चिन्ता क्यों करते हो ? इस पर भी अभी कुछ दिन ठहरो। लड़की को प्रसव के पश्चात् कुछ होश तो सम्हालने दो।

"यहाँ के लोग सब मूर्ख हैं। वे बात को समझ सकते नहीं। भेड़ चाल चलते हैं। देखो न सहतू के साथ कैसा व्यवहार किया है उन्होंने। उसको तो इन्होंने मुसलमान मान ही लिया था। यदि वह घबरा जाता तो अपना सर्वनाश कर लेता। अब भी वह हिन्दू का हिन्दू बना है। किसनी की बीबी भी हिन्दू हो गई है।"

सीतल् के लिये यह नवीन बात थी। उसने पूछ लिया, "तो सहतू मुसलमान नहीं है?"

"कौन कहता है?"

"यह बिरादरी के लोग कहते थे। तभी तो मैंने अपनी लड़की का विवाह उसके लड़के के साथ नहीं किया था।"

"वही बिरादरीवाले अब सत्तो को दुराचारिणी कहते हैं। अब भी उनकी बात मानोगे क्या?"

सीतलू भौंचक्का हो उसका मुख देखता रह गया। उसके मन में बिरादरी के निर्णय का कुछ भी मूल्य नहीं रहा था। एक बात अभी उसके मन में थी। उसने वही कह दी, "एक मुसलमान की बेटी से विवाह तथा खान-पान करने से हिन्दू मुसलमान नहीं हो जाता क्या?"

"नहीं भैया! एक हिन्दू से विवाह और खान पान करने से मुसलमान हिन्दू हो गया है।"

"क्या रामी माँ! यह क्या कह रही हो ऐसा हुआ है कभी?"

"हाँ, हुआ है। किसन से नसीम का विवाह हुआ। किसन ने नसीम को शुद्ध पवित्र रहने का तरीका सिखा दिया है। वह सत्य बोलती है, संयम से रहती है। मैं समझती हूँ कि किसन ने नसीम को हिन्दू बना लिया है। और अब मैंने नसीम का नाम नानकी रख दिया है। उसके घर में जा कर देखो तो पता चलेगा कि किसी हिन्दू का घर है।"

"बहुत विचित्र बात करती हो रामी मां!"

"हाँ भैया! मैं तो यह कहती हूँ कि किसनू तुम्हारे बसन्ते से

अच्छा लड़का है। अब मैं अपनी लड़की मोहिनी का विवाह किसनू के भाई से कर रही हूँ।"

"किसन तो अच्छा है पर क्या नसीम भी अच्छी है?"

"नसीम नहीं, नानकी कहो। हाँ, वह भी अच्छी है।"

"परन्तु है तो मुसलमान की ही बेटी।"

"कभी कमल देखा है?"

"हाँ, क्यों नहीं? हमारे गाँव के तालाब में बहुत होते हैं।"

"कैसा है उस तालाब का पानी?"

"वह तो बहुत गन्दा है, उसे कोई नहीं पीता।"

इस पर भी उसमें से कमल सदृश सुन्दर पुष्प उत्पन्न हो सकता है। कमल का त्याग तो कोई भी नहीं करता। भले ही वह कीचड़ में उत्पन्न हुआ हो।"

सीतलू में रामी की युक्तियों का उत्तर देने की क्षमता नहीं थी। वह मन में विचार करता हुआ उसके साथ साथ चल रहा था। उसे किसनू से अपनी लड़की का विवाह अस्वीकार करने का अब पश्चत्ताप हो रहा था।

इस समय वे रामी की कुलिया के बाहर जा पहुँचे। रामी ने बाहर चटाई बिछा उसको वहाँ पर बिठा दिया। फिर सहतू को बुला उसके पास बिठा कर कहा, "सहतू भैया! बताना तुमको नानकी कैसी लग रही है?"

इससे पूर्व सीतलू ने कह दिया, "रामी मां! मेरी मति तो इन बिरादरीवालो ने भ्रष्ट की थी। अब मैं देख रहा हूँ कि वे तो सब मूर्ख हैं। एक सती साध्वी लड़की को दुराचारिणी कह रहे हैं।"

भगतू ने बाहर दो चार व्यक्तियों की आवाज सुनी तो वह भी बाहर आ गया। सीतलू को वहाँ बैठा देख वह विस्मय में खड़ा रह गया। सीतलू ने उसको अभिवादन करते हुए कहा, "भगतू भैया! जै रामजी की!"

"सुनाओ भाई! कैसे आना हुआ?"

सहतू ने उसकी लड़की के विषय में पूछ लिया।

सीतलू ने अपनी लड़की से अपने दामाद के व्यवहार का

वृतान्त वता दिया। उसने कहा, "तीन दिन हुए वह आई थी तो उसके शरीर पर लातों, मुक्कों के स्थान स्थान पर चिन्ह बने थे। उसके मुख से रक्त वह रहा था और गाल सूज रहे थे।

"आज विरादरी बुलाई तो बसन्तू ने बता दिया कि लड़की दुराचारिणी है। प्रमाण माँगा गया तो कहने लगा, एक ज्योतिषी ने उसके घर लड़का होना बताया था और हो गई है लड़की। इसलिए वह अवश्य किसी और की होगी। मैंने कहा भी कि उस ज्योतिषी को उपस्थित करो। परन्तु बिरादरी ने उसकी बात को ही ठीक मान लिया।

"उसी बिरादरी के कहने पर मैंने तुमको मुसलमान मान लिया था।"

भगतू जो उसके समीप ही चटाई पर वैठा था बोला, "भैया! इन मूर्खों की बिरादरी को छोड़ क्यों नहीं देते? सहतू भैया ने छोड़ दिया है तो वह सुखी ही है।"

"इस पर भी चार भाई साथ हों तो सुख होता है।"

"हाँ, वह तो है ही। तुम अपनी कुलिया उधर से उठा इधर आ जाओ। तुम भी हमारी बिरादरी में सम्मिलित हो जाओगे।"

"तो तुमने अपनी बिरादरी बना ली है क्या?"

बिरादरी स्वर्ग से बन कर तो आती नहीं। जहाँ चार आदमी वैठ गये, वहीं बिरादरी वन गयो।"

"वात तो तुम ठीक कहते हो, परन्तु मेरी सत्तो का क्या होगा?"

अब रामी ने कह दिया, "भैया! उसको कुछ दिन आराम करने दो। जब बच्चा एक वर्ष का हो जायेगा तो उसके विषय में विचार कर लेंगे। कोई न कोई मार्ग तो निकल ही आवेगा। कुछ नहीं तो एक मजदूर की बेटी है। टोकरी पकड़ लेगी तब भी अपने गुजारे के लिए कमा ही लेगी।"

× × ×

सहतू ने बस्ती के इस ओर जगह देख कुलिया बनवानी आरम्भ कर दी। जब शहीदू ने सीतलू की भी सहतू के पास कुल्ली बनते और उसको आते देखा तो अपनी बेटी वहीदन को बुला कर पूछने लगा, "यह सीतलू यहाँ क्या करने के लिये आ रहा है ?"

"वह अपनी बेटी सत्तो के लिए यह कुलिया बना रहा है। उसके घरवाले ने उसको घर से निकाल दिया है।"

"तो वह भी मुसलमान हो जावेगी ?"

"अब्बा ! यह कैसे ?"

"कोई मुसलमान उस पर चादर डाल लेगा।"

"यहाँ कौन मुसलमान है जो ऐसा कर लेगा ?"

"दो तो हैं ही, एक मैं और दूसरा तुम्हारा भाई रहमान।!"

"तो माँ और भाभी क्या करेंगी ?"

"वे भी रहेंगी। हमारे मजहब में चार चार बीबियाँ लिखी हैं।"

"पर माँ तो कहती थी कि उसको पेट भर खाने को भी नहीं मिलता। अब्बा ! तुम सब शराब में खर्च कर देते हो।"

"वह तो मैं छोड़ नहीं सकता।"

"मैं तो यह पूछ रही हूँ कि नई बीबी लाओगे तो उसको खिलाओगे क्या ?"

"वह अपनी तकदीर साथ ले कर आवेगी। और फिर रहमान तो शराब नहीं पीता। उसके पास तो एक और बीबी के खिलाने के लिये गुंजाइश है ?"

"उनके पास एक ही बिस्तर है। दोनों रात को उसी में सोते हैं। रहमान की बीबी उस बिस्तर में तीसरे को सोता देख उसको लात मार मार कर बाहर निकाल देगी।"

शहीदू हँसता हुआ अपनी कुल्ली की ओर चल दिया। वहीदन को यह सब वाहयात लग रहा था। उसने आवाज देकर कहा, "अब्बा !"

शहीदू लौट पड़ा और प्रश्न भरी दृष्टि से उसकी ओर देखने

लगा। वहीदन ने कह दिया, "रामी माँ ने मेरा नाम बसन्ती रख दिया है।'"

"क्यों ?"

"वह कहती है कि मैं मौसम बहार की भाँति सुन्दर लगने लगती हूँ।"

"कहती तो ठीक है तुम बहुत खूबसूरत होती जा रही हो। पर मुझको यह नाम पसन्द नहीं।"

"तो तुमको क्या पसन्द है ?"

"मुझे तो वहीदन ही ठीक लगता है।"

"तो तुम मुझे वहीदन ही कहा करो, रामी माँ बसन्ती कहा करेगी।"

"नहीं, वह ऐसा नहीं कह सकेगी।"

"क्यों ?"

"वह नाम वदल कर तुमको हिन्दू बना रही है।"

"नहीं बाबा ! उसने मुझे पहले हिन्दू बनाया है। नाम तो आज ही विचार कर रखा है।"

"वह कैसे हिन्दू बना लिया उसने ? तुम उधर अपनी माँ के पास आओ, तुम से कुछ पूछना है।"

"मगर आज तो तुम्हारा शराब पीने का दिन है न ?"

"तो क्या मेरी शराब तुमको काटती है ?"

"नहीं, शराब तो नहीं काटती पर शराब पी कर तुम्हारी बेहयाई नहीं देखी जाती।"

इस पर शहीदू बोला—"अच्छा जब तुम चली जाओगी, तब पियूँगा।"

वहीदन शहीदू के साथ चल दी। शहीदू की कुलिया वैसी ही गन्दी थी जैसी कि पहले हुआ करती थी। हाँ अब माँ के कपड़े फटे हुए थे और उन पर पैबन्द लग रहे थे। वह खाना बना चुकी थी और शहीदू के आने की प्रतीक्षा कर रही थी।

उसे देख सईदन ने पूछ लिया—"तुम क्यों आई हो ?"

"अब्बा बुला कर लाये हैं।"

"क्या कहते हो इसको ?" सईदन ने शहीदू से पूछा।

"काटने को क्यों दौड़ रही हो ?" मैं इसको यह पूछने के लिए लाया हूँ कि यह रामी की बच्ची इसको हिन्दू बना रही है उसने इसका नाम तक बदल दिया है।"

"कैसे हिन्दू बना लिया उसने ?"

वहीदन बोली, "उसने मुझे नहाने का ढंग बताया है, दातून कुल्ला करने, हाथ धोने, नित्य धुले हुए कपड़े पहनने के लिए कहती है। अब हमारा बिस्तर साफ रहता है। मेरे घरवाले का बिस्तर मेरे से अलहदा रहता है। जब हममें इकट्ठे सोने की ख्वाहिश होती है तो हम एक दूसरे से पूछ लेते हैं। हम अब झूठ नहीं बोलते। चोरी नहीं करते और रोज खुदा की इबादत करते हैं।

"कई दिन रामी माँ हमारे घर में आ कर हमें बताती रही है कि यह करो, वह करो। आज दोपहर के वक्त आई तो मैं धुले कपड़े पहन आईने में मुख देख रही थी। वह मुझको देखकर बोली, "वहीदन ! तुम तो अब बहुत खूबसूरत लग रही हो। मौसमे-बहार की तरह खूबसूरत होने से तुम्हारा नाम वासन्ती हुआ।"

"मैंने कहा, पर यह तो हिन्दुआना नाम है ?"

"वह कहने लगी, वह तो तुम पहले ही बन चुकी हो।

"इसके पश्चात् उसने अपने पड़ोस में सबको कह दिया कि आज से मेरा नाम बासन्ती रख दिया गया है।

"मैंने कहा कि मैं तो रोज खुदाबन्द करीम का नाम लेती हूँ।"

"उसने कह दिया, 'न राम राम करने से कोई हिन्दू होता है और न खुदा का नाम लेने से कोई मुसलमान।' आमालों से नेक और बद होते हैं। तुम नेक औरत हो गई हो इसलिए तुम अब हिन्दू हो।"

इस पर सईदन ने पूछ लिया, "तो सब नेक आदमी हिन्दू ही होते हैं क्या ?"

"मैं क्या जानूँ अम्मी ! मैं तो यह जानती हूँ कि अव्वा नेक नहीं हैं। वे अपने को हिन्दू नहीं कहते। इसलिए हिन्दू वह है, जो अव्वा जैसा नहीं है।"

"बताओ मियाँ ! क्या कहते हो ? बेटी कहती तो ठीक ही है कि तुम नेक आदमी नहीं हो। तुम अपनी बेटी को ही बीवी

बनाने को सोचा करते हो। बताओ तुम मुसलमान हो क्या ? अगर तुम मुसलमान हो तो तुम्हारी बेटी वैसी मुसलमान नहीं है।"

वहीदन बाप के ख्यालात को जानती थी। इसलिए वह उसकी कुल्ली में आने से डरती थी। उसने माँ के सवाल का जवाब दे दिया, "माँ ! रामी माँ कहती थी कि नेक मुसलमान और नेक हिन्दू एक जैसा ही होता है। बेवकूफों ने ये अलहदा नाम रख लिये हैं।"

इस समय शहीदू ने जेब से बोतल निकाल कर बाहर रख ली और बोला, "वहीदन ! मुर्गा बना है खाओगी ?"

"नहीं अब्बा ! मैं चली, तुम खाओ।"

जब वह चली गई तो शहीदू बोला, "इस रामी बदजात को तो यहाँ से भगाना चाहिए। थोड़ी पी लूँ तो उसका बन्दोबस्त करता हूँ।"

सईदन ने समझा कि वह उसके साथ फौजदारी करने जा रहा है। इससे वह कुलिया के दरवाजे पर बैठ गई। और बोली, "देखती हूँ तुम कैसे पीकर बाहर जाते हो ? वे सब मिल गये तो तुमको जान से ही मार डालेंगे।"

वहीदन ने अपने घर वाले से जा कर बताया, "अब्बा तो मेरे हिन्दू हो जाने पर बहुत नाराज हो रहे हैं।"

"तो फिर ?"

"आज उसके पीने का दिन है। वह फौजदारी भी कर सकता है।"

"तो क्या किया जाय ? यदि किसी पर जबरदस्ती करेगा तो वह चूड़ियाँ ही पहने बैठा होगा क्या ?"

इसका अभिप्राय यह था कि राम ने शहीदू के साथ झगड़ा करने का निश्चय कर लिया है। एक दिन उसने भी सुना था कि शराब के नशे में वह वहीदन से बलात्कार करने की सोचा करता है।

उसने कुछ विचार कर कह दिया, "अगर वह यहाँ आया तो तुम भाग कर रामी माँ की कुलिया में चली जाना।"

"और आप ?"

"मैं रस्सी से उसके हाथ-पाँव बाँध कर यहाँ कैद कर रखूँगा।

प्रातः नशा उतर जाने पर उसको शरमिन्दा कर, यहाँ से निकाल दूँगा ।"

"देखिये जी ! शराब पीकर वह भली बुरी बात में फरक नहीं कर सकता । इस कारण उससे बहुत झगड़ा नहीं करना ।"

"अगर उसने मुझ पर हाथ उठाया तो फिर अपनी हिफाजत तो करनी ही होगी ।"

इस पर वहीदन ने अपने मन में यह संकल्प कर लिया कि चाहे कुछ भी हो जाय वह यहाँ से जायेगी नहीं ।

वहीदन और राम मन में अनेकानेक विचार करके लेटे तो सो गये । वे दो घंटे से अधिक नींद ले चुके थे कि उनकी नींद एक चीख सुनने से खुली । वे एक दूसरे का मुख देखने लगे । कुछ विचार करने पर वहीदन ने कह दिया, "यह चीख तो अव्वाजान की कुलिया से आई लगती है ।"

राम के मन में भी यही आया कि चीख तो वहीदन की माँ की थी । इससे वह कुलिया से बाहर निकल आया और शहीदू की कुलिया के बाहर जा वहाँ दरवाजे से कान लगा कर सुनने लगा । शहीदू कह रहा था, "अब चुप की है । कहा था हट जाओ, हट जाओ, हटती ही नहीं थी ।"

इस समय वहीदन, नसीम, लाल और किसन इत्यादि भी वहाँ पर आ गये ।

रामी ने कुलिया का दरवाजा खटखटाया तो अन्दर से आवाज आई, "कौन है ? मियाँ बीवी के झगड़े में कौन दखल देने के लिए आया है । जाकर सो रहो ।"

वहीदन पुकार रही थी, "अम्मी अम्मी !"

सईदन की कोई आवाज नहीं आ रही थी ।

रहमान आया तो उसने दरवाजा उखाड़ कर निकाल दिया । दरवाज़ा खुला तो सबने देखा कि सईदन नीचे अचेत पड़ी है और शहीदू उसकी गर्दन पकड़े छाती पर सवार था । रहमान ने अपने बाप को डाँट कर कहा, "अव्वा ! क्या कर रहे हो ?"

रहमान ने उसे बाँह से पकड़ कर एक ओर किया तो उसकी

समझ में आया कि गला घोंट देने से उसकी माँ तो मर चुकी है। उसका बाप तो मुर्दे की गर्दन दबा कर उसे चुप करा रहा था।

× × ×

यह समझ लेने पर कि सईदन को शहीदू ने मारा डाला है, सब भौंचक्के हो एक दूसरे का मुख देखने लगे। शहीदू कुछ देर तक तो अपनी बीबी को गर्दन फेंके लेटे देखता रहा, एकाएक उसकी समझ में आया कि वह तो मर गई है और मैंने उसका गला घोंट कर मार डाला है। इससे साथ ही उसको यह भी समझ में आया कि मैं कातिल हूँ और मुझको फाँसी पर लटका दिया जायेगा। डर के कारण उसका नशा कम होने लगा।

रामी माँ ने जब समझा कि हत्या हो गई है तो उसने रहमान को कह दिया, "अपने बाप के हाथ-पाँव बाँध लो, कहीं भाग न जाय।"

रहमान कुछ दूसरा ही विचार कर रहा था। वह इस कारण झिझक रहा था कि उसके बाप के फाँसी पर लटक जाने की सम्भावना प्रतीत हो रही थी।

शहीदू को अपनी मौत दिखाई देने लगी तो वह उठा और वहाँ खड़े हुओं को इधर-उधर धकेलता हुआ कुलिया से निकल एक ओर को भाग गया।

वहीदन ने कहा, "रामी माँ! मरनेवाली तो मर गई, अब हम अब्बा को फाँसी पर चढ़ा कर क्या ले लेंगे।"

इसका उत्तर रहमान ने देते हुए कहा, "आप सब लोग अपनी-अपनी कुलियों में जा कर सो जाइये और ऐसे सोइये कि मानो आपको इस घटना के बारे में कुछ ज्ञान ही न हो। बाकी का बन्दोबस्त मैं कर दूँगी।"'

रामी कुछ देर तक विचार करती रही। पश्चात् बोली, "बाप जाने बेटा जाने। एक ने हत्या की है और दूसरे की माँ थी। हमसे कोई पूछेगा तो हम ठीक ठीक बता देंगे। नहीं पूछेगा तो हम अपने आप किसी से कहने के लिये आयेंगे नहीं।"

लालचन्द और सहतू को यह तजवीज पसन्द नहीं आई। मगर नसीम ने अपने श्वसुर की ओर दयनीय दृष्टि से देखा तो वह आँखें झुकाये शहीदू की कुलिया से निकल अपनी कुलिया की ओर चल पड़ा। लालचन्द और भगतू उसके पीछे पीछे निकल गये। रामी, मनकी और लक्ष्मी भी चल दीं।

अब रहमान, उसकी बीवी शबनम, राम और उसकी बीवी वहीदन, तथा किसनू और उसकी बीवी नसीम वहाँ रह गये। रहमान ने वहीदन की ओर देख कर कहा, "देखो वहीदन ! माँ मर गई है। बाप पकड़ा गया तो जरूर फाँसी हो जावेगी। हमको इससे क्या फायदा होगा ? इसलिए हमें अपने आप पुलिस में रिपोर्ट लिखाने का क्या मतलब ! मैं कल सुबह माँ को दफना दूँगा। अगर उससे पहले ही पुलिस में बात खुल गई तो यही कहेंगे कि हमने दिन निकलने पर इस कुलिया का दरवाजा खुला पाया था और माँ को मरा हुआ देखा। उस वक्त बाप यहाँ नहीं था।"

"तो अब क्या करें ?" वहीदन का सवाल था।

"माँ को बिस्तर पर लिटा देते हैं। कुलिया का दरवाजा खुला छोड़ देते हैं और अपनी अपनी कुलिया में जा कर सोने का बहाना कर लेट जाते हैं।

"मेरा मतलब यह है हम अपने आप बाबा के खिलाफ रिपोर्ट नहीं लिखवायेंगे। हमने कुछ देखा भी तो नहीं। जाहिर भी ऐसा ही करेंगे और अगर सुबह तक सब अमनो-अमान रहा तो माँ को दफ़ना देंगे।"

इस राय को सबने ठीक समझा और माँ के शव को उसके बिस्तर पर लिटा, कुल्ली का दरवाजा खुला छोड़, सब अपनी-अपनी कुलिया में चले गये।

दूसरी ओर सब रामी की कुलिया में इकट्ठे हो गये। वे लोग भी वैसा ही विचार कर रहे थे, जैसा कि रहमान ने बताया था। रामी ने कह दिया, "नींद तो आयेगी नहीं। इस पर भी जिनकी माँ मरी है, वे ही निश्चय करेंगे कि क्या करना है। हमको तो इस पूर्ण घटना से अपनी अनभिज्ञता प्रकट करनी चाहिए। आप लोग अपनी अपनी कुलिया में जा कर लेट जाइए।"

सबने इस बात को ठीक समझा और अपनी अपनी कुलिया में जा कर सो गये। इस पर भी वे लेटे नहीं रह सके। दिन निकलने से पूर्व ही पुलिस शहीदू को हथकड़ी लगाये वहाँ आ पहुँची।

पुलिस शहीदू की कुलिया में गई। वहाँ शव को पड़ा देख आस-पास की कुलियों के निवासियों को जगाना आरम्भ कर दिया।

सबसे पहले आँखें मलता हुआ रहमान निकला। पश्चात् एक एक कर अन्य सभी बाहर निकल आये। सबके कच्चे बयान हुए, पश्चात् सबको थाने में आने को कह पुलिस लाश को उठवा और शहीदू को साथ ले कर चली गई।

शहीदू कुलिया से भागा सो सीधा यमुना के किनारे जा पहुँचा। उसने खुदकशी करने के लिए यमुना में कूदना उचित समझा। वह यमुना में कूद पड़ा, परन्तु ठण्डा पानी होने के कारण एक ही डुबकी में उसका रहा-सहा नशा भी उतर गया। वह तैर कर पुनः किनारे पर आ लगा। वहाँ बैठ विचार करने लगा कि क्या करे? अब उसके मन में पश्चाताप हो रहा था। उसको अपने किये पर दुःख होने लगा। इस पर वह अपने कर्म और उसके पूर्व के विचारों पर मनन करने लगा। इससे उसे स्वयं पर ग्लानि अनुभव होने लगी।

उसके कपड़े भींग गये थे और वह सर्दी से ठिठुर रहा था। आत्मग्लानि से गलता हुआ वह अपनी बस्ती की ओर चल पड़ा। उसके विस्मय का ठिकाना नहीं रहा जब उसने देखा कि उसके पाँव, उसके मन की इच्छा के विपरीत, उसकी बस्ती की ओर न जाकर तिमारपुर की ओर बढ़े जा रहे हैं। इस बात को अनुभव कर पुनः अपने कर्मों और उनके अन्तिम परिणाम, अपनी ही औरत की हत्या के विचारों में खो गया। वह अर्द्धचेतनता की अवस्था में पुलिस चौकी में जा पहुँचा और वहाँ पर पहरा दे रहे कान्स्टेबल को अपने कुकर्म बताने लगा।

वह उसको पकड़ कर भीतर मुंशी के पास ले गया। जब शहीदू ने बतलाया, "मैं अपनी बीवी का कत्ल करके आया हूँ और रपट लिखाना चाहता हूँ। तो मुंशी और कान्स्टेबल चौकन्ने

हो गये । उन्होंने तुरन्त थानेदार को जगाया और उसके सामने शहीदू के बयान लिख लिए । पश्चात् थानेदार एक हेड कान्स्टेबल और पाँच-छः पुलिस के सिपाहियों को साथ ले कर घटनास्थल पर जा पहुँचा ।

रहमान ने तो कत्ल को छिपाने की योजना बना ली थी, परन्तु होनी बहुत प्रबल सिद्ध हुई । यदि शहीदू वहाँ से भागता न, तो रहमान की योजना में वह भी सम्मिलित हो बच जाता । परन्तु पाप उसके सिर पर कूद रहा था और उसके अपने मुख से ही वह सब बातें निकल रही थीं, जो उसको दण्डनीय सिद्ध कर रही थीं ।

शहीदू पर मुकदमा चला । उसमें उसके बयान और फिर उसका पुलिस को लेकर घटनास्थल पर जाना तथा वहाँ पर घटित घटना का सविस्तार वृतान्त बताना ही उसको दण्ड दिलाने में पर्याप्त है । रहमान के तथा उसकी बहनों के कहने पर रामी, सहतू आदि ने घटना से अनभिज्ञता प्रकट की ।

सेशन कोर्ट में शहीदू को आजन्म कारावास का दण्ड मिल गया ।

× × ×

●

मुकदमें को छः मास लग गये । इतने समय में नसीम और वहीदन, नानकी तथा वासन्ती विख्यात हो गई थीं । रहमान को अपने संस्कारों के कारण यह सब अस्वाभाविक प्रतीत होता था । उसने अपनी बहनों को समझाने का यत्न किया, परन्तु वह सफल नहीं हो सका । इससे वह एक दिन समीप की किसी मसजिद से एक मुल्ला को पकड़ लाया ।

मौलाना अब्दुल वहीद देवबन्द के मकतब से इस्लामी मजहब की तालीम ले कर उस मस्जिद में काम करता था । उसने जब शहीदू की लड़कियों की बात सुनी तो एक रविवार के दिन जब नसीम और वहीदन के घर वाले काम पर गये हुए थे, आ गया । रहमान ने बहनों को बुला लिया । नसीम ने मुल्ला को देखा तो वह

समझ गई कि वह उनको कुछ समझाने के लिए आया है। इससे उसने रहमान से कहा, "भैया ! रामी माँ को भी बुला लूँ ?"

"क्यों ?"

"हम सब बातों का जवाब नहीं जानती।"

इस पर अब्दुल वहीद ने कह दिया, "जवाब की जरूरत नहीं। मजहब के मामलों में दलील का दखल नहीं होता। देखो बेटी ! खुदा ला शरीक़ है। उसके बराबर कोई नहीं। उसके क़लाम में हमारी अक्ल को दखल नहीं। खुदा का रसूल वर्तउल इस्लाम हजरत मोहम्मद हैं। वे खुदा के क़लाम को हम तक पहुँचाने वाले हैं। क़ुरआन हजरत वली उल इस्लाम मोहम्मद साहब पर नाजल हुआ था और उसने हमको बताया है कि उस पर ईमान न लाने वाले काफ़िर हैं। काफ़िरों के साथ ताल्लुक बनाना कुफ़्र है। वे दोजख में जायेंगे। हजारों सालों तक वे दोजख की आग में जलेंगे। तब वे चीख-पुकार करेंगे और उनकी सुनने वाला कोई नहीं होगा।

"इससे मैं तुमको कहता हूँ कि तुम इन काफ़िरों से ताल्लुक छोड़ दो। हजरत मुहम्मद और खुदा की कलाम कुरआन शरीफ पर ईमान लाओ।""

इतना कह मुल्ला नसीम की ओर देखने लगा। उसके मुख पर अविश्वास प्रकट हो रहा था। जब मुल्ला चुप कर गया तो नसीम ने पूछ लिया, "हजरत ! हम अपने खाविन्द से भी ताल्लुक छोड़ दें क्या ? वे दोनों एक हिन्दू के बेटे हैं।"

"नहीं, उनको हजरत की उम्मत में शामिल कर लो।"

"कैसे ?"

"उनका नाम बदल कर और उनको गाय का गोश्त खिला कर।"

"इससे वे मुसलमान हो जायेंगे क्या ?"

"हाँ।"

"नाम तो आपने बदल दिये थे। गाय का गोश्त हम भी नहीं खातीं। अब्बाजान भी नहीं खाते थे।"

"तुम तो मुसलमान की बेटी हो न। यह तो काफ़िर के दिमाग से कुफ़्र निकालने का नुसखा है।"

"हमसे यह नहीं हो सकता ।"

"तो तुम भी उनके साथ दोजख में हजारों साल जलोगी । तुम्हारी रूह तड़फड़ाने लगेगी और तब तुम्हारी सुनने वाला कोई नहीं होगा ।"

"अगर हम नेक, पाक साफ रहें और रोज उस परवरदिगार खुदावंद क़रीम का नाम लें, तब भी दोजख में भेज दी जायेगी क्या ?"

"हाँ काफ़िरों से ताल्लुक रखने वालों के लिये ऐसा ही लिखा है ।"

"तुम झूठ बोलते हो । हम इस्लाम को इतना गिरा हुआ नहीं समझतीं । इसलिए या तो तुम झूठे हो या इस्लाम ग़लत है ।"

मुल्ला नसीम को, क्रोध में भौंचक्का हो देखता रह गया । वह अभी नसीम का क्रोध से लाल मुख देख ही रहा था कि वहीदन ने कह दिया, "रहमान भैया ! यह किस मूर्ख को पकड़ कर ले आये हो ? इसकी बातों से तो हमारा इस्लाम से एतबार ही उठने लगा है ।"

"देखो मुल्ला साहब ! हमारे बाप ने हमारी माँ को गला घोंट कर मार दिया था । वह दोजख में जायेगा या बहिश्त में ? उसका नाम शहीदू है । वह खुदा का नाम ले-ले कर क़समें खाता था और काफ़िरों से नफ़रत करता था ।"

मुल्ला अभी भी विचार कर रहा था कि इसका उत्तर कैसे दें । इस पर नसीम ने रामी से सुनी बात कह दी । "देखो, वह नेक आदमी नहीं था । शराब पीता था, और नशे में वहशीपन करता था । अपनी लड़की की खूबसूरती और जवानी देख उससे बदफेली करने की कोशिश में अपनी बीवी को कत्ल कर बैठा था । वह मुसलमान होने पर भी, रोज क़लमा पढ़ने पर भी, दोजख में ही जायेगा । अगर तुम कहो कि मुसलमान होने से बहिश्त में जायेगा तो तुम झूठ बोल रहे हो ।"

"जब बुरा काम करने पर हिन्दू और मुसलमान दोनों दोजख में जायेंगे तो नेक काम करने वाले हिन्दू और मुसलमान दोनों बहिश्त में क्यों नहीं जायेंगे ?"

आखिर मुल्ला को एक युक्ति सूझी। उसने कहा, "आमालो से इतना कुछ नहीं होता, जितना एतकाद से होता है। एक पत्थर की मूर्ति पर एतकाद रखने वाला नेक काम कर ही नहीं सकता।"

"परन्तु यहाँ रामी माँ तो बहुत नेक है। वह भगवान कृष्ण की मूर्ति की पूजा करती है और सबका भला करती रहती है। किसी की भी वह निन्दा नहीं करती। सबकी भलाई में ही दिन-रात लगी रहती है। यहाँ तक कि बाबा के पकड़े जाने पर भी उसने किसी को उसके खिलाफ़ अदालत में पेश नहीं होने दिया।"

"तुम कहते हो कि वह दोजख में जायेगी और एक दुराचारी क़ातिल बहिश्त में जायेगा। क्या तुम्हारी बात सच हो सकती है?"

मुल्ला ला जवाब हो रहा था। अब उसने दूसरी चाल चली। उसने वहीदन से पूछ लिया, "तुम्हारा नाम क्या है?"

"वहीदन।"

"पर वह रामी और दूसरे लोग तुम्हे वासन्ती कहते हैं।"

"हाँ।"

"तुम उनको मना क्यों नहीं करती?"

"मेरी माँ मुझको चुटकी कहती थी। मैंने उसे मना नहीं किया। अब कोई मुझे वासन्ती कहे तो मैं क्यों मना करूँ।"

"तूम वासन्ती कहने पर मत बोला करो।"

"क्यों?"

"क्योंकि यह काफिरों का सा नाम है।"

वहीदन और नसीम दोनों हँस पड़ीं और उठ खड़ी हुई। नसीम ने खड़े-खड़े कह दिया, "तुम मुझको नसीम कहो। दूसरे मुझे नानकी कहें। मैं किसी को मना नहीं करती। अब हम जाती हैं।"

"ठहरो ठहरो।" मुल्ला ने उनको हाथ से रुकने का संकेत कर पूछा, "यह रामी तुमको हिन्दू कहती है क्या?"

"हाँ, वह समझती है कि हिन्दू नेक आदमी को कहते हैं। वह हमको नेक समझती है। इसलिए हमको हिन्दू मानती है।

अंग्रेजी में भले लोगों को जैंटल मैन कहते हैं, हमें भी यदि कोई ऐसा कहे तो तुम्हें क्या एतराज है ?"

मुल्ला हँस पड़ा और रहमान से बोला, "इनको वहम हो गया है कि हिन्दू भले आदमी को कहते हैं। असल में हिन्दू के मायने तो चोर, डाकू और बदमाश होता है। यह फारसी का लफ़्ज है।"

× × ×

किन्तु नसीम और वहीदन तो मुल्ला के इस कथन से पूर्व ही निकल कर अपनी-अपनी कुलियों में जा चुकी थीं।

रामी कुछ अधिक पढ़ी-लिखी औरत नहीं थी। वह गीता-रामायण भी नहीं पढ़ सकती थी। कभी मन्दिर में रामायण की कथा सुना करती थी और उसी पर अपनी बुद्धि से जोड़-तोड़ कर बात बना लेती थी।

दिन पर दिन व्यतीत होने लगे। अब उनके समीप आकर सीतलू और उनका परिवार भी रहने लगा था। सीतलू से जब कोई कहता, 'तुम भी मुसलमान हो गये हो!' तो वह कह देता, "तुम, तुम्हारा बाप, तुम्हारा दादा मुसलमान होगा। मैं नहीं। तुम सब बेईमान और मूर्ख हो। तुम एक भली लड़की को बिना प्रमाण के दुराचारिणी कहते हो। मैं तुम्हारी बिरादरी से बाहर हूँ।"

काल व्यतीत होने पर बस्ती के कुछ अन्य लोगों को अपनी भूल का आभास मिलने लगा। और निरंजन के चौधरपन को छोड़ लोग पुनः सहतू को चौधरी मानने लगे।

सन्तू प्रति रविवार अपने माता-पिता से मिलने के लिए आया करता था। वह भी इस बस्ती में हो रहे परिवर्तन को देख अपनी बाल-बुद्धि से अर्थ लगाया करता था। इस अर्थ लगाने में रामनारायण की पत्नी उसकी सहायिका हो रही थी।

तिमारपुर वाली इस निर्धनों की गन्दी बस्ती में यह संघर्ष चलते हुए कई वर्ष व्यतीत हो गये थे। बस्ती के आधे से अधिक हिन्दू परिवार सहतू चौधरी की बिरादरी में सम्मिलित हो चुके थे।

वास्तव में सहतू की परामर्शदात्री, रामी माँ थी और जब कभी भी कोई जटिल समस्या उपस्थित होती, जो सहतू समझ नहीं सकता था, वह रामी माँ से राय ले कर समझने का यत्न करता। रामी प्रायः सभी समस्याओं का सुझाव बता दिया करती थी और उससे सहतू की प्रतिष्ठा बढ़ती थी।

सीतलू की लड़की पुनः अपने पति के साथ रहने लगी थी। उसका घर वाला अपनी भूल समझ गया था।

रहमान मुल्ला को निरुत्तर होते जाते देख मन में विचार करने लगा था कि रामी की बात भी सुननी चाहिये। इससे अब वह भी कभी-कभी उसके पास आकर बैठ जाता और उसकी अन्य लोगों से हो रही बातों को ध्यान से सुना करता था।

रामी माँ की सबसे प्रबल युक्ति होती थी—"तुम लोग नसीम को हिन्दू नहीं मानते। न मानो। तुम उसके हाथ से खाना न खाना चाहो तो मत खाओ। परन्तु मैं अथवा अन्य कोई, उसको हिन्दू कहते अथवा मानते हैं तो तुम मना क्यों करते हो? वह बहुत से हिन्दुओं से अधिक पाक-साफ नेक कर्म करने वाली, दया-क्षमा करने वाली है। मैं उसको बहुत अच्छी समझती हूँ। इसमें तुमको क्यों दुःख होता है?"

हिन्दुओं के विरोध पर भी नसीम, नानकी और वहीदन वासन्ती होती जा रही थी। रहीम-करीम नाम भूले जाने लगे थे और रामचन्द तथा किसन नाम प्रचलित होते जाते थे।

एक बार निरंजन आदि ने यह विख्यात कर कि रामी हिन्दू धर्म का नाश कर रही है, उसको अकेले देख मार डालने का षड्यन्त्र भी किया, परन्तु वह रामी को छू तक नहीं सके। निरंजन ने अपने दो साथियों की सहायता से एक सायंकाल उसको रोक लिया। रोक कर वह बोला, "राँड़! तैंने धर्म का नाश करना आरम्भ कर दिया है। तू...!"

निरंजन ने कहते-कहते लाठी मारने के लिये उठाई, परन्तु रामी को मुस्कराते देख वह रुक गया। उसने कहा, "मुझे मरने से डर नहीं लगता? तू तो हँस रही है।"

"मारो न भैया ! रुक क्यों गये ? एक अबला बहिन की हत्या कर हिन्दू धर्म की रक्षा कर लो।"

रामी के हाथ में दाल-आटे की गठरी थी। वह पुनः बोली, "इस देह से छुटकारा दिला कर पुण्य कमा लो भैया !"

निरंजन के साथी निरंजन को वार करने में संकोच करते देख वहाँ से भाग खड़े हुए। उनको भागते देख निरंजन को सन्देह हुआ कि कोई आ रहा है। इसलिये उसने भी अपनी लाठी नीची कर ली और बोला, "जाओ, आज बच गई हो। फिर किसी दिन. . . . ।"

रामी हँसती हुई अपने मार्ग पर चलती गई। घटना के पश्चात् तो रामी की धूम मच गई। वे लोग समझने लगे कि भगवान उसकी रक्षा कर रहा है। इस विचार से तो बस्ती के प्रायः सभी लोग सहतू की बिरादरी में मिल गये।

मोहिनी चौदह वर्ष की हुई तो उसका विवाह सहतू के छोटे लड़के के साथ कर दिया गया। विवाह के अवसर पर सन्तू तीन दिन की छुट्टी लेकर वहाँ आया था। विवाह के उपलक्ष्य में लाजवन्ती, रामनारायण, मोहिनी को शकुन डालने आये। उन्होंने मोहिनी को रेशमी पोशाक और गले का एक भूषण दिया। इससे तो सन्तू की महिमा बढ़ गई। सन्तू ने भी बहिन को एक जोड़ा कपड़ा अपने वेतन में से दिया।

लाज ने इन लोगों की बस्ती देखी तो वहाँ पर नालियाँ, टट्टी इत्यादि के लिये किसी प्रकार का प्रवन्ध न देख रामी से कह दिया— "आप लोग यहाँ कैसे रहते हैं ? यह तो बहुत ही गन्दी जगह है ?"

"हाँ, ललाइन ! पर क्या करें ? यहाँ एक परिवार की डेढ़-दो रुपये दैनिक से अधिक आय नहीं है। सब मेहनत-मजदूरी करने वाले लोग हैं। आप लोगों से ये अधिक खाते हैं। इनकी आय का सबसे अधिक भाग भोजन में व्यय होता है। शेष कुछ कपड़ों में। मकान के लिए तो इनके पास कुछ बचता ही नहीं है।

"इस बस्ती के इस ओर मैंने इनकी अपनी मेहनत से कुछ तो सफाई का प्रवन्ध किया है। वह देखो, औरतों के लिये दिन के समय टट्टी-पेशाब का स्थान बन गया है, परन्तु यह तो कुछ भी नहीं।"

रामनारायण कुछ और ही विचार कर रहा था। उसने

रामी की विवशता को देखा तो पूछ लिया, "यदि कोई समीप ही तुम लोगों के लिये मकान, नल, शौचालय, नालियाँ इत्यादि बनवाये और बहुत ही मामूली भाड़े पर आप लोगों को दे तो कैसा रहे ?"

"इसके साथ ही एक बात यह हो जाये तो बहुत आराम हो जायेगा। उस पक्की बस्ती की सफाई का प्रबन्ध भी उस भाड़े में ही हो तो बात चल जायेगी। यदि उनकी मरम्मत, सफाई इन लोगों पर छोड़ दी गई तो ये कर नहीं सकेंगे।"

"यह कुल्ली तो हम नदी के तट से चिकनी मिट्टी लाकर, पोताई और मरम्मत कर लेते हैं। शौच के लिए हम जंगल में चले जाते हैं। वहाँ धूप, पानी और सूअर सफाई कर देते हैं। जब बस्ती पक्की बनी, शौचालय भी पक्के बन गये तो उनकी सफाई और मरम्मत हमारे वस की बात नहीं होगी। वहाँ की सफाई तो कच्ची कुल्लियों से भी अधिक कठिन हो जायेगी।"

रामनारायण कुछ नहीं बोला। परन्तु यह योजना उसके मन में चक्कर काटती रही। वह एक बात मान गया था कि रामी की व्यावहारिक बुद्धि पढ़े-लिखे व्यक्तियों से भी अधिक है। उसके लिए विचारणीय बात यह थी कि संसार भर का वह कल्याण तो कर नहीं सकता। अपनी सीमित शक्ति से वह क्या इन वीस-तीस घर वालों की सुख-सुविधा का प्रबन्ध कर सकता है ?

घर जा कर वह भूमि, नक्शा और पूंजी तथा चालू खर्च का हिसाब-किताब बनाता रहा। उसने एक इंजीनियर को, सस्ते परन्तु मजबूत मकानों की एक बस्ती बनाने, उसमें सेनेटरी प्रबन्ध और फिर कुआँ इत्यादि के प्रबन्ध पर विचार करने के लिये कहा। उसने यह भी बताया कि वह किराया तो चालू खर्च के लिए लेना चाहेगा।

इंजीनियर ने दो मास में एक बस्ती की योजना बनाई। उसने एक कुआँ और कुएँ के चारों ओर पचास मकानों की वस्ती, मकानों से कुएँ तक आने-जाने के लिए पक्के मार्ग, नालियाँ और बस्ती से कुछ दूर हट कर शौचालय के लिए स्थान की व्यवस्था दस एकड़ भूमि के अन्तर्गत योजनाबद्ध कर दी। रामनारायण ने एक ऊँची ऊसर भूमि, गाँव वालों से तीन सौ रुपया प्रति एकड़ के हिसाब से

लेकर इस पर सोलह-सत्रह हजार रुपया ऊपर लगा कर इंजीनीयर द्वारा बनाई गई योजनानुसार एक बस्ती बना दी। समय-समय पर रामी, सहतू और अन्य बस्ती के समझदार लोगों को दिखा-दिखा कर उनकी सुविधाओं के लिये प्रवन्ध भी कर दिया।

जब नई वनी वस्ती में ये लोग जा कर बसने लगे तो रामनायण ने दो रुपये महीने एक मकान का किराया नियत कर दिया। सब मिल-मिला कर पचपन मकान थे। इनका किराया सौ रुपया के लगभग आने लगा।

दूसरी ओर रामी भी अपना दिमाग लड़ा रही थी। वह समझ रही थी कि एक दाता ने पक्की बस्ती बना दी है। उस दाता के इस धन की रक्षा करना इन मकानों में रहने वालों का काम है। इसके लिये उसकी समझ में आया कि सहतू की बिरादरी को सुदृढ़ करना चाहिए।

रामी ने उन पचास घरों के पुरुषों की पंचायत बुला कर बताया, "हम पहले यमुना के तट पर श्मशान भूमि के समीप एक लाला द्वारा बनाये गये झोपड़ों में रहते थे। उन झोपड़ों का किराया भी हम दो रुपया मासिक ही दिया करते थे। वे कच्चे, गन्दे और बरसात में चूने वाले थे और साथ ही आँधी में उड़ भी जाया करते थे। इस पर भी किराया लेने के पश्चात् लाला उनकी मरम्मत नहीं करवाता था।

"यमुना में बाढ़ आई तो हमारे सामान सहित दे झोपड़े पानी में वह गये। हमारी वर्षों की कमाई जल में बह गई। बाढ़ उतरने के पश्चात् लाला ने उसी स्थान पर फिर झोपड़े बनाये तो उनका किराया दो के स्थान तीन कर दिया। मैंने जब पूछा कि अब किराया क्यों ज्यादा लिया जा रहा है तो वह बोला, "झोपड़ों के वह जाने से मेरी हानि जो हुई है?"

"अब लाला रामनारायण जी ने यह बस्ती बनाई है। मकान पक्के हैं। रसोई घर भी साथ में है। पर्देदार नहाने का स्थान है। शौचालय है, नालियाँ और सड़कें हैं। इस सब पर तो बहुत रुपया खर्च हुआ होगा। इस पर भी मेरे कहने पर उन्होंने दया कर किराया दो रुपये प्रति मास ही रखा है। भगवान जाने उनको

हानि हो रही है अथवा लाभ ! मेरी समझ में तो एक बात आ रही है, हमको लाभ हो रहा है।

"इसलिये मेरा चौधरी जी से कहना है कि यहाँ की सफाई, मरम्मत और किराया एकत्रित करके देने का प्रवन्ध हमारी विरादरी ही किया करे और उनको यह किराया घर बैठे ही मिल जाया करे। इसके लिये हम एक रुपया मासिक और खर्च करें, जिसमें ये शौचालय की सफाई, बस्ती में सैंकड़ों और सम्मिलित स्थानों की सफाई रखी जा सके और कभी टूट-फूट हो तो मरम्मत कराई जा सके।

इस एक रुपया अधिक किराये से हम इन कामों के लिये एक आदमी, जिस पर आप लोगों का विश्वास हो, नियत कर दें।

रामनारायण के इस बस्ती बनाने पर राधाकृष्ण को विस्मय हुआ था। नगर में बीस हजार रुपया खर्च कर कोई हवेली मोल ले ली जाती तो आसानी से तीन-चार सौ रुपया महीना की आय हो सकती थी। नगर से दूर बस्ती बनाने से तो इतना लाभ नहीं हो सकता था। उसको यह समाचार इंजीनियर से मिला था, जिसने इस बस्ती का मानचित्र बनाया था। वह राधाकृष्ण के लिये करौलबाग में एक बंगले का मानचित्र तैयार कर रहा था।

राधाकृष्ण ने घर आकर चन्दो को कहा तो यह जाना कि उसकी पत्नी को यह सब कुछ ज्ञात है, उसके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। उसने कहा, "तो तुमने मुझे नहीं बताया ?"

"मैं जिस प्रकार राम को आपकी बातें नहीं बताती, उसी प्रकार राम की बातें भी आपको नहीं बताती।"

इससे राधाकृष्ण ने कुछ खीझ कर पूछा, "तो क्या मैं भी कुछ खराबी कर रहा हूँ ?"

"खराबी और भलाई की बात तो मैं जानती नहीं। मैं तो एक बात जानती हूँ। तुम दोनों भाइयों की बातें एक कान से सुनती हूँ और दूसरे कान से निकाल देती हूँ।"

"तुम तो बहुत समझदार हो गई हो। वह तुमसे बातें करता रहता है। इसलिये तुमको यह नहीं चाहिये कि वह अपने बाल-बच्चों के लिये बचा कर कुछ भी न रखे। बाप-दादाओं की जायदाद खुर्द-बुर्द कर देगा, तो वे बेचारे पीछे क्या करेंगे ?"

"आपका ही भाई है, आप स्वयं उसको क्यों नहीं समझा देते ? मेरे कहने का अभिप्राय यह है कि आपके तो कोई छोटा बाल-बच्चा है नहीं, फिर आप किसके लिये पाप कमाते रहते हैं ?"

"तो मैं पाप कमाता हूँ ?"

"हाँ, क्यों नहीं । वह करौल बाग की भूमि आपने किस प्रकार ली है । मुझे सब पता है । वह क्या पाप नहीं हुआ ?'

"वह कैसे पाप हो गया ?"

"देखिये, हबीब और अख्तर दोनों भाई थे । आपने उन दोनों में झगड़ा करवाया । हबीब आपसे रुपया उधार ले कर मुकदमा लड़ता रहा । हबीब को वह जमीन मिल गई । परन्तु तीन वर्ष तक मुकदमा लड़ने के पश्चात् और हाई कोर्ट का द्वार खटखटाने के पश्चात् हबीब को माँ की सम्पत्ति का आधा भाग मिल गया, परन्तु वह कर्जे के नीचे दब गया और उस ऋण के एवज़ में आपने यह दो एकड़ भूमि ले ली ।"

"यह सब ठीक है । परन्तु यह पाप कैसे हो गया ? देखो, अख्तर मूर्ख था । वह अपने शरीफ भाई का हक़ छीनना चाहता था । हबीब राधेश्याम वकील के पास पहुँचा । राधेश्याम ने उसको मुकदमा लड़ जाने की राय दी ।

"इसके लिये रुपयों की आवश्यकता थी, वह मैंने दे दिया । हबीब मुकदमा जीत गया तो मुझे मेरा रुपया मिलना चाहिये था ।"

"परन्तु मुझे बताने वाले ने तो यह भी बताया कि हबीब सुलह कर लेना चाहता था । अख्तर आधे से कुछ अधिक माँगता था आपने और वकील ने सुलह नहीं होने दी ।"

"एक बात और बताई गई है कि आप पाँच सौ रुपया देकर हजार लिखवाते थे । आप कहते थे कि मुकदमा हार जाने पर तो कुछ भी नहीं मिलेगा । अब चार हजार देकर आठ हजार असल बन गया और उस पर सूद डालकर बारह हजार बन गया ।"

"बताओ, यह छीना-झपटी पाप नहीं क्या ? इतने पर भी बला टल जाती तो दूसरी बात थी । बीस हजार की भूमि आपने बारह हजार पर ले ली है ।"

"यह व्यापार है, रानी।"

"तो आप रामनारायण को इस व्यापार की बात स्वयं ही बता दें। मैं तो ऐसा समझ रही हूँ कि उसके बच्चे पढ़ रहे हैं, वे अपनी कक्षा में प्रथम रहते हैं। उसने उनके लिये रुपया भी जमा कर रखा है, उसके बाद यह अपना परलोक सुधारने के लिये निर्धनों की सहायता कर रहा है।"

"एक दिन उसने मुझे यह सब हिसाब बताया था। उसका कहना था कि इस सब पर बीस हजार रुपया खर्च हुआ है। उस पर एक सौ रुपया मासिक आय हो रही है। वह कहता था कि यह छः प्रतिशत है। बैंक में से उसको ढाई प्रतिशत मिलता था। शेष साढ़े तीन प्रतिशत में से दो प्रतिशत वह इमारतों की घिसाई और डेढ़ प्रतिशत वहाँ पर मन्दिर बनवाने के लिये पृथक् रख रहा है।

"रामनारायण का लेखा तो स्पष्ट है। उसने बच्चों के मुख से कुछ नहीं छीना। परन्तु अपना परलोक सुधारने का यत्न किया है। वह रामी, जो सन्तु की माँ बनी हुई है, यहाँ आई थी और बताती थी कि बस्ती में रहने वाले सब छोटे लाला के गुण गाते हैं। उन गरीबों की दुआ से ही राम के घर में इस समय चार लड़के हैं।"

"आप हैं। कोई लड़का-बाला तो है नहीं और सीधे तथा उलटे ढंग से रुपया एकत्रित करने में संलग्न हैं।"

"मैं एक लड़का गोद लेने का विचार कर रहा हूँ।"

"किसका लड़का लोगे?"

"जिसका तुम कहो।"

"जिसका मैं लेना चाहती थी, उसने तो स्वीकार ही नहीं किया।"

"किसका लेना चाहती थी?"

"मैंने दो स्थानों पर यत्न किया था। एक तो केदार का लड़का लेने की बात की थी। उसने इन्कार कर दिया।"

"मैंने कारण पूछा तो उसने कुछ बताया नहीं। वह मौन रहा। मैंने केदार की पत्नी से कहा तो वह बोली, "बहन जी! अभी दो ही तो हैं, कौन आठ-दस हो गये हैं, जो बाँटती फिरूँ।"

"दूसरे मैंने आपके भाई राम .. कहा था। उसने भी इन्कार कर दिया है। मैंने पूछा, 'राम! अपनी भाभी पर तरस नहीं आता तुमको?"

"तो बोला, 'भाभी! ये सब बच्चे तुम्हारे ही तो हैं। कहो तो सबकी तुम्हारे नाम रजिस्ट्री करा दें। परन्तु भैया की कमाई का एक दाना भी इनके पेट में नहीं जाना चाहिये। मुझे भय है कि वह पाप की कमाई इनसे हजम नहीं हो सकेगी।"

"इसके बाद तो बच्चा गोद लेने में मेरी रुचि नहीं रही।"

"यह सन्तू कैसा रहेगा? अब तो वह दुकान पर काम करने लग गया है। बही-खाता भी लिख लेता है। देखने में भी अच्छा-सुन्दर है।"

"जब देवर ने ही अपने बच्चे को देने से इन्कार कर दिया है तो अब दूसरे का बच्चा लेने को चित्त नहीं करता। मैं तो समझती हूँ कि जीवन ही अकारथ गया।"

"अच्छा, देखो मैं यत्न करता हूँ।"

"कहाँ यत्न करोगे?"

"जरा सन्तू के बाप से बात कर लूँ।"

राधाकृष्ण की पत्नी जानती थी कि भगतू बिना रामी से राय किये कुछ नहीं करेगा। इस पर भी वह विचार करती थी कि भगतू बहुत ही गरीब आदमी है। यदि उस बेचारे की जिन्दगी सुधरती है तो इसमें वह क्यों बाधक बने? वह चुप रही।

एक दिन राधाकृष्ण ने अपनी मोटर निकलवाई और रामनारायण की नई बस्ती देखने के लिये चल पड़ा। उस दिन मंगलवार था। प्रायः सभी पुरुष और काम करने योग्य बालक अपने-अपने काम पर चले गये थे। रामी नौकरों द्वारा बस्ती की सफाई करवा रही थी। उसके काम में नानकी सहायता कर रही थी।

लगभग सफाई हो चुकी थी। बस्ती चमकने लगी थी। रामी शौचालय देखने के लिए जा रही थी कि राधाकृष्ण की मोटर बस्ती के कुएँ के पास आकर रुकी। नानकी और रामी विस्मय में देखती रह गईं। लाला रामनारायण की तो घोड़ा-गाड़ी थी। वह कभी-

कभी उस घोड़ा-गाड़ी में आता और रामी को बस्ती ठीक रखने के सुझाव दे जाया करता था।

उसको आश्चर्य हुआ यह देख कर कि राधाकृष्ण मोटर से उतर कर बस्ती को देख रहा है। बच्चे मोटर के पास आकर खड़े हो गये। राधाकृष्ण मोटर की ओर पीठ किये उधर देख रहा था, जिधर मन्दिर की नींव रखी जा रही थी।

इस समय एक बच्चे ने एक कंकर उठा कर मोटर को निशाना मारने के लिये हाथ उठाया ही था कि रामी ने उसे देख लिया और उसको रोकते हुए कहने लगी, "कालू! यह क्या कर रहा है?"

रामी की आवाज सुन राधाकृष्ण ने घूम कर देखा। एक पाँच वर्ष का बच्चा एक पत्थर का टुकड़ा उठा मोटर के शीशे पर मारने वाला था कि रामी ने दौड़ कर उसका हाथ पकड़ लिया। राधाकृष्ण लौट कर छड़ी से उस लड़के को पीटने के लिये लपका। रामी ने लड़के को अपने पीछे कर लिया और स्वयं राधाकृष्ण की छड़ी के सम्मुख हो गई।

राधाकृष्ण ने रामी को पहचाना तो छड़ी नीचे कर ली। और वोला, "ओह रामी माँ! मैं तो तुम्हीं को खोज रहा था। तुमने मेरी मोटर वचा ली, नहीं तो इस लड़के ने तीस-चालीस रुपये का नुकसान तो कर ही दिया होता।"

"मैंने अभी-अभी सुना था कि राम ने यह बस्ती बनवाई है। यह भी सुना था कि बहुत सुन्दर बनी है। इसलिये देखने चला आया हूँ। पता चला था कि रामी माँ यहाँ का प्रवन्ध करती हैं।

"अच्छा रामी माँ! मुझे एक बार यह सारी बस्ती दिखा तो दो?"

रामी, राधाकृष्ण के विषय में सन्तू द्वारा, उसके गुण-अवगुण का वर्णन सुनती रहती थी। इसलिये राधाकृष्ण के वहाँ आने पर वह प्रसन्न नहीं थी। परन्तु जब उसने कहा कि वह देखने के लिये आया है, तो दिखाने से असहमति प्रकट नहीं कर सकी।

उसने राधाकृष्ण को कुआँ, स्नानागार, कपड़े धोने का स्थान, शौचालय इत्यादि तथा मन्दिर का स्थान दिखाया और फिर उसे अपने कमरे में ले गई। वहाँ मोहिनी वैठी हुई मंगल के लिये कुर्त्ता सी रही थी।

राधाकृष्ण ने मोहिनी को पहचान लिया। उसने कहा, "यह तो सन्तू की बहिन मालूम होती है।"

"हाँ, अब इसका विवाह हो गया है।"

"किसके साथ हुआ है ?"

"यहाँ के चौधरी के लड़के मंगल से।"

"क्या करता है वह ?"

"इस समय कश्मीरीगेट में हिन्दू कालेज की इमारत बन रही है। वह वहाँ राजगीर का काम करता है। दो रुपये चार आने प्रतिदिन का पारिश्रमिक ले आता है।'

"हूँ।" राधाकृष्ण ने हुँकार भर आगे पूछा, "यहाँ पर कुल कितने कमरे हैं ?"

"एक मकान में तीन कमरे हैं। दो ठहरने के लिए, एक रसोई के लिये, ऐसे कुल पचास मकान यहाँ पर हैं।"

"एक का कितना किराया देते हो ?"

"दो रुपया मासिक।"

"और कुछ ?"

"लालाजी तो यही लेते हैं।"

राधाकृष्ण ने दो-तीन मकान और देखे। रामी साथ-साथ थी। एक मकान के आगे पर्दा लगा था। राधाकृष्ण ने पूछ लिया, "यहाँ कौन रहता है ?"

"एक रहमान मियाँ है, ठेकेदार शादीराम के यहाँ जमादार का काम करता है।"

"यह मुसलमान इस बस्ती में क्यों रख छोड़ा है ? राम को कहूँगा कि इसको निकाल दे।"

× × ×

"जी नहीं। यहाँ की पंचायत बनी है। उसकी मर्जी के बिना लालाजी किसी को मकान किराये पर नहीं दे सकते। यह रहमान चौधरी सहतू का रिश्तेदार है। रहमान की दोनों बहनें चौधरी के लड़कों से ब्याही जा चुकी हैं।"

"सहतू भी मुसलमान है क्या ?"

"नहीं, वह हिन्दू है।"

"और उसके लड़के ?"

"वे भी हिन्दू हैं। बड़े लड़के रामचन्द के दो बच्चे भी हैं। एक का नाम रामकृष्ण है और दूसरे का नाम सीताराम है।"

राधाकृष्ण विस्मय में रामी का मुख देखता रह गया। रामी मुस्करा रही थी। राधाकृष्ण ने समझा कि रामी उसकी हँसी उड़ा रही है। इस कारण उसने पूछा, "रहमान मियाँ नाराज नहीं होता ?"

"पहले होता था, अब नहीं होता। वह उन बच्चों को लतीफ़ और मजीद नाम से पुकारता है। हम इसमें आपत्ति नहीं करते।"

"चौधरी की बहुओं का नाम क्या है ?"

"एक का नाम बासन्ती और दूसरी का नानकी। रहमान उनको वहीदन और नसीम नाम से पुकारता है। वह देखिये चौधरी की बड़ी बहू कुएँ से जल भरने जा रही है।

बासन्ती अपने घर से निकली थी और पीतल की बटलोई लिये कुएँ से जल भरने के लिये जा रही थी।

"यह पर्दा नहीं करती क्या ?"

"नहीं, मुसलमानों की भाँति नहीं करती। रहमान की पहली बीवी भी हमसे पर्दा नहीं करती। बस्ती में वह भी ऐसे ही घूमती है, जैसे हम लोग। मगर उसकी दूसरी बीवी, अभी नई आई है। वह अभी पर्दा करती है, मैं समझती हूँ दो-चार मास में वह भी यहाँ के रीति-रिवाज सीख जावेगी।"

"राधाकृष्ण को यह सब बातें विचित्र हो रही थीं। उसकी समझ में कुछ इस प्रकार आया कि रामी आर्य समाज से प्रभावित है।

× × ×

राधाकृष्ण रामी की बातों में अपने आने का प्रयोजन ही भूल गया था। वह बस्ती देख मोटर की ओर लौटा तो रामी ने हाथ जोड़ जै रामजी की कर दी। इस समय राधाकृष्ण को अपने आने का प्रयोजन स्मरण हो आया। उसने पूछा, "सन्तू का बाप कहाँ रहता है ?"

"वह उस मकान में रहता है। इस समय काम पर गया है।"

"वह क्या काम करता है ?"

"आज कल वह राजगीर का काम करने लगा है।"

"मुझे उससे तथा सन्तू से काम है।"

"उसको तो रविवार को ही फ़ुरसत मिलती है।"

"अच्छा, तो उसको कहना कि मैं रविवार मध्याह्न उससे तथा सन्तू से मिलने के लिये आऊँगा वह कहीं जाये नहीं।"

रामी समझ नहीं सकी कि राधाकृष्ण का भगतू से क्या काम हो सकता है।

रविवार को राधाकृष्ण पुनः उस बस्ती में आया। भगतू तो वहाँ था, परन्तु वह सन्तू के सामने ही अपने मन की बात बताना चाहता था। ठीक दो बजे लाला रामनारायण की घोड़ा गाड़ी में सन्तू आया। उसके साथ एक औरत, जिसने सिर से पाँव तक स्वयं को लपेट रखा था, सन्तू उस औरत को अपने पीछे पीछे आने के लिए कह रामी के घर की ओर जाने लगा। इस समय राधाकृष्ण ने उसे आवाज दे दी।

सन्तू ने उधर देखा तो वहाँ पर राधाकृष्ण की मोटर और उसमें राधाकृष्ण को बैठा देख, वह भौंचक्का-सा रह गया। सन्तू का पिता मोटर से चल कर उसके समीप आ बोला, "बेटा! लालाजी सुबह नौ बजे से तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे हैं।"

"उनको कहो, अभी ठहरे। मैं इसे जरा रामी माँ के पास छोड़ आऊँ।"

"कौन है यह?"

"वहीं आ जाओ, बताता हूँ।"

भगतू ने समझा कि सन्तू घर पर बहू लाया है। इससे वह भागा हुआ मोटर के समीप गया और राधाकृष्ण को कहने लगा, "लालाजी आपको अभी और ठहरना पड़ेगा। नहीं तो किसी और दिन बात कर लेंगे।"

इतना कहे, बिना उत्तर की प्रतीक्षा किये, वह रामी के घर की ओर चला गया। राधाकृष्ण की समझ में भी यही आ रहा था कि सन्तू विवाह करके अपनी बहू लाया है। इससे वह मोटर से उतर उसके पीछे-पीछे रामी के घर पर चला गया।

बस्ती के अन्य निवासी भी, जो वहाँ पर उपस्थित थे, मोटर को और फिर घोड़ा गाड़ी में सन्तू के साथ एक औरत को आते देख विस्मय कर रहे थे।

सन्तू ने उस औरत को रामी के द्वार पर खड़ा करके रामी माँ को आवाज दी। अन्दर से रामी माँ ने कहा, "आई बेटा!"

रामी ने द्वार खोला और कहा, "सन्तू...।" किन्तु उसके पीछे एक औरत को देख वह चुप हो गई।

"यह कौन...।" उसने पूछना चाहा। परन्तु सन्तू ने होठों पर उंगली रख कर, उस औरत को दूसरे हाथ से पकड़ कर भीतर की ओर भेज दिया। इस समय भगतू और राधाकृष्ण भी आ गये थे। सन्तू ने उन दोनों को भीतर नहीं आने दिया। उसने भीतर जा कर दरवाजा बन्द कर दिया था।

रामी विस्मय में उस औरत को देख रही थी। जब द्वार बन्द हो गया तो सन्तू ने कहा, "लो पकड़ लाया हूँ। सँभालो अब अपनी बिटिया को।"

उस औरत ने भी अपनी चादर उतार दी और कहा, "माँ! मैं हूँ...।"

रामी ने उसे देखा, पहचाना और लपक कर गले लगा लिया। यह देवी थी। उसकी अपनी बेटी।

कितनी ही देर तक माँ-बेटी गले मिल रोती रहीं। सन्तू कुछ देर तक उन दोनों का मिलन देखता रहा। पश्चात् द्वार खोल बाहर चला आया। बाहर निकल उसने पुनः द्वार बन्द कर दिया। भगतू ने सबसे पहले पूछा, "यह कौन है?"

"बाबा! देवी है। आज अकस्मात मिल गई तो पकड़ लाया हूँ।"

"देवी!" उसने आश्चर्य में कहा और फिर मोहिनी को आवाज देते हुए कहा, "जाओ अपनी माँ को बुलाकर ले आओ। जाओ, जल्दी करो।"

× × ×

राधाकृष्ण को देवी के लापता होने की बात विदित थी। उसने सन्तू को एक ओर ले जा कर पूछ लिया, "यह रामी माँ की लड़की है न?"

हाँ, लाला जी! आठ वर्ष हुए, यमुना में बाढ़ आई थी। उस दिन यह बिछुड़ गई थी। तब से आज मिली है।"

"सन्तू ! मैं तुमसे एक अत्यावश्यक विषय में बात करने के लिये आया हूँ ।"

"बताइए ।"

"मैं समझता हूँ इस सब हलचल में तुम भली भांति सोच-समझ नहीं सकोगे । अब मैं चलता हूँ । सायंकाल तुमसे बड़ी माँ के सम्मुख बात होगी । आओगे न ?"

"आप कहते हैं, तो अवश्य आ जाऊँगा ।"

देवी के मिलने की घटना इस प्रकार हुई थी ।

सन्तू दूकान के अन्दर बैठा बही लिख रहा था । इस समय दो आदमी और एक औरत कुछ आभूषण खरीदने के लिए दुकान पर आये । रामनारायण ने उनको बैठाया और आभूषण दिखाने लगा । आभूषण देखे गये, पसन्द किये गये और उनके मूल्य के विषय में भाव-ताव होने लगा । रामनारायण ने सन्तू को आवाज दे दी । और उससे स्टाक रजिस्टर मँगवाया ।

उस औरत ने सन्तू का नाम सुना तो कण्ठी, जो उसके हाथ में थी, गिर गई । वह रामनारायण के मुख पर और तत्पश्चात् सन्तू के मुख पर देखने लगी । जब उसने सन्तू को देखा तो उसकी आँखें झुक गई और कण्ठी, जो उसने फिर उठा ली थी उसके हाथों में काँपने लगी । सन्तू ने इस औरत के साथ आये आदमी को कण्ठी का हिसाब किताब समझा दिया । वह बोला, "चार तोले दो माशा सोना इसमें लगा है । मूल्य इकासी रुपये आठ आने , नगीने बीस रुपये चार आने, बनवाई बीस रुपये पाँच रुपये तोले के हिसाब से और दुकान का मुनाफा बीस रुपये । कुल सोना जो इसमें है चार तोला डेढ़ माशा है । चार रत्ती बनाई में घिसाई है ।" इसी प्रकार उसने अन्य आभूषणों का मूल्य भी बता कर कहा, "यह सब आप लिख लीजिये । इसमें यदि एक पैसे का भी फरक हो तो हम जिम्मे-दार हैं ।

उस आदमी ने पाँच सौ वीस रुपये निकाल कर सामने रख दिये । रामनारायण ने कहा, "बारह आने और चाहिये ।"

"क्या इतना भी नहीं छोड़ सकते ?"

"जी नहीं, क्षमा करें । दुकान की आय में दुकान के सब खर्च सम्मिलित हैं । यह नकद लाभ नहीं है, "जब रामनारायण उसआदमी

से बातें कर रहा था, तो सन्तू उस औरत को देख रहा था। पहले तो वह उसको कुछ जानी-पहचानी सी प्रतीत हुई। पश्चात् उसको सन्देह हुआ कि यह तो देवी जैसी लगती है। उसे देखे आठ वर्ष से अधिक हो चुके थे। वह नौ वर्ष की थी, जब लापता हुई थी। इस पर भी वह ज्यों-ज्यों देखता था, त्यों-त्यों उसको विश्वास होता जाता था। रामनारायण ने रुपयों की रसीद लिख कर नीचे अपने हस्ताक्षर कर दिये। रुपया देने वाले व्यक्ति ने पूछ लिया, "क्या शुभ नाम है आपका ?"

"रामनारायण !"

वह औरत आभूषण रुपया देने वाला आदमी को पकड़ा बोली, "सन्तू ! पहचाना नहीं मुझको ?"

"पहचान रहा हूँ, किन्तु आँखों पर विश्वास नहीं आ रहा था। देवी ! कहाँ हो तुम ?"

"जरा दुकान के अन्दर चलो।"

देवी का नाम सुन रामनारायण भी सतर्क हो गया। उसने रुपये सन्दूकची में रख ताला लगा दिया। और उन आदियों से पूछने लगा, "आप लोग कहाँ से आये हैं ?"

"लखनऊ से। यह वहाँ की मशहूर तवायफ है। अभी अल्हड़ लड़की ही तो है। यहाँ दिल्ली सैर करने के लिए आये थे। आज यह कहने लगी नकद रुपयों के एवज में कुछ आभूषण ले दो। हम दोनों को इसे पाँच सौ रुपया देना था। सो यह तीन चीजें ले देने का फैसला हुआ है। मालूम होता है आपके सन्तू बाबू से इसकी जान पहचान है।"

भीतर देवी सन्तू को बता रही थी।"

"मैं गठरी उठाये इस किनारे पर आ लगी तो किसी आदमी ने मेरे मुख पर रुमाल डाला और मुझे उसी समय चक्कर से आने लगे। उसने मेरी बाँह पकड़ ली और कुछ दूर तक मुझे घसीटता हुआ ले गया। फिर मैं बेहोश हो गई थी।

"मुझे होश आया तो मैं एक कमरे में बन्द थी। मुझमें खड़े होने की ताकत नहीं थी। मैं लेटी रही। कुछ देरी में मुझको दूध पीने के लिये दिया गया। रोटी खिलाई और पश्चात् मुझे बताया गया कि मेरी माँ बाढ़ में बह गई है। उसका पता नहीं चला।

मैंने बताया कि वह तो किनारे पर आ गई थी। परन्तु उस औरत ने मुझे विश्वास दिलाया और मुझको अपनी लड़की की भांति प्यार करने का आश्वासन दिया।

"अगले दिन वह औरत और उसके साथ एक आदमी मुझे अल्मोड़ा ले गये। वहाँ मुझको गाना और नाचना सिखाया जाने लगा। पाँच वर्ष तक ये कलायें सिखा कर मुझे लखनऊ में लाया गया और एक आदमी के पास पाँच हजार रुपये में बेच दिया गया। वहाँ मुझसे वेश्यावृत्ति कराई जाने लगी। जो कुछ मिलता था, आधा मेरा होता था और आधा मेरे रखने वाले का।

"दो वर्ष से मैं यही कर रही हूँ। इनके साथ, जो बाहर बैठे हैं, औरत के रूप में आई हूँ। मेरे संरक्षकों को ये तीन सौ रुपया दे आये हैं। मुझे पाँच सौ रुपया देने की बात थी। मैंने आभूषण खरीदने के लिए कहा तो होटल के मैनेजर से इस दुकान का पता पूछ हम यहाँ चले आये हैं। रामनारायण जी का नाम सुना हुआ प्रतीत होता था। तुम्हारा नाम सुना तो बचपन की सब बातें स्मरण हो आई हैं।"

सन्तू ने देवी के मुख पर देखा। उसकी आँखें डबडबा रही थीं। सन्तू ने उसके आभूषण देखे तो कह दिया, "यहाँ तुम बहुत सुखी प्रतीत होती हो।"

"तुम ऐसा समझते हो सन्तू ?"

"तुम्हारे वस्त्राभूषण देख कर तो कुछ ऐसा ही समझना पड़ रहा है।"

"इनके बिना तो वेश्या का काम ही नहीं चल सकता। तुम भी आभूषणों को हरे रंग के कागज पर रख कर दिखाते हो, यही बात हमारी है।"

"तो तुमको वहाँ कुछ कष्ट है ?"

"सन्तू ! माँ क्या सत्य ही मर गयी थीं ?"

"नहीं, वे जीवित है और तुम्हें स्मरण कर रोती रहती हैं।"

"मुझे वे अब अपने घर में रख लेगीं ?"

"न रखने के लिये क्या हुआ है तुमको ?"

"तो तुम जानते नहीं कि वेश्याओं को क्या होता है ?"

"जो हो मैं समझता हूँ कि तुम वहाँ रह सकोगी। परन्तु वहाँ

तो अण्डे, मुर्गी, पुलाव इत्यादि खाने को मिल नहीं सकेंगे। यहाँ तो अभी भी बाजरे की रोटी और बथुये का साग ही खाया जाता है।"

"तुम्हारा विवाह हो गया है क्या ?"

"नहीं, अभी नहीं।"

"मैं माँ के पास चलूँगी।"

"तो इनको छोड़ दो और मेरे साथ चलो।"

"आओ, मैं इनको विदा कर देती हूँ।"

वे दोनों बाहर दुकान पर आ गये। देवी ने एक को सम्बोधित कर कहा, "वीरेन्द्र सिंह जी ! आप जाइये, मैं "अपनी माँ के पास जा रही हूँ।"

"माँ के पास कैसे जा सकती हो तुम ? जानती हो हम तुमको सौसन बाई के पास वापस करने का वायदा करके लाये थे ? नहीं तो वह हमको पुलिस के हवाले कर देगी। वह कहेगी, हमने तुम्हें मार कर यमुना में बहा दिया है और आभूषण स्वयं रख लिये हैं। तुम्हारे सामने ही तो उसने एक-एक आभूषण, जो तुम पहने हुए थीं, गिना कर हमारे साथ भेजा था।"

"मैं आपको लिख कर दे देती हूँ कि मैं अपनी मर्जी से यहाँ रह गई हूँ। मैं उस सोसन बाई की गुलाम नहीं हूँ।"

"तुम ठीक कहती हो। परन्तु तुम रजिस्टर्ड तवायफ हो, तुम्हें पुलिस में चल कर रपट लिखानी होगी।'

"लिखा देती हूँ, चलो !"

वे दोनों बहुत परेशान मालूम होते थे। रामनारायण ने भी देवी का साथ देते हुए कहा, "ठीक है, चलो मैं भी तुम्हारे साथ ही चलता हूँ थाने में। आप पर किसी तरह का हरफ नहीं आवेगा।"

"आभूषणों का क्या होगा ?"

"ये देवी के हैं, क्यों देवी ?"

"लाला जी ! मैं इनको ले कर क्या करूँगी ?"

"अभी तो ले लो। पश्चात् विचार कर लेंगे।"

देवी ने वे आभूषण रामनारायण के पास रखवा दिये। सभी रामनारयण की घोड़ा-गाड़ी में सवार हो थाने जा पहुँचे।

रामनारायण ने रपट लिखने वाले को दस रुपये का नोट दिया तो रपट लिख दी गई। अपना पूर्ण वृतान्त लिखा कर देवी ने

लिखाया, "मुझे यह बताया गया था कि मेरे माता-पिता का देहान्त हो गया है। नहीं तो मैं पहले ही यहाँ चली आती। अब सन्तराम से मुझको विदित हुआ है कि वे दोनों जीवित हैं। इस कारण मैं अपनी इच्छा से वेश्यावृत्ति का त्याग कर रही हूँ। मैं अपने माता-पिता के पास रहना चाहती हूँ। मैं अपनी माँ, जो रामनारायण वस्ती तिमारपुर नम्बर बारह में रहती है, के पास रहने के लिए जा रही हूँ।"

इस रपट के पश्चात् देवी ने अपने लखनऊ के साथियों को विदा कर दिया। वे बितर-बितर देखते रह गये। उनको थाने में ही छोड़, रामनारायण देवी और सन्तराम को साथ ले अपनी दुकान पर आ गया। देवी ने अपने शरीर से सभी आभूषण उतार दिये। उसने अपने चटक-मटक के वस्त्र भी उतार दिये। सलवार कुर्ता और ऊपर एक चादर ओढ़ वह सन्तू से बोली, "अब मुझे माँ के पास ले चलो।"

ये सब करने-धरने में दोपहर का एक बज गया। सन्तू और देवी लाला रामनारायण की घोड़ा गाड़ी में तिमारपुर जा पहुँचे।

सायंकाल जब सन्तू आया तो राधाकृष्ण उसको अपनी पत्नी के पास ले गया वहाँ उसने उसको गोद लेने की बात कही।

बातचीत रामनारायण, लाजवन्ती और चन्दो बीवी के सम्मुख हुई। चन्दो बीवी ने सन्तू से कहा भी कि जैसे वह रहना पसन्द करेगा, वैसे ही उसके रहने का प्रबन्ध कर दिया जावेगा। इस पर सन्तू से कहा, "देवी ने एक वेश्या के वैभव-सम्पन्न जीवन पर माँ की बाजरे की रोटियों को उपमा दी है, इसी प्रकार अनायास लाखों पाने के स्थान मुझे अपने माँ बाप के साथ रहते हुए मेहनत मजदूरी-के तीस रुपया मासिक ही कहीं अधिक पसन्द है।"

रामनारायण ने कह दिया, "तुम अपने जीवन भर में भी इतना नहीं कमा सकोगे। भैया भी तुम्हारी संगत में रह कर ईमानदारी से कमाई करेंगे। फिर किसी बड़े घर में तुम्हारा विवाह हो जायेगा।"

"मैं तो रामी माँ को वचन दे आया हूँ। मेरा विवाह देवी के साथ ही होगा।"

डा० दिल्ली एमण रेश्मी
कल्याणी रेश्मी स्मारक

प्रचारक पॉकेट बुक्स

की बीस पुस्तकों की पहली किस्त

[ग्लेज कागज तथा पँचरंगे वार्निशदार कवरों से युक्त]

उपन्यास

१. पवित्र पापी ... नानकसिंह
२. एक सड़क : सत्तावन गलियाँ ... कमलेश्वर
३. बिखरे काँटे ... लीला अवस्थी
४. वनमाला ... 'कैफ़'
५. समर्पण ... तुर्गनेव
६. कादम्बरी ... बाणभट्ट
७. भाग्यवती ... श्रद्धाराम फिल्लौरी
८. लाल पंजा ... दुर्गा प्रसाद खत्री
९. काले कारनामे ... 'निराला'
१०. मैंडेलीन ... मुद्राराक्षस
११. पङ्कज ... गुरुदत्त
१२. गवर्नेस ... हर्षनाथ
१३. नारी एक पहेली ... मोमासाँ
१४. कस्तूरी ... शानी
१५. काठ के ताबूत और जिन्दा लाशें ... प्रकाश दीक्षित
१६. क्लीयोपेट्रा ... एमिन लुडविग

उर्दू शायरी

१७. इक़बाल की शायरी ... डॉ. हीरालाल चोपड़ा

कहानी-संग्रह

१८. नया स्वर ... मोहनसिंह सेंगर

काम-विज्ञान

१९. काम-मनोविज्ञान तथा यौन-व्याधियाँ ... द्वारका प्रसाद, एम. ए.

पाक-शास्त्र

२०. व्यंजन-वीथिका ... कुसम कटारा

प्रत्येक का मूल्य **1/-**

डा॰ डिल्ली रमण शर्मा
कल्याणी रेडी
फर्रुखाबाद

(पॉकेट-बुक्स विभाग)

हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय

मानमन्दिर, वाराणसी—१

श्री गुरुदत्त हिन्दी के शीर्षस्थ कथाकारों में प्रमुख हैं। अपनी रचनाओं द्वारा उन्होंने पर्याप्त यश अर्जित किया है। उन्होंने राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि समस्याओं को ले कर उपन्यासों की रचना की है और अपने दृष्टिकोण से उन का समाधान प्रस्तुत किया है।

'पंकज' श्री गुरुदत्त का नवीनतम उपन्यास है। यह समस्यामूलक उपन्यास अत्यन्त रोचक है।

1/-

प्रचारक पॉकेट बुक्स द्वारा देश-विदेश के प्रधान लेखकों की उत्कृष्ट रचनाओं का सस्ते मूल्य में रसास्वादन कीजिए। प्रत्येक पुस्तक का मूल्य एक रुपया मात्र।